सुप्रभात
रांची, गुरुवार
20.03.2025
* * नगर संस्करण। पेज : 12

धरती आबा की ऊर्जावान भूमि से प्रकाशित लोकप्रिय दैनिक

खबर मन्त्र

रांची और धनबाद से एक साथ प्रकाशित | सबकी बात सबके साथ

khabarmantralive.com

khabarmantra.net | चैत्र, कृष्ण पक्ष, षष्ठी, संवत् 2081 | मूल्य : ₹ 3 । वर्ष : 12 । अंक : 244 | 12

भारत अंतरिक्ष में बनायेगा स्टेशन

रोजा का समय
सेहरी (21.03.2025): 04.30 बजे
इफ्तार (20.03.2025): 06.01 बजे
Sreeleathers
66 K-ROAD, BISTUPUR

बजट सत्र : अवैध निकासी पर सदन में सत्ता पक्ष ने ही सरकार को घेरा

राज्य सरकार से भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने की रखी मांग

■ विभाग के चार पदाधिकारी किये गये हैं सस्पेंड : मंत्री

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। विधानसभा के बजट सत्र के दौरान बुधवार को पेयजल विभाग में हुई अवैध निकास पर सत्ता पक्ष ने सरकार को ही घेरा। कांग्रेस विधायक दल के नेता प्रदीप यादव ने सरकार के जवाब पर प्रभारी मंत्री योगेंद्र प्रसाद से कहा कि जोर से बोलकर पर्दा न डालें। लिपिक संतोष कुमार 15 साल से एक ही जगह पर पदस्थापित था। आरोपी संतोष ने अपने स्पष्टीकरण में अफसरों पर गंभीर आरोप लगाये हैं। सरकार भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाये।

चार पदाधिकारियों को किया गया सस्पेंड : राधाकृष्ण किशोर

वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने कहा कि सरकार भ्रष्टाचार के मामले पर जीरो टॉलरेंस पर काम कर रही है। अवैध निकासी मामले में कोई पदाधिकारी बख्शे नहीं जायेंगे। संतोष कुमार पर दो करोड़ 71 लाख रुपये की अवैध निकासी का केस दर्ज हुआ है। वित्त विभाग के अंतर-विभागीय सात सदस्यीय कमेटी की अनुशंसा के आलोक में वित्त विभाग के चार पदाधिकारी मनोज सिन्हा, सुनील सिन्हा, मनोज सिन्हा और मीरा कुमारी गुप्ता को सस्पेंड कर दिया गया है।

सीआइडी और एसीबी जांच की अनुशंसा की थी : योगेंद्र

प्रभारी मंत्री योगेंद्र प्रसाद ने बताया कि पूर्व वित्त मंत्री रामेश्वर उरांव ने इस मामले में एसीबी और सीआइडी जांच की अनुशंसा की थी। प्रभारी मंत्री योगेंद्र प्रसाद ने कहा कि संतोष कुमार, उच्च वर्गीय लिपिक को निलंबित करते हुये उसके विरुद्ध सदर थाना रांची में प्राथमिकी दर्ज करायी गयी है। खाते को फ्रिज कराया जा चुका है और नीलाम पत्र दायर किया जा चुका है। वर्तमान में संतोष कुमार हिरासत में है। प्रभात कुमार सिंह तत्कालीन कार्यपालक अभियंता, चन्द्रशेखर कार्यपालक अभियंता, राधेश्याम रवि तत्कालीन कार्यपालक अभियंता और संजय कुमार निम्नवर्गीय लिपिक के खिलाफ विभागीय कार्यवाही की जा रही है। मामले की विस्तृत जांच एसीबी से कराने के लिए मंत्रिमंडल सचिवालय एवं निगरानी विभाग, निगरानी से अनुरोध किया गया है। महालेखाकार झारखंड को विशेष अंकेक्षण के लिए अनुरोध किया गया। इससे वास्तविक राशि की गणना एवं संबंधित से वसूली की कार्रवाई की जा सके।

विधायक शशिभूषण मेहता ने सदन में फाड़ा पेपर,स्पीकर पर लगाया पक्षपात का आरोप

रांची। विधानसभा सत्र के 13वें दिन सदन में भाजपा विधायक शशिभूषण मेहता ने स्पीकर रवींद्र नाथ महतो के समक्ष पेपर पर लिखा प्रश्न फाड़कर फेंक दिया। श्री मेहता के इस व्यवहार से स्पीकर ने आहत होकर कहा कि आपका आचरण अच्छा नहीं है। विधायक के इस रवैये के बाद सदन में पक्ष और विपक्ष के बीच भी खूब कहासुनी हुई। दरअसल, कुशवाहा शशिभूषण मेहता प्रश्नकाल के दौरान अपना प्रश्न पढ़ रहे थे। थोड़ा इंतजार करने के बाद स्पीकर ने कहा कि आपका प्रश्न ले लिया गया है। पूरी बात कहने का अवसर नहीं मिलने पर गुस्से में विधायक ने स्पीकर पर पक्षपात का भी आरोप लगाया। हालांकि, इसके बाद स्पीकर ने विधायक को अपनी बात पूरी करने का मौका दिया, लेकिन इससे पहले उन्होंने भाजपा विधायक पर तंज कसते हुए कहा कि और कुछ आरोप लगाने हैं तो वो भी लगा दीजिये। स्पीकर के इस तंज पर आक्रोशित विधायक कुशवाहा शशिभूषण मेहता ने प्रश्न लिखे पेपर को ही फाड़ दिया और चिल्लाते हुये कहा कि नहीं पढ़ेंगे। विधायक के इस रवैये को देख अन्य सदस्यों ने उन्हें समझाते हुये प्रश्न पढ़ने के लिये कहा लेकिन, विधायक ने एक न सुनी।

स्पेस-एक्स क्रू ड्रैगन कैप्सूल ने समुद्र में किया स्पलैशडाउन

घर में आपका स्वागत है... सुनीता विलियम्स पृथ्वी पर सुरक्षित लौटीं

एजेंसी

वाशिंगटन। भारतीय मूल की अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स और उनके सहकर्मी बुच विल्मोर, निक हेग और अलेक्जेंडर गोरबुनोव ने अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन से पृथ्वी पर सुरक्षित वापसी कर ली है। फ्लोरिडा के तट पर बुधवार तड़के 3 बजकर 27 मिनट (भारतीय समयानुसार) पर सफल लैंडिंग हुई है। दोनों अंतरिक्ष यात्रियों को लेकर स्पेसएक्स क्रू-9 वापस धरती पर लाया। नासा के ये दोनों अंतरिक्ष यात्री मात्र आठ दिन के मिशन पर गए थे। तकनीकी खराबी के कारण दोनों नौ माह और 13 दिन तक अंतरिक्ष में फंसे रहे। नासा ने अपनी वेबसाइट पर लिखा है- घर में आपका स्वागत है...

फ्लोरिडा के तट पर उतारा गया अंतरिक्ष यान : एस्ट्रोनॉट्स को स्पेसएक्स के ड्रैगन अंतरिक्ष यान द्वारा सुरक्षित रूप से फ्लोरिडा के तट पर उतारा गया था। धरती पर लौटे अंतरिक्ष यात्रियों को एक सुंदर और अप्रत्याशित अनुभव हुआ। ड्रैगन कैप्सूल के समुद्र में उतरते ही डॉल्फिन कैप्सूल के आसपास तैरते हुए देखे गए।

पैतृक गांव में जश्न : बताना चाहेंगे भारतीय समयानुसार सुबह 3.27 बजे ऑर्बिट बर्न का प्रोसेस पूरा होने के बाद फ्लोरिडा के तट पर अंतरिक्ष यात्रियों के उतरते ही सुनीता विलियम्स के गुजरात के पैतृक गांव में जश्न शुरू हो गया।

अंतरिक्ष यान से बाहर निकलने के बाद सुनीता विलियम्स।

45 दिनों के पुनर्वास कार्यक्रम के लिए ह्यूस्टन ले जाये गये चारो अंतरिक्ष यात्री

अंतरिक्ष यात्रियों को कैप्सूल से बाहर निकाला गया और 45 दिनों के पुनर्वास कार्यक्रम के लिए ह्यूस्टन ले जाया गया। क्रू-9 की पृथ्वी पर वापसी में अपनी चुनौतियां थीं। मूल रूप से, यह मिशन केवल आठ दिनों तक चलने वाला था।

पीएम मोदी ने भारत आने का दिया निमंत्रण

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सुनीता विलियम्स को पत्र लिखकर भारत आने का निमंत्रण दिया है। पहली मार्च को लिखे और नासा के पूर्व अंतरिक्ष यात्री माइक मैसिमिनो के माध्यम से भेजे गए इस पत्र को केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री जितेंद्र सिंह ने एक्स पर साझा किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने पत्र में कहा कि भले ही आप हजारों मील दूर हों, लेकिन आप हमारे दिलों के करीब हैं। भारत के लोग आपके अच्छे स्वास्थ्य और आपके मिशन में सफलता के लिए प्रार्थना कर रहे हैं। आपकी वापसी के बाद हम भारत में आपसे मिलने के लिए उत्सुक हैं। भारत के लिए अपनी सबसे शानदार बेटियों में से एक की मेजबानी करना खुशी की बात होगी।

न्यूज डायरी

हाथियों ने तोड़ा घर,9 दिन के बच्चे की दब कर मौत

खूंटी। जरियागढ़ थाना क्षेत्र के बड़का रेगरे बगीचा टोली निवासी विष्णु कुमार सिंह के मकान को जंगली हाथियों ने मंगलवार की रात को तोड़ दिया। मकान के मलबे में दब कर विष्णु सिंह के नौ दिन के बच्चे की मौत हो गयी। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल खूंटी भेज दिया। तोरपा के झामुमो विधायक सुदीप गुड़िया ने वन विभाग को तत्काल मुआवजा राशि देने का निर्देश दिया।

ताला काट कर नकदी समेत एटीएम ले भागे चोर

कोडरमा। चंदवारा थाना के ढाब में मंगलवार रात चोरों ने एसबीआइ एटीएम मशीन की चोरी कर ली। जानकारी के अनुसार शटर के ताले को गैस कटर से काट दिया और एटीएम मशीन को लेकर भाग गये। लोगों ने एटीएम का शटर खुला पाया और मशीन नहीं देखी तो चंदवारा थाना को सूचना दी। पुलिस मामले की छानबीन में जुट गयी है। एटीएम में लगभग 10 लाख रुपए थे। इस पूरी घटना को अंजाम देने में उन्हें महज 12 मिनट ही लगे।

गैरिसन इंजीनियर को घूस लेते सीबीआइ ने दबोचा

रांची। सीबीआइ के एंटी करप्शन ब्यूरो ने इंडियन डिफेंस सर्विस ऑफ इंजीनियर्स के गैरिसन इंजीनियर साहिल रातूसरिया को 40 हजार 500 रुपये रिश्वत लेते रंगेहाथ गिरफ्तार किया है। आर्मी के आधारभूत संरचना का निर्माण कार्य देखने वाली कंपनी आइडीएसई के इंजीनियर के खिलाफ शिकायत मिली थी कि वह बकाया बिल का भुगतान करने के एवज में 2 प्रतिशत रिश्वत की मांग कर रहे हैं। जांच एजेंसी ने जब मामले की जांच तो आरोप सही पाया।

'टोल चार्ज जरूरी, नयी नीति शीघ्र : गडकरी

नयी दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बुधवार को कहा कि सरकार जल्द ही राष्ट्रीय राजमार्गों पर टोल शुल्क के लिए नयी नीति की घोषणा करेगी। नयी नीति में उपभोक्ताओं को उचित छूट दी जायेगी। उच्च सदन में सवालों के जवाब में मंत्री ने कहा कि सरकार सड़क बुनियादी ढांचे के निर्माण पर बहुत खर्च कर रही है और इसलिए टोल चार्ज आवश्यक है।

मुख्यमंत्री ने श्री बंशीधर महोत्सव का किया शुभारंभ

कुछ बेईमान लोग हमें काम नहीं करने देते : हेमंत सोरेन

राजकीय महोत्सव

खबर मन्त्र संवाददाता

श्रीबंशीधर (गढ़वा)। सीएम हेमंत सोरेन ने बुधवार को श्रीबंशीधर मंदिर में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच विधिवत पूजा-अर्चना कर समस्त झारखंड वासियों की सुख, समृद्धि, शांति, खुशहाली एवं उन्नति की कामना की। उन्होंने कहा कि हम लोगों ने यहां बंशीधर महोत्सव को राजकीय महोत्सव बनाया है। इस मौके पर सीएम ने कहा, हमें तकलीफ होती है। मन लगाकर काम करते हैं, लेकिन कुछ खुराफत लोग हम लोगों को काम करने से रोकते हैं। गलत आरोप लगाकर हमें परेशान करते हैं।

सरकार आप तक पहुंचायेगी पानी : सीएम ने कहा कि गढ़वा और पलामू पानी के लिए हमेशा तरसते हैं। ये एरिया रेन सेड एरिया में आता है। इसके लिए आप चिंता मत करिये, सरकार आप तक पानी पंहुचाएगी। सीएम ने कहा कि 1200 करोड़ की नहर जलाशय योजना 7 से 8 महीनों में चालू हो जाएगी। सीएम हेमंत सोरेन ने कहा कि जब हम पहली बार मुख्यमंत्री बने थे तो पलामू-गढ़वा को बिजली से जोड़ा। पांच वर्षों में यहां बदलाव देखने को मिला, जो पिछले 20 वर्षों के काम से काफी ज्यादा है। (शेष पेज 11 पर)

सरकार के सभी निवेश बड़े हित में किये जाने के लिए एक राष्ट्रीय नीति की बतायी जरूरत

उपराष्ट्रपति ने फ्रीबीज को लेकर महत्वपूर्ण टिप्पणी की, कहा- संसद को विचार करने की आवश्यकता

प्रलोभन तंत्र पर वार

एजेंसी

नयी दिल्ली। उपराष्ट्रपति और राज्यसभा के सभापति जगदीप धनखड़ ने बुधवार को राज्यसभा में कहा कि प्रलोभन तंत्रों पर, तुष्टिकरण पर, जिसे अक्सर फ्रीबीज के रूप में जाना जाता है, सदन को विचार करने की आवश्यकता है क्योंकि देश तभी प्रगति करता है जब पूंजीगत व्यय उपलब्ध हो।

चुनावी प्रलोभन बन गयी है चुनावी प्रक्रिया : उन्होंने कहा कि अब चुनावी प्रक्रिया ऐसी हो गई है कि ये चुनावी प्रलोभन बन गयी हैं। इसके बाद सत्ता में आयी सरकारों को इतनी असहज स्थिति का

सामना करना पड़ा कि वे अपनी सोच पर पुनर्विचार करना चाहती थीं। एक राष्ट्रीय नीति की अत्यंत आवश्यकता है ताकि सरकार के सभी निवेश किसी भी रूप में बड़े हित में उपयोग किये जायें। इससे पहले राज्यसभा में समाजवादी पार्टी के सांसद राम गोपाल यादव ने सांसद निधि को बढ़ाकर 20 करोड़ रुपये प्रति वर्ष किए जाने की मांग सदन में रखी थी। उन्होंने यह भी कहा कि सांसद निधि को जीएसटी के दायरे से बाहर रखा जाए। उनका कहना था कि यदि यह संभव नहीं है तो फिर सांसद निधि के प्रावधान को ही खत्म कर दिया जाना चाहिए। सपा सदस्य का कहना था कि मौजूदा सांसद निधि नाकाफी है, जिसके कारण जनप्रतिनिधि अपने क्षेत्र में काम नहीं करा पाते हैं। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि एक संसदीय क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले विभिन्न विधायकों को कुल मिलाकर सांसद से कहीं ज्यादा निधि मिलती है।

ये ऐसे मुद्दे हैं, जिनका समाधान कानून के माध्यम से ही संभव

सांसद राम गोपाल यादव के वक्तव्य के बाद सभापति ने फ्रीबीज के मुद्दे पर सदन को विचार करने की आवश्यकता की बात कही। सभापति ने कहा, हमारे संविधान में विधायिका, सांसदों, विधायकों के लिए प्रावधान था, लेकिन एक समान तंत्र नहीं था। इसलिए, कई राज्यों में विधानसभाएं अपने सदस्यों को सांसदों की तुलना में अधिक भत्ते और वेतन देती हैं, और यहां तक कि पूर्व विधायकों की पेंशन में भी एक से 10 तक का अंतर है। ये ऐसे मुद्दे हैं जिन्हें कानून से हल किया जा सकता है। इससे राजनेताओं, सरकार, कार्यपालिका को लाभ होगा और यह उच्च गुणवत्ता वाले निवेश को भी सुनिश्चित करेगा।

मोतियाबिन्द
मोतियाबिन्द के लक्षण, उपचार एवं रोकथाम

मोतियाबिन्द के लक्षण
• दृष्टि में धुंधलापन या अस्पष्टता।
• बुजुर्गों में निकट दृष्टि दोष में निरंतर बढ़ोतरी।
• रंगों को देखने की क्षमता में बदलाव।
• रात में वाहन चलाने में दिक्कत आना।
• दिन के समय आँखें चौंधियाना।
• दोहरी दृष्टि (डबल विजन)।
• चश्मे के नंबर में अचानक बदलाव आना।

मोतियाबिन्द का उपचार
• मोतियाबिन्द का एक मात्र उपचार ऑपरेशन है।
• इस ऑपरेशन में आँख से धुंधला लेंस निकाल दिया जाता है और कृत्रिम लेंस लगाया जाता है।
• मोतियाबिन्द का ऑपरेशन सुरक्षित एवं सरल है।
• मोतियाबिन्द का ऑपरेशन किसी भी मौसम में करवा सकते हैं।

मोतियाबिन्द की रोकथाम
• चालीस वर्ष के पश्चात नियमित रूप से आंखों की जांच कराएं।
• अपना वजन सामान्य बनाएं रखें।
• रंग-बिरंगे फलों और सब्जियों को अपने भोजन में शामिल करें।
• धूम्रपान छोड़ें और शराब का सेवन कम से कम करें।

सभी सरकारी अस्पतालों में नेत्र जाँच एवं उपचार की निःशुल्क सुविधा उपलब्ध है

PRNO 348569 (Health Med Edu and Family Welfare) IPRD 24-25

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, झारखण्ड
स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा एवं परिवार कल्याण विभाग, झारखण्ड सरकार
104 108

गोड्डा में पावर प्लांट की जमीन को लेकर सदन में हंगामा, मंत्री दीपक बिरूआ ने कहा

अडाणी पावर प्लांट को दी गयी जमीन की जांच होगी

- नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल ने कहा- जांच कमेटी में कानून के जानकार के साथ जनप्रतिनिधियों को भी शामिल किया जाना चाहिए

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के 13वें दिन बुधवार को गोड्डा में अडाणी पावर प्लांट के लिए दी गई जमीन को लेकर सदन में जोरदार बहस हुई। सरकार ने इस मुद्दे को गंभीर मानते हुए जांच कराने का आश्वासन दिया। मंत्री दीपक बिरूआ ने कहा कि एसपीटी अधिनियम के तहत जमीन बिक्री योग्य नहीं है। इस मामले की जांच के लिए मुख्य सचिव की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की जायेगी। जो एसपीटी और एनर्जी पॉलिसी के उल्लंघन की समीक्षा करेगी। नेता प्रतिपक्ष बाबूलाल ने कहा कि इसकी जांच के लिए कमिश्नर की अध्यक्षता में छह सदस्यीय कमेटी बनायी गयी है, जिसमें उपसमाहर्ता रैंक के अफसरों को शामिल किया गया है। कमेटी में कानून के जानकार के साथ जनप्रतिनिधियों को भी शामिल किया जाना चाहिए।

वहीं कांग्रेस के विधायक प्रदीप यादव ने तंज कसते हुए कहा कि हम समझे थे कि कुर्ता बदल गया तो कहीं टोन भी बदल गया होगा, लेकिन आपका टोन नहीं बदला। प्रदीप यादव ने सरकार से पूछा कि क्या भू-अर्जन में शर्तों का उल्लंघन हुआ है। क्या अडाणी को लाभ पहुंचाया गया है। एसपीटी का उल्लंघन हुआ है। या एनर्जी पॉलिसी का उल्लंघन हुआ है। इस पर सरकार को स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। प्रदीप यादव ने रघुवर सरकार पर सवाल उठाते हुए कहा

कि गोड्डा जिला एवं पौडैयाहाट अंचल में अडाणी पावर लिमिटेड झारखंड द्वारा वर्ष 2017-2018 में स्थापित किया गया। तत्कालीन राज्य सरकार एवं अधीनस्थ पदाधिकारियों ने कंपनी के प्रभाव में आकर भूमि अधिग्रहण कानून-2013 और अन्य कानूनी प्रावधानों को दरकिनार किया। उन्होंने दावा किया कि जमीन की कीमत रातों-रात 46 लाख रुपये प्रति एकड़ से घटाकर पहले 3.25 लाख रुपये और फिर 12.5 लाख रुपये प्रति एकड़ कर दी गई। विधायक प्रदीप यादव ने कहा कि झारखंड राज्य ऊर्जा नीति-2012 की शर्त थी कि राज्य के पावर प्लांट को 25 प्रतिशत बिजली में प्राथमिकता से राज्य को देना अनिवार्य है, को दरकिनार कर पूरी बिजली बांग्लादेश को देने का एकरारनामा किया गया। एसपीटी एक्ट के प्रावधान के प्रतिकूल निजी कंपनी को जमीन अधिग्रहित कर दिया गया। जबकि एसपीटी पब्लिक परपस के लिए जमीन अधिग्रहण की अनुमति देती है। विधायक प्रदीप यादव ने कहा कि कंपनी जिला प्रशासन एवं रैयतों के बीच हुए एग्रीमेंट के मुताबिक, स्थानीय लोगों को प्रशिक्षित कर अडाणी पावर लिमिटेड में नौकरी देना था। अस्पताल एवं स्कूल की सुविधा भी देना था, लेकिन इसका भी अनुपालन नहीं किया गया। प्रदीप यादव ने कहा कि वन-भूमि का अधिग्रहण कर, गोचर एवं श्मसान घाट की जमीन अधिग्रहण कर संयंत्र को स्थापित किया गया, लेकिन आज तक बदले में न तो उस क्षेत्र को वन-भूमि, गोचर एवं श्मसान घाट की जमीन का मिलना एसपीटी के प्रावधानों के विपरीत काम किया गया। उन्होंने कहा कि ग्राम माली-गंगटा जाने वाली पक्की सड़क एवं सिंचाई नहर की जमीन बिना समुचित मुआवजे एवं बिना सड़क निर्माण एवं नहर निर्माण का देना कई ऐसे कामों एवं निर्णयों का तत्कालीन सरकार एवं स्थानीय सरकार यानी जिला प्रशासन द्वारा लिया गया है जो राज्य के प्रावधानित कानूनों के प्रतिकूल है। सरकार उच्चस्तरीय टीम बनाकर इसकी समीक्षा कर दोषियों पर समुचित दंडात्मक कार्रवाई करे।

ई-रिक्शा घोटाले पर विधानसभा में हंगामा

- प्रदीप यादव ने की सरकार से जांच रिपोर्ट सार्वजनिक करने की मांग

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के 13वें दिन बुधवार को सदन में ग्रामीण स्वच्छता मिशन के तहत गढ़वा और पलामू में ई-रिक्शा खरीद में हुए घोटाले को लेकर कांग्रेस विधायक प्रदीप यादव और सरकार के बीच तीखी बहस हुई। प्रदीप यादव ने आरोप लगाया कि 1.15 लाख रुपये कीमत वाले ई-रिक्शा के लिए 3.5 लाख रुपये का भुगतान किया गया, और यह खरीद एक गैर-पंजीकृत डीलर से की गयी। उन्होंने सरकार से इस पर जांच रिपोर्ट सार्वजनिक करने की मांग की।

मंत्री ने भी गड़बड़ी की बात स्वीकारी : जवाब में मंत्री योगेंद्र प्रसाद ने स्वीकार किया कि गढ़वा में कार्यपालक अभियंता द्वारा पंचायतों के लिए ई-रिक्शा की खरीद में गड़बड़ी हुई है। जेम पोर्टल के माध्यम से 43 पंचायतों के लिए 104 ई-रिक्शा खरीदी गयी थी। वित्तीय अनियमितता की सूचना मिलने पर सरकार उड़नदस्ता का गठन कर जांच करा रही है। मंत्री श्री प्रसाद ने कहा कि यह प्रश्न राज्यहित में है।

अगर किसी पदाधिकारी ने इसे छिपाने का काम किया है, तो सरकार कठोर कार्रवाई करेगी। जांच के बाद दोषियों के खिलाफ कार्रवाई होगी। इस पर विधायक प्रदीप यादव ने कहा कि जांच करायी नहीं जा रही है। जांच हो चुकी है। इसलिए जांच रिपोर्ट सार्वजनिक करें। इसकी जांच मुख्य सचिव स्तर के पदाधिकारी से करायें। यही मेरी मांग है। अगर सच में सरकार चाहती है कि कार्रवाई हो, तो जांच करायें। जिस डीलर से खरीदा, वह रजिस्टर्ड डीलर नहीं है। किस आधार पर कार्रवाई कर रहे हैं, यह बतायें। इस पर मंत्री योगेंद्र प्रसाद ने कहा कि 2 फरवरी 2025 को जांच कमेटी बनी थी। जो दोषी होगा, उस पर कार्रवाई होगी।

प्रदीप यादव ने कहा कि यह सबसे बड़ा फोरम है, जनता का। यह सबका और सरकार का दायित्व है कि आप जांच रिपोर्ट दीजिये। क्योंकि वह जांच रिपोर्ट ही अधूरा है। आपको दिक्कत कहां है, बताइये। इस पर मंत्री योगेंद्र प्रसाद ने कहा कि जांच रिपोर्ट का अवलोकन करने दिया जाये। जांच रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई तय होगी। विभागीय कार्यवाही के साथ-साथ सब तरह की कार्रवाई करेंगे। तब विधायक प्रदीप यादव ने कहा कि लीपापोती नहीं चलेगी। जांच रिपोर्ट है, तो सार्वजनिक कर दीजिये।

इस पर मंत्री ने कहा कि जांच रिपोर्ट का अवलोकन करने दिया जाये। फिर जरूरत पड़ी तो विभाग हर तरह की जांच करायेगी। तब विधायक प्रदीप ने कहा कि फिर हम क्यों हैं। जब विभाग को ही जांच कराना था तो मेरा क्या औचित्य था, इस सवाल को लाने का। हमने तो कहा कि विभाग कार्रवाई करने में धीमा है। हम असंतुष्ट हैं। सदन से यह मांग करता हूं कि इसकी जांच मुख्य सचिव से करायी जाये। गतिरोध बढ़ता देख मंत्री सुदिव्य कुमार ने अपनी बात की। उन्होंने कहा कि मैं मंत्री और वरिष्ठ सदस्य के गतिरोध पर सिर्फ दो शब्द कहना चाहूंगा। फरवरी माह में जांच का आदेश हुआ है। जांच की रिपोर्ट आ गयी है। मंत्री कह रहे हैं कि वह अवलोकन करके कार्रवाई करेंगे। तो सदन में हठधर्मिता ठीक नहीं है। थोड़ा लचीला रुख रखें।

रोड सेफ्टी के फीचर पाठ्यक्रम में शामिल होगा : मंत्री

- सड़क हादसे कम करने को सरकार कृतसंकल्प : दीपक बिरुआ

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के दौरान मंत्री दीपक बिरुवा ने घोषणा की कि राज्य में सड़क सुरक्षा (रोड सेफ्टी) के फीचर्स को पाठ्यक्रम में शामिल किया जायेगा। सरकार सड़क दुर्घटनाओं के आंकड़ों में कमी लाने और जिला स्तर पर सुधार के लिए कृतसंकल्पित है। मंत्री बिरुवा बुधवार को सदन में प्रदीप यादव के सवाल का जवाब दे रहे थे। उन्होंने कहा कि शराब पीकर ड्राइव करने पर रोक के लिए ब्रेथ एनालाइजर टेस्ट एवं प्रावधानित दंड को प्रभावी तरीके से लागू किए जाने के लिए राज्य के सभी जिलों के लिए कुल 303 ब्रेथ एनालाइजर उपलब्ध कराये गये हैं।

डीसी नहीं देते तवज्जो : नवीन जायसवाल

विधायक नवीन जायसवाल ने कहा कि हर जिला में ब्लैक स्पॉट होता है। डीसी की अध्यक्षता में कमेटी बनी हुई है। कई ब्लैक स्पॉट रांची में भी है। सेफ्टी फीचर के लिए रांची डीसी को कई बार चिट्ठी भी भेजे पर कोई तवज्जो नहीं मिला। हर जिले के डीसी को चिट्ठी लिखकर ब्लैक स्पॉट में सेफ्टी फीचर लगाने का निर्देश दें।

चार वर्ष में इतनी हुई सड़क दुर्घटना

विगत चार वर्ष 2021 में 3871, वर्ष 2022 में 5174, वर्ष 2023 में 5315 और 2024 में 5191 सड़क दुर्घटना हुई है। राज्य सरकार सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए कृत संकल्पित है। इसे न्यूनतम करने तथा पूर्णतया रोकथाम के लिए नियमित वाहन जांच अभियान के साथ-साथ सड़क दुर्घटनाओं के विस्तृत तकनीकी विश्लेषण करते हुए सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने का प्रयास किया गया है। शराब पीकर वाहन चलाने वाले चालकों के विरुद्ध मोटरयान अधिनियम, 1988 की धारा-185 के अनुसार प्रथम अपराध के लिए करावास, जिसकी अवधि छह माह तक और जुमार्ना 10 हजार या दोनों से दण्डनीय होगा। दूसरी बार बाद के अपराध के लिए कारावास जिसकी अवधि दो वर्ष तक की हो सकेंगी या जुमार्ना 15 हजार या दोनों से दण्डनीय है। उक्त धारा के तहत अपेक्षित कार्रवाई करते हुए वर्ष-2023 में 411 एवं वर्ष 2024 में 377 वाहन चालकों का ड्राइविंग लाइसेंस को भी निलंबित किया गया है।

परिवहन निगम घाटे में

मंत्री दीपक बिरुवा ने कहा कि हर राज्य में परिवहन निगम घाटा में चल रहा है। वस्तुस्थिति यह है कि राज्य सरकार हर नागरिक को परिवहन सुविधा उपलब्ध कराने के लिए कृत संकल्पित है। वे सदन में विधायक राजेश कच्छप के सवाल का जवाब दे रहे थे। उन्होंने कहा कि राज्य परिवहन प्राधिकार के जरिये अन्तर्राज्यीय एवं अन्य राज्यों के बीच तथा क्षेत्रीय परिवहन प्राधिकार राज्य के अन्दर यातायात की सुगमता के लिए निजी वाहन स्वामियों को सवारी गाड़ी के परिचालन के लिए परमिट निर्गमण किया जाता है, जिससे सरकार को राजस्व की प्राप्ति होती है। मंत्री ने कहा कि सुदूर ग्राम पंचायतों को प्रखण्ड स्तर से लेकर जिला मुख्यालय को जोड़ने के लिए झारखंड मुख्यमंत्री ग्राम गाड़ी योजना, 2022 अधिसूचित की गयी है। इस योजना के तहत अबतक कुल 601 ग्रामीण मार्गों को अधिसूचित किया जा चुका है। इस योजना के तहत अधिसूचित ग्रामीण मार्गों पर दक्षिणी छोटानागपुर प्रमण्डल के जिलों के लिए 37 बस, उत्तरी छोटानागपुर प्रमण्डल के जिलों के लिए 33 बस, कोल्हान प्रमण्डल के जिलों के लिए 20 बस पलामू प्रमण्डल के जिलों के लिए 20 बस एवं संथाल परगना प्रमण्डल के जिलों के लिए 17 बसों को परमिट निर्गत किया गया है। वहीं विधायक भाजपा सीपी सिंह ने कहा कि सरकारी बस डिपो में यात्रियों के साथ ड्राइवर-खलासी के लिए शौचालय, लाइट सहित बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाए।

पुल निर्माण में अनियमितता पर अमित महतो ने सरकार को घेरा

- कहा- 2021 में जांच कमेटी बनायी गयी, लेकिन आज तक जांच प्रतिवेदन नहीं दिया गया है।

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड विधानसभा के बजट सत्र के दौरान बुधवार को विधायक अमित महतो ने सिल्ली में बन रहे पुल की अनियमितताओं का मामला सदन में उठाया। उन्होंने बताया कि ठेकेदार मेसर्स एएन पांडेय को तीन पुलों के निर्माण की जिम्मेदारी दी गयी थी, लेकिन इनमें से दो पुल ध्वस्त हो गए। इस पर विधायक मनोज यादव ने कटाक्ष करते हुए पूछा कि तीसरा पुल कब धंसेगा। अमित महतो ने कहा कि 2021 में जांच कमेटी बनायी गयी, लेकिन आज तक जांच प्रतिवेदन नहीं दिया गया है। पदाधिकारी

संवेदक को संरक्षण दे रहे हैं। संवेदक को अब तक काली सूची (ब्लैक लिस्ट) में नहीं डाला गया है। इस पर ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय सिंह ने कहा कि सरकार संवेदक को बचाने का प्रयास नहीं कर रही है। चलते सत्र में वस्तुस्थिति से अवगत करा दिया जायेगा। उन्होंने कहा कि जांच का आदेश मुख्यमंत्री ने दिया है। संवेदक को डिबार किया गया है। जांच कमेटी की रिपोर्ट आने के बाद कार्रवाई की जायेगी। इस पर अमित महतो ने कहा कि पदाधिकारी मंत्री को गुमराह कर रहे हैं। वन विभाग से एनओसी मिलते ही जलापूर्ति शुरू कर दी जायेगी। वहीं जनार्दन पासवान के कानहाचट्टी प्रखंड मुख्यालय में पेयजलापूर्ति के सवाल पर प्रभारी मंत्री योगेंद्र प्रताप ने कहा कि वन विभाग से एनओसी मिलते ही जलापूर्ति शुरू कर दी जायेगी।

हेल्थ सब सेंटर पर बन रहा जलमीनार : नवीन

विधायक नवीन जायसवाल ने कहा कि हरमू में हेल्थ सब सेंटर की जमीन पर जलमीनार बनाया जा रहा है। यह जमीन हेल्थ सेंटर के लिए है। इसका विरोध करने पर प्रशासन ने झूठा एफआईआर कर दिया। इसे दूसरे जगह हस्तांतरित किया जाए।

इस बार जल संसाधन का बजट है कम : अमित यादव

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। विधानसभा में बुधवार को जल संसाधन विभाग के बजट पर अमित यादव ने कटौती प्रस्ताव पेश करते हुये कहा कि पिछले साल की तुलना में इस बार जलसंसाधन का बजट 30 करोड़ कम है। जलसंसाधन में नाकामी छिपाने के लिये बजट कम कर दिया गया। सत्ता में आने के बाद जनसुविधाओं से मुंह फेर लेते हैं। पिछले पांच साल में विभाग ने क्या काम किया, इसे भी बताना चाहिये। उन्होंने कहा कि जलाशय योजना कई दशकों से चल रही है। बंगाल के बाढ़ के पानी को रोकने के लिये तिलैया और मैथन डैम बना था। आज डीवीसी

इससे बिजली उत्पादन कर रही है। इससे राज्य को क्या फायदा हो रहा है। आज डैम से झारखंड को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध नहीं हो पाता है। खदानों में स्टोर पानी को किसानों तक पहुंचाने का प्रयास होना चाहिये। उन्होंने कहा कि अदालतों में पांच लाख मामले लंबित हैं। 75 हजार मामले चल रहे हैं। इस पर त्वरित कार्रवाई के लिए जजों की नियुक्ति होनी चाहिये।

प्रेस प्रोटेक्शन एक्ट लागू हो : जयराम महतो

विधायक जयराम महतो ने विधानसभा में पत्रकारों की सुरक्षा का मुद्दा उठाया है। उन्होंने छत्तीसगढ़ की तर्ज पर झारखंड में प्रेस प्रोटेक्शन एक्ट लागू करने की मांग की है। जयराम महतो ने कहा कि मान्यता प्राप्त पत्रकारों को मजीठिया आयोग का लाभ दिया जाये। साथ ही उन्होंने यह भी मांग की कि पत्रकारों को राज्य के टोल प्लाजा में टोल फ्री किया जाये।

बांग्लादेशी नागरिक की जमानत याचिका पर फैसला सुरक्षित

रांची। घुसपैठ मामले में गिरफ्तार बांग्लादेशी नागरिक रॉनी मंडल की ओर से दाखिल जमानत याचिका पर बुधवार को पीएमएलए के विशेष न्यायाधीश योगेश कुमार की अदालत में हुई। दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के प›ात अदालत ने अपना आदेश सुरक्षित रख लिया है। अदालत सुरक्षित आदेश 22 मार्च को सुनाएगी। उसने जमानत की गुहार लगाते हुए एक फरवरी को याचिका दाखिल की थी। ईडी ने बीते 13 नवंबर को दो कोलकाता से दो बांग्लादेशी रॉनी मंडल और समीर चौधरी को गिरफ्तार किया था। तब से वह जेल में है। ईडी ने रॉनी और समीर के नाम पर बने फर्जी पासपोर्ट समेत अन्य दस्तावेज भी बरामद किया है। दोनों नाम बदल कर भारत में रह रहा है। पूछताछ में दोनों ने खुद को बांग्लादेशी होने की बात स्वीकार की है। गिरफ्तारी के बाद दोनों को ट्रांजिट रिमांड पर लेकर ईडी रांची पहुंची थी।

बच्चों के पोषाहार में बड़े घोटाला की आशंका मुख्य सचिव करायें जांच : चंद्र प्रकाश

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। गिरिडीह के सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी ने जिले के बिरनी प्रखंड में आंगनबाड़ी केन्द्रों को मिलने वाले 260 मिट्रिक टन अनाज गायब करने वाले दोषियों पर अब तक एफआइआर दर्ज नहीं करने और दोषियों से अनाज रिकवरी नहीं होने पर सवाल खड़ा किया है। उन्होंने कहा कि ऐसा प्रतीत होता है कि दोषियों को राज्य सरकार द्वारा संरक्षण दिया जा रहा है। उन्होंने इसे लेकर राज्य के मुख्य सचिव का ध्यान आकृष्ट कराया है। उन्होंने मुख्य सचिव से कहा है कि जब एक प्रखंड में इतना बड़ा अनाज भंडारण घोटाला है तो पूरे राज्य के अलग-अलग प्रखंडों की क्या स्थिति होगी, यह जांच का विषय है। उन्होंने अंदेशा

जताया है कि संयुक्त बिहार में जिस प्रकार चारा घोटाला सामने आया था। इसी प्रकार चारा घोटाले से भी बड़ा आंगनबाड़ी पोषाहार अनाज घोटाला झारखंड में हो रहा है। उन्होंने मुख्य सचिव को इस विषय पर सभी उपायुक्तों से प्रत्येक जिला के प्रखंड वार विस्तृत रूप से अनाज भंडारण का रिपोर्ट मांगने को कहा है। सांसद ने मुख्य सचिव से सात दिनों के भीतर की गई कार्रवाई से अवगत कराने को भी कहा है।

लैंड स्कैम : अमित अग्रवाल को बड़ा झटका, हाईकोर्ट ने बेल देने से किया इनकार

रांची। सेना के कब्जे वाली जमीन की फर्जी दस्तावेजों के सहारे खरीद-बिक्री से जुड़े लैंड स्कैम के आरोपी अमित अग्रवाल को बड़ा झटका लगा है। हाईकोर्ट ने उसकी जमानत याचिका खारिज करते हुए उसे बेल देने से इनकार कर दिया है। इससे पहले रांची पीएमएलए (प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट) की स्पेशल कोर्ट ने उसे बेल देने से इनकार कर दिया था। जिसके बाद अमित ने हाईकोर्ट में जमानत की गुहार लगाई थी। इडी ने इस संबंध में कांड संख्या 01/2023 दर्ज किया है। दरअसल, लैंड स्कैम की अब तक की जांच में अमित अग्रवाल, दिलीप घोष, रांची के पूर्व उपायुक्त छवि रंजन, बड़ागाईं अंचल के राजस्व उप निरीक्षक भानु प्रताप प्रसाद, कथित रैयत प्रदीप बागची, जमीन कारोबारी अफसर अली, इम्तियाज खान, तल्हा खान, फैयाज खान और मोहम्मद सद्दाम को गिरफ्तार कर किया था। हाईकोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस सुजीत नारायण प्रसाद और जस्टिस प्रदीप कुमार श्रीवास्तव की बेंच में अमित अग्रवाल की याचिका पर सुनवाई हुई।

सीपी चौधरी के मामले पर 4 अप्रैल को होगी सुनवाई

रांची। ओबीसी आरक्षण सहित अन्य मांगों को लेकर मुख्यमंत्री आवास का घेराव करने के मामले में नामजद सांसद चंद्र प्रकाश चौधरी की ओर से दाखिल डिस्चार्ज याचिका पर बुधवार को एमपी-एमएलए के विशेष न्यायिक दंडाधिकारी सार्थक शर्मा की अदालत में सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान अदालत ने मामले में अभियोजन पक्ष को जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। इसके लिये अदालत ने 4 अप्रैल की तारीख निर्धारित की है। सीपी चौधरी ने मामले में अपने आप को निर्दोष बताते हुये मंगलवार को डिस्चार्ज याचिका दाखिल की है। वहीं, इसी मामले में आरोपी सुदेश महतो की डिस्चार्ज याचिका एक मार्च को अदालत ने खारिज कर दी थी। इसी मामले में आरोपी तत्कालीन विधायक लंबोदर महतो को हाईकोर्ट से राहत मिल चुकी है। घटना को लेकर ओरमांझी के तत्कालीन सीओ विजय केरकेट्टा ने लालपुर थाना में 8 सितंबर 2021 को कांड संख्या 201/2021 के तहत प्राथमिकी दर्ज कराई थी। इसमें कहा गया है कि मुख्यमंत्री आवास घेराव को लेकर आजसू कार्यकर्ता मोरहाबादी मैदान में एकत्रित हुये। इसका नेतृत्व सुदेश महतो, चंद्र प्रकाश चौधरी, लंबोदर महतो, राम चंद्र सहिस समेत अन्य कर रहे थे। इनलोगों पर जानबुझ कर प्रतिनियुक्त पदाधिकारियों के साथ धक्का मुक्की, सरकारी काम में बाधा डालने का आरोप है।

जेपीएससी प्रथम के तीन आरोपियों की एबीपी खारिज

रांची। प्रथम जेपीएससी सिविल सेवा भर्ती घोटाले के तीन आरोपियों बिरेंद्र कुमार सिंह, हरेंद्र नारायण चौधरी एवं विजय बहादुर सिंह की अग्रिम जमानत याचिका अदालत ने खारिज कर दी है। दो आरोपियों की ओर से दाखिल याचिका पर सीबीआई के विशेष न्यायाधीश पीके शर्मा की अदालत में बुधवार को सुनवाई हुई। सुनवाई पश्चात दोनों की याचिका खारिज कर दी। वहीं, विजय बहादुर सिंह की याचिका पर सुनवाई पश्चात 10 मार्च को आदेश सुरक्षित रख लिया था। बुधवार को सुरक्षित आदेश सुनाया गया। तीनों ने अग्रिम जमानत की गुहार लगाते हुये पिछले दिनों याचिका दाखिल की थी। मामले में अब तक अदालत ने 33 आरोपियों को अग्रिम राहत देने से इनकार किया है। मालूम हो कि सीबीआई कोर्ट ने 16 जनवरी को 47 भ्रष्ट अफसरों समेत 74 लोगों के खिलाफ संज्ञान लेते हुए समन जारी किया है।

गृह मंत्री से मिले राज्यपाल, विधि व्यवस्था पर की चर्चा, भेंट की राज भवन पत्रिका

- झारखंड के सतत विकास की दिशा में राज्यपाल की प्रतिबद्धता का दर्पण है यह पत्रिका

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने बुधवार को नई दिल्ली में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह से भेंट की। इस दौरान उन्होंने राज्य की विकास योजनाओं और वर्तमान विधि-व्यवस्था पर विस्तृत चर्चा की। इस मौके पर राज्यपाल ने राज भवन की ओर से प्रकाशित राज भवन पत्रिका की प्रति केंद्रीय गृह मंत्री को भेंट की। यह पत्रिका 31 जुलाई 2024 से 31 जनवरी 2025 की अवधि में राज भवन, झारखंड

की विभिन्न गतिविधियों, महत्वपूर्ण आयोजनों और पहलों का संकलन है। इसके प्रधान संपादक राज्यपाल के अपर मुख्य सचिव डॉ नितिन कुलकर्णी हैं।

राज्यपाल की कार्यशैली और प्रतिबद्धता : राज्यपाल न केवल जनसमस्याओं के प्रति संवेदनशील हैं, बल्कि उनके समाधान के लिए ठोस पहल करने के लिए निरंतर सक्रिय रहते हैं। उन्होंने राज भवन को आम जनमानस से जोड़ने के लिए कई सार्थक पहल किये हैं। उनकी कार्यशैली में पारदर्शिता, संवाद और सहभागिता की स्पष्ट झलक मिलती है। वे राज्य के समग्र विकास के लिए विभिन्न प्रतिनिधिमंडलों, शिक्षाविदों, सामाजिक संगठनों, प्रशासनिक अधिकारियों और उद्योग जगत के विशेषज्ञों से नियमित सुझाव लेते हैं, जिससे सुशासन को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

शिक्षा और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा : इस अंक में राज्यपाल द्वारा नागरिकों से संवाद, केंद्र एवं राज्य सरकार की योजनाओं के प्रति जागरूकता बढ़ाने और जनकल्याण को साकार करने से संबंधित गतिविधियों को विशेष रूप से शामिल किया गया है। उन्होंने विभिन्न विश्वविद्यालयों और विद्यालयों का भ्रमण कर शैक्षणिक गुणवत्ता और आधारभूत सुविधाओं का आकलन किया और छात्र-छात्राओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। वे उच्च शिक्षा को अधिक प्रभावी एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं। वे अन्य राज्यों से आने वाले आगंतुकों को झारखंड की विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराने और जनजातीय समाज के उत्थान एवं सशक्तिकरण के लिए विशेष पहल करने में अग्रसर रहते हैं। यह

एनसीसी के दीक्षांत समारोह में शामिल हुये संजय सेठ

रांची। ग्वालियर में आयोजित एनसीसी के दीक्षांत परेड में केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ शामिल हुये। इस दीक्षांत समारोह में कुल 122 महिला कैडेट्स को एएनओ रैंक प्रदान

किया गया। इस अवसर पर लेफ्टिनेंट जनरल गुरवीर पाल सिंह, डीजी एनसीसी ब्रिगेडियर जितेंद्र शर्मा, कमांडेड एनसीसी गुवाहाटी विशेष रूप से उपस्थित थे। केंद्रीय रक्षा राज्य मंत्री श्री सेठ ने सभी महिला कैडेट्स को बधाई दी। सभी कैडेट्स को राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा के समक्ष अपने कर्तव्यों के प्रति समर्पित रहने की शपथ भी दिलाई गई। उन्होंने कहा कि इस समारोह में शामिल होना मेरे लिये भी गौरव की बात है। पीएम नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन और प्रेरणा का परिणाम है कि बेटियां हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं। यह भविष्य के भारत की बेहतरीन तस्वीर है।

जिला प्रशासन ने राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के संग की बैठक

चुनावी प्रक्रिया को मजबूत करने पर चर्चा

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह उपायुक्त मंजूनाथ भजंत्री ने बुधवार को मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक की। उपायुक्त सभागार में आयोजित बैठक में जिला उप निर्वाचन पदाधिकारी, जिला के सभी सात विधानसभा क्षेत्र के निवार्ची पदाधिकारी एवं मान्यता प्राप्त विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

बैठक में विधानसभावार मतदाता सूची की जानकारी, हाई-राइज बिल्डिंग/अपार्टमेंट में स्थित मतदान केंद्रों, प्रपत्र-6, 7, 8 से संबंधित प्रक्रियाओं, नए मतदाताओं को अहर्ता तिथि पर इपीआइसी कार्ड वितरण, मतदान केंद्रों के पुनर्व्यवस्थापन और 1500 से अधिक मतदाता वाले मतदान केंद्रों के विषय पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों से उनकी राय और सुझाव भी लिये गए, जिन पर अमल करने के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए गए। चुनाव आयोग की मंशा के अनुरूप कानूनी ढांचे के तहत चुनावी प्रक्रियाओं को और अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाने के लिए यह संवाद आयोजित किया गया।

बैठक में जिला उप निर्वाचन पदाधिकारी द्वारा जानकारी दी गयी कि रांची जिला में कुल मतदाताओं की संख्या 26 लाख 22 हजा 429 है, इनमें महिला मतदाता 13 लाख 21 हजार 673 एवं पुरुष मतदाता 13 लाख 687 हैं, जबकि थर्ड जेंडर मतदाताओं की संख्या 69 है। जिला के सभी सात विधानसभा क्षेत्रों में मतदान केन्द्रों की संख्या 2777 है।

केंद्र सरकार पर मदद नहीं करने का लगाया आरोप

एक-दो वर्षों में जल संसाधन विभाग को सही जगह पर ले आयेंगे: हफीजुल हसन

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। विधानसभा में चल रहे बजट सत्र के दौरान बुधवार को मंत्री हफीजुल हसन ने कहा कि एकाध साल जलसंसाधन विभाग के चलाने दीजिये, सही जगह पर ले आयेंगे। उन्होंने विपक्ष से कहा कि केंद्र में आपकी सरकार है। केंद्र मदद नहीं कर रहा है।

गांव में कमेटी बनाकर 40 से 50 एकड़ में सिंचाई की जायेगी : मंत्री हफीजुल ने कहा कि माइनर लिफ्ट एरिगेशन सोलर से करेंगे। चेक डैम और इंटक वेल बनायेंगे। इसके लिए गांव में कमेटी बनाकर 40 से 50 एकड़ में सिंचाई सुविधा उपलब्ध कराई जायेगी। ढ़ाई एकड़ में तालाब बनाया जायेगा। छोटी-छोटी योजनायें ली जायेंगी। 11 योजनाओं का काम प्रगति पर है। स्वर्णरेखा परियोजना पर भी ध्यान दिया जायेगा। पुनासी डैम के मुख्य नहर का थोड़ा काम बाकी है। जल्द ही देवघर को पानी मिलेगा। उन्होंने कहा कि कनहर सिंचाई योजना का उदघाटन 2019 में रघुवर दास किये थे। उदघाटन के 24 घंटा के बाद चूहा बिल कर दिया, खोखला हो गया और बह गया। इस तरह का काम हम नहीं करेंगे। ठोस काम करेंगे।

अपने संबोधन के दौरान उन्होंने कहा कि आज आदमी हिंदू-मुसलमान नहीं सुनना चाहता है। भाजपा के छह सांसद हैं। अभी नहीं किये तो हाफ हो जायेंगे। पूर्व सीएम रघुवर दास पर निशाना साधते हुये कहा कि राज्यपाल रहे हैं। कितना मुस्लिम देश है। नाम गिनते खत्म ही नहीं होगा। झारखंड ऐसे नहीं बना हजारों लाखों शहीद हुये हैं।

मंत्री हफीजुल ने कहा कि गिरिडीह में हुई घटना का मामला दोपहर तक हिंदू और मुसलमान भाईयों ने सुलझा लिया था। तब तक रघुवर दास को पता चला। वे देवघर जा रहे थे इस बीच उन्होंने गिरिडीह की ओर गाड़ी घुमा लिया। पीछे-पीछे बाबूलाल भी चले गये। अब आप लोग 60 के ऊपर चले गये हैं। 65-70 साल हो रहा है। अब अगले 20 साल तक कोई वेकेंसी नहीं है।

यूपीएससी भर्ती परीक्षा 23 को, परीक्षा केंद्रों के 200 मीटर के दायरे में निषेधाज्ञा

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी), नई दिल्ली द्वारा आयोजित रिक्रूटमेंट टेस्ट एग्जाम 2025 का आयोजन 23 मार्च को राजकीय बालिका +2 उच्च विद्यालय, बरियातु में किया जाएगा। परीक्षा दो पालियों में संपन्न होगी। प्रथम पालीः प्रातः 09:30 से 11:30 बजे तक और द्वितीय पालीः अपराह्न 02:00 से 04:00 बजे तक होगी। परीक्षा के दौरान कदाचारमुक्त एवं शांतिपूर्ण वातावरण बनाए रखने के लिए उपायुक्त-सह-जिला दंडाधिकारी एवं एसएसपी, रांची द्वारा पुलिस बल एवं दंडाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की गई है।

200 मीटर के दायरे में निषेधाज्ञा लागू

परीक्षा केंद्र के आसपास भीड़भाड़ और अव्यवस्था को रोकने के लिए अनुमंडल दंडाधिकारी, सदर, रांची द्वारा धारा-163 के तहत परीक्षा केंद्र के 200 मीटर के दायरे में निषेधाज्ञा लागू की गई है। यह 23 मार्च को सुबह 06:30 बजे से शाम 07:00 बजे तक प्रभावी रहेगी।

इन गतिविधियों पर रहेगी पाबंदी

1. पांच या अधिक व्यक्तियों का एक जगह जमा होना (सरकारी कार्यों एवं शवयात्रा को छोड़कर)
2. ध्वनि विस्तारक यंत्रों (लाउडस्पीकर आदि) का उपयोग
3. किसी भी प्रकार के अस्त्र-शस्त्र, जैसे बंदूक, राइफल, रिवॉल्वर, बम, बारूद आदि लेकर चलना (सरकारी कार्य में लगे कर्मियों को छोड़कर)
4. लाठी, डंडा, तीर-धनुष, गड़ासा, भाला आदि लेकर चलना (सरकारी कर्मियों को छोड़कर)
5. किसी भी प्रकार की बैठक या आमसभा का आयोजन

निषेधाज्ञा उल्लंघन पर होगी कार्रवाई

प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि निषेधाज्ञा का उल्लंघन करने पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी। परीक्षा में शामिल होने वाले छात्रों और उनके अभिभावकों से प्रशासन ने अनुरोध किया है कि वे परीक्षा केंद्रों के पास भीड़ न लगाएं और नियमों का पालन करें।

डोरंडा में ईद एक्सपो बाजार खरीदारी को उमड़ रही भीड़

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। ईद के मौके पर झारखंड का सबसे बड़ा ईद एक्सपो बाजार डोरंडा रिसालदार शाह बाबा उर्स मैदान मे चल रहा है। 31 मार्च तक चलने वाले इस मेले मे 100 से अधिक स्टॉल लगाए गए हैं। जिसमें लेडीज, जेंट्स व बच्चों के कपड़े, फुटवेयर, घर के सजावट के समान, लेडीज पर्स बैग, बेडशीट, किचेन की जरूरत के समान, अचार, आदिवासी तेल, जड़ी बूटी, खाने पीने के कई प्रकार के व्यंजन, बच्चों के लिए खिलौने, क्रॉकरी, कारपेट सहित बच्चों के मनोरंजन के लिए कई तरह के झूले लगाए गए है।

खबर एक नजर में

झारखंड चैंबर की झारखंड कृषि निर्यात पर आधारित कार्यशाला कल

राची। झारखंड चैंबर ऑफ कॉमर्स की कृषि बागवानी एवं कृषि ग्रामीण उद्योग समिति 21 मार्च को झारखंड कृषि निर्यात कार्यशाला का आयोजन कर रही है। यह कार्यक्रम सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक चैंबर भवन में आयोजित होगा। समिति के चेयरमैन आनंद कोठारी ने बताया कि इस कार्यशाला का उद्देश्य राज्य के किसानों की आय को चौगुना बढ़ाना और हजारों युवाओं, उद्यमियों एवं व्यापारियों के लिए रोजगार के अवसर सृजित करना है। कार्यशाला में एपीडा (भारत सरकार), निदेशक उद्योग, निदेशक कृषि, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक और अन्य विशेषज्ञ उपस्थित रहेंगे, जो निर्यात प्रक्रिया, गुणवत्ता मानकों और सरकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान करेंगे।

टीएसी मेंबर बनाये जाने पर नारायण उरांव से समाज की उम्मीदें बढ़ी

रांची। केंद्रीय सरना संघर्ष समिति की बैठक में कहा गया कि बीते 26 फरवरी को विभिन्न आदिवासी संगठनों के अगुआ ने केंद्रीय सरना समिति भारत के अध्यक्ष नारायण उरांव को टीएसी में मेंबर बनाये जाने पर बधाई दी थी। केंद्रीय सरना संघर्ष समिति के प्रदेश अध्यक्ष शिवा कच्छप ने कहा कि नारायण उरांव समाज के प्रति हमेशा संघर्षशील रहे हैं। सभी को साथ में लेकर चलते थे। टीएसी मेंबर बनने पर सभी जाति धर्म के लिए आशा की किरण बनकर आये हैं। उनसे हम सभी उम्मीद करते हैं कि वह कल्याणकारी कार्य करें और सभी के हित में करें। समिति के सुनिल कच्छप, अमर उरांव, सोनू मुंडा, सोमनाथ उरांव, रजनी उरांव, सुखदेव उरांव, कुशल उरांव, हेमंत गाड़ी, बुधवा उरांव, सोमा लकड़ा, लक्ष्मण तिर्की, एतवा उरांव, चरकू उरांव ने उन्हें बधाई दी है।

सरहुल: घर-घर सरना झंडा लगाने की अपील

रांची। केंद्रीय सरना संघर्ष समिति की बैठक बुधवार को प्रधान कार्यालय, कांके रोड में हुई। अध्यक्षता समिति के प्रदेश अध्यक्ष शिवा कच्छप व संचालन सती तिर्की ने की। शिवा ने कहा कि प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी सरहुल पूजा का आयोजन पारंपरिक व संस्कृतिक रीति रिवाज से होगा। 30 मार्च को सरना आदिवासी समाज के लोग उपवास रखेंगे। उस दिन नदी-तालाब से मछली-केकड़ा पकड़ने की परंपरा निभाई जाएगी। रात को घड़ा में जल रखने का कार्यक्रम होगा जबकि, 31 मार्च को पूजा और एक अप्रैल को सरहुल शोभायात्रा निकाली जाएगी। दो अप्रैल को सभी घरों में फूलखोंसी की जाएगी। उन्होंने कहा कि सरना धर्मावलंबियों से अपील है कि पारंपरिक ढोल-नगाड़ा और मांदर के साथ सरहुल शोभायात्रा में शामिल हों। सरहुल के दिन आदिवासी समाज के लोग घर-घर सरना झंडा लगाएं। शोभायात्रा में महिलाएं लाल पाड़ की साड़ी और पुरुष धोती-गंजी का प्रयोग करें। मौके पर संगीता गाड़ी, अनिता उरांव, भानु उरांव, कुईली उरांव, बसंती कुजूर, पार्वती टोप्पो, सीटीओ उरांव, शोभा तिर्की सहित अन्य शामिल हुए।

शहर के विभिन्न क्षेत्रों में नालों की हुई सफाई

रांची। शहर को स्वच्छ और जलजमाव मुक्त बनाने के लिए रांची नगर निगम ने व्यापक सफाई अभियान शुरू किया है। इस अभियान के तहत शहर के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित नालों की सफाई की जा रही है, जिससे बरसात के दौरान जलभराव की समस्या को रोका जा सके। नगर निगम के एक अधिकारी ने बताया कि, हमारा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि रांची में जलभराव की समस्या न हो और नाले पूरी तरह से साफ रहें। नगर निगम की टीमें लगातार सफाई कार्यों में जुटी हुई हैं।

सफाई अभियान के मुख्य बिंदु : नगर निगम की सफाई टीमों ने कई प्रमुख इलाकों में जमे हुए कचरे और गाद को हटाया। मशीनों के साथ-साथ सफाई कर्मियों की मदद से बड़े और छोटे नालों को पूरी तरह साफ किया गया। नगर निगम ने लोगों से भी अपील की है कि वे कचरा और प्लास्टिक नालों में न डालें, जिससे जल निकासी की समस्या न हो।

रांची विश्वविद्यालय कर्मचारी महासंघ ने किया विवि के वीसी का घेराव

संघ ने उच्च शिक्षा विभाग पर राजभवन के आदेश की अवहेलना का लगाया आरोप

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। रांची विश्वविद्यालय कर्मचारी महासंघ ने गुरुवार को भी रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ अजीत कुमार सिन्हा का घेराव कर डॉ अनमोल कुमार लाल के विरुद्ध समुचित कार्रवाई करने का दबाव बनाया। साथ ही उच्च शिक्षा विभाग द्वारा दिए अवधि विस्तार का भारी विरोध किया। संघ के लोगों ने वीसी से कहा कि राजभवन द्वारा 7 मार्च को ही उच्च शिक्षा सचिव को पत्र लिखकर डॉ अनमोल कुमार लाल के अवधि विस्तार को रद्द करते हुए तुरंत विश्वविद्यालय में योगदान का आदेश दिया था, परंतु अभी भी उच्च शिक्षा विभाग द्वारा उन्हें विर्मित नहीं कर काम लिया जा रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है की उच्च शिक्षा सचिव और उच्च शिक्षा निदेशक को विश्वविद्यालय के नियम और परिनियम का ज्ञान ही नहीं है। रांची विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारियों ने एक स्वर से डॉ अनमोल कुमार लाल के विरुद्ध कुलपति से कार्रवाई की मांग की।

झारखण्ड विश्वविद्यालय कर्मचारी महासंघ के अध्यक्ष नवीन चंचल एवं रांची विवि कर्मचारी संघ के महामंत्री अर्जुन राम ने कहा कि विभागीय मंत्री को धोखे में रखकर उच्च शिक्षा निदेशक ने डॉ अनमोल कुमार लाल को गलत तरीके से सेवा विस्तार दिया था। विभागीय प्रधान सचिव के पत्र में कहा गया है की प्रतिनियुक्त उप निदेशक का कार्यकाल किसी भी हाल में तीन वर्ष से ज्यादा का नहीं होगा। फिर किस आधार पर डॉ अनमोल कुमार लाल को अवधि विस्तार दिया गया और उससे अब तक किस नियम परिनियम, राज्यदेश अथवा न्यायदेश के अलोक उनसे काम लिया जा रहा है? विश्वविद्यालय प्रशासन के द्वारा बार-बार मांग की जा रही है कि गणित विभाग में शिक्षको का घोर अभाव है। इसके बावजूद डॉ अनमोल कुमार लाल को वापस नहीं करना, यह घोर मनमानी को दशार्ता है। डॉ अनमोल कुमार लाल अपने आकाओं के बल पर राजभवन के आदेश को भी धत्ता बता रहे हैं। इस कारण से सभी कर्मचारियों ने विश्वविद्यालय के नियमों व अधिकारों की रक्षा के लिए कुलपति से उसके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की मांग की है। इस पर कुलपति ने सभी कर्मचारियों को भरोसा दिलाया है जल्द ही नियम संगत कार्रवाई की जाएगी। विरोध कार्यक्रम में नवीन चंचल, अर्जुन राम, निर्मल उराँव, पप्पु बांडो, संदीप मिंज, हेमंत भगत, सुरेश महली, कर्मवीर उराँव, अजीत बैठा, मुकेश वर्मा, राणा कुमार, बीके. त्रिपाठी, सुधीर सिंह, वीके. टंडन, संतोष मंडल, शंकर थापा, मुन्ना उराँव, कृष्णा गोप, चन्दन मिश्रा आदि थे।

पीला-गुलाबी राशन कार्डधारियों का किया जायेगा ई-केवाइसी

■ पीडीएस दुकानदार कार्डधारी के निवास पर करेंगे ई-केवाईसी

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। राज्य समेत रांची जिला में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम से आच्छादित पीला एवं गुलाबी राशन कार्डधारियों का ई-केवाईसी किया जा रहा है। विभाग द्वारा ई-केवाईसी की अंतिम तिथि 31 मार्च 2025 निर्धारित की गयी है। कार्डधारियों का शत प्रतिशत ई-केवाईसी ससमय पूर्ण कराने के लिए अब 'ई-केवाईसी सप्ताह' का आयोजन किया जायेगा। रांची जिला में दिनांक 21 मार्च से दिनांक 27 मार्च तक 'ई-केवाईसी सप्ताह' का आयोजन किया जाना है।

जनवितरण प्रणाली दुकानदार घर आकर करेंगे ई-केवाईसी

'ई-केवाईसी सप्ताह' के दौरान (21-27 मार्च तक) जनवितरण प्रणाली दुकानदार कार्डधारी के निवास स्थान जाकर ी-ङउ का कार्य संपन्न करेंगे। इस संबंध में सभी पणन पदाधिकारी/ प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी को अपने क्षेत्र अंतर्गत राशन कार्डधारियों की सूची संबंधित जनवितरण प्रणाली दुकानदार को 20 मार्च 2025 तक उपलब्ध कराने का निदेश दिया गया है। ई-केवाईसी के दौरान पीडीएस दुकानदार कार्डधारी का मोबाइल नंबर वेरीफाई या नहीं होने पर अंकित भी करेंगे। पीडीएस दुकानदार द्वारा आधार सीड नहीं होने पर सीडिंग का कार्य भी संपन्न कराया जायेगा। प्रत्येक दिन ई-केवाईसी से संबंधित सूची डीलर द्वारा संबंधित पणन पदाधिकारी/ प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी को उपलब्ध करायी जायेगी।

राशन कार्डधारी अपना ई-केवाईसी अवश्य करायें : उपायुक्त मंजूनाथ भजन्त्री ने जिला के सभी पीला एवं गुलाबी राशन कार्डधारियों से ई-केवाईसी अवश्य कराने की अपील की है। साथ ही उनके द्वारा सभी संबंधित पदाधिकारियों को विभागीय निर्देश का अक्षरशः पालन सुनिश्चित करने का निदेश भी दिया गया है।

स्कूल में बच्चों को न क्वेश्चन मिला, न ही उत्तर पुस्तिका

पुरानी कॉपी से पन्ने फाड़कर परीक्षा दे रहे हैं राज्य के साढ़े 30 लाख बच्चे

मामला राज्य के सरकारी स्कूलों में वर्ग 3 से 7वीं की वार्षिक परीक्षा का

सुधीर

रांची। राज्य के सरकारी स्कूलों में वर्ग 3 से 7वीं तक की परीक्षा शुरू हो गयी है। परीक्षा में राज्य के साढ़े 30 लाख बच्चे शामिल हो रहे हैं। परंतु इनके लिए सरकार के स्तर पर कोई व्यवस्था नहीं की गयी है। परीक्षा में लाखों बच्चे पुरानी कॉपी से पन्ने फाड़कर परीक्षा दे रहे हैं। कुछ सक्षम बच्चे नयी कॉपी खरीद परीक्षा दे रहे हैं तो कई बच्चे ऐसे भी हैं, जिनके पास न तो नयी कॉपी खरीदने के पैसे हैं और न ही उनके पास पुरानी कॉपी। ऐसे में वह खाली हाथ स्कूल परीक्षा देने पहुंच रहे हैं। स्कूल के हेडमास्टर अपने पॉकेट से जिस्तावाला कागज खरीदकर उन्हें परीक्षा देने के लिए उपलब्ध करा रहे हैं।

गुरुजी ऐप पर क्वेश्चन भेज झाड़ा पल्ला : बताते चलें कि 17 मार्च से राज्य के हजारों सरकारी स्कूलों में वर्ग तीन से लेकर वर्ग सात तक की वार्षिक परीक्षा शुरू हुई है परंतु इस बार विभाग द्वारा प्रश्न पत्र व उत्तर पुस्तिका उपलब्ध नहीं करायी गयी है। गुरुजी ऐप में प्रश्न पत्र का लिंक भेज दिया गया है। गुरुजी ऐप से प्रश्न पत्र डाउनलोड कर उसे शिक्षक ब्लैक बोर्ड पर लिख रहे हैं। इसके बाद ब्लैक बोर्ड में लिखे गये प्रश्नों को छात्र कॉपी में उतार कर उसका जवाब लिख रहे हैं। छात्रों को सबसे अधिक परेशानी उत्तर पुस्तिका नहीं मिलने से हुई है। वह घर से ही पुरानी कॉपी से पन्ना फाड़कर लाये और उसे कॉपी में उतारा। कुछ विद्यालय के शिक्षकों ने अपने निजी पैसे से बच्चों को उत्तर लिखने के लिए पेज मुहैया कराया है।

इस वर्ष से बंद कर दिया गया क्वेश्चन और पेपर देना : एक शिक्षक ने बताया कि झारखंड शिक्षा परियोजना और जेसीआरटी की ओर से विभिन्न प्रकार के उल जलूल कार्यक्रमों में एनजीओ आदि पर साल भर पानी की तरह पैसा बहाया जाता है। बात जब बच्चों की आती है तो पैसे की कमी बताते हुए परीक्षा के लिए प्रश्न पत्र और उत्तर पुस्तिका उपलब्ध कराने से हाथ खड़े कर देते हैं।

मालूम हो कि झारखंड शिक्षा परियोजना द्वारा अब तक प्रत्येक वर्ष अर्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षा के लिए प्रश्न पत्र और उत्तर पुस्तिका उपलब्ध कराया जाता रहा है। बीते साल भी प्रश्न पत्र और उत्तर पुस्तिका उपलब्ध कराया गया था। परंतु वर्ष 2024-25 से इसे बंद कर दिया गया है।

क्या कहते हैं शिक्षक और संगठन के अधिकारी : सरकारी स्कूलों के बच्चों की वार्षिक परीक्षा का मूल्यांकन जिस तरह से कराया जा रहा है वह कहीं से उचित नहीं लगता? बच्चों पर साल भर मेहनत करने के बाद परीक्षा पैटर्न पर काफी असंतोष है। झारखंड के नौनिहालों के भविष्य के साथ इस तरह अधिकारी सिर्फ खिलवाड़ करते हैं। यह कहीं से न्यायोचित नहीं है।

> बच्चों का असेस्मेंट किया जा रहा है। गुरुजी ऐप पर क्वेश्चन भी भेज दिये गये हैं। कॉपी देने के लिए स्कूलों को कहा गया था। सरकार ने इसी तरह परीक्षा लेने का निर्णय लिया है।
>
> **निदेशक जेईपीसी और जेसीईआरटी झारखंड**

पंचायती राज और पेसा कानून का संरक्षण इस यात्रा का उद्देश्य : केशव महतो कमलेश

राजीव गांधी पंचायती राज संगठन के तत्वाधान में चार दिवसीय स्वराज पदयात्रा की हुई शुरूआत

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। पंचायती राज और पेसा कानून का संरक्षण इस यात्रा का उद्देश्य है। ये बातें राजीव गांधी पंचायती राज संगठन के तत्वावधान में आयोजित चार दिवसीय स्वराज पदयात्रा को संबोधित करते हुए झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने कहीं। बुधवार को स्वराज पदयात्रा का शुरूआत धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की जन्मस्थली उलिहातु खूंटी से हुई। इस मौके पर उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा के जन्मस्थल पर बिरसा मुंडा के प्रतिमा पर माल्यार्पण कर पूजा पाठ की और बिरसा मुंडा के वंशजों सुखराम मुंडा करन पाहन जेठा मुंडा और मुखिया अमर मुंडु वरदान मुंडा ग्राम प्रधान नेल्सन पुर्ती से मुलाकात कर स्वराज पदयात्रा की शुरूआत की। इस पदयात्रा में मुख्य रूप बन्धु तिर्की, रविंद्र सिंह, सतीश पौल मुजनी, गजेंद्र सिंह, राकेश किरण महतो,शांतनु मिश्रा, पंचायती राज संगठन के संयोजक सुमित शर्मा,रवि मिश्रा, रामकृष्ण चौधरी, विल्सन, अंजनी रंजन नरेश तिर्की, सुभाष नाग, भारत जोड़ो यात्री अनामिका सरकार, अनुप्रिया सोय, लक्ष्मण हांसदा, आनन्द सिंकू शामिल हुए।

इस स्वराज पदयात्रा कार्यक्रम की अध्यक्षता राजीव गांधी पंचायती राज संगठन के प्रदेश संयोजक सुमित शर्मा ने की।

पदयात्रा में बन्धु तिर्की ने कहा कि रघुवर सरकार के प्रावधान जिसमें 9 फरवरी 2013 के बाद जिस व्यक्ति के तीन बच्चे हो उन्हें चुनाव लड़ने से रोकना यह प्रतिनिधित्व के अधिकार का हनन है। पंचायती राज संगठन इस बात का विरोध करती है कि किसी भी व्यक्ति को उनके बच्चों के आधार पर या उसके उम्र सीमा के आधार पर चुनाव लड़ने से रोकना गलत है। इस यात्रा के माध्यम से उपरोक्त मुख्य बिंदुओं पर जनता को जागरूक करेंगे।

केंद्रीय सरना स्थल सिरमटोली को बचाने को ले 22 को रांची बंद सह चक्का जाम

- रांची के व्यापारिक संस्थानों समेत कई यूनियन व संगठनों से की जा रही समर्थन की अपील

खबर मन्त्र संवाददाता

पंडरा में बंद की अपील करते मोर्चा के लोग

रांची। आदिवासी संगठनों का 22 मार्च को रांची बंद सह चक्का जाम का कार्यक्रम है। केन्द्रीय सरना स्थल सिरोम टोली बचाव मोर्चा रांची की ओर से सभी व्यापारिक संस्थानों, परिवहन संघ, फेडरेशन चैंबर ऑफ कामर्स तथा रांची चैंबर ऑफ कामर्स सहित अन्य संस्थानों से बंद में समर्थन की अपील की है। मोर्चा ने अपने अपील में कहा है कि केन्द्रीय सरना स्थल सिरमटोली को बचाने एवं सरना स्थल के मुख्य द्वार पर स्थित फ्लाई ओवर के रैम्प को हटाने को लेकर विगत दो महीने से आदिवासी समाज निरंतर आंदोलन कर रहे हैं। सरना स्थल पर सरकारी अतिक्रमण होने से आदिवासी सरना समाज की धार्मिक भावना को ठेस पहुंच रही है। इसके साथ फ्लाईओवर रैम्प बनने से सरहुल शोभायात्रा पर व्यवधान उत्पन्न होने का खतरा मंडरा रहा है। जिससे आनेवाले समय में धीरे-धीरे सरहुल शोभायात्रा समाप्त होने के कगार पर होगी। सरहुल शोभायात्रा में हजारों लाखों की संख्या में आदिवासी मूलवासी श्रद्धापूर्वक सिरमटोली सरना स्थल पर पूजा करने आते हैं। इसलिए सभी से आग्रह है कि सरहुल महोत्सव सह शोभायात्रा एवं केन्द्रीय सरना स्थल की गरिमा को बनाये रखने को लेकर आदिवासी समाज के इस आंदोलन का समर्थन करने की कृपा करें।

सभी संगठनों से बंद में सहयोग की अपील

पंडरा बाजार समिति प्रांगण स्थित मुख्य प्रांगण खाद्यान्न मंडी और टर्मिनल आलू-प्याज मंडी, मालवाहक टेंपो और मिनी ट्रक एसोसिएशन, रांची बस मोटर एसोसिएशन, फेडरेशन चैंबर ऑफ कामर्स, रांची चैंबर ऑफ कामर्स, बहु बाजार दुकान संघ, अंजुमन इस्लामिया मेन रोड, जीईएल चर्च शॉप एसोसिएशन रांची, रोस्पा टावर दुकानदार संघ, ऑटो रिक्शा चालक संघ, बस चालक संचालन संघ, ड्राईवर यूनियन ऑटो चालक संघ, पिंक ऑटो संघ, मेन रोड दुकानदार सहयोग समित एवं रांची के कई दुकानदार संघ से 22 मार्च, दिन शनिवार के संपूर्ण रांची बंद के लिए समर्थन की मांग की गयी।

श्री सनातन महापंचायत प्रतिनिधिमंडल ने रघुवर दास से मिल मुख्य संरक्षक बनने का किया आग्रह

रांची। श्री सनातन महापंचायत ने रघुवर दास से मुख्य संरक्षक बनने का आग्रह किया है। इस आग्रह को उनकी सहमति मिली है। प्रतिनिधिमंडल में ललित नारायण ओझा, संजय कुमार जायसवाल, संजय मिनोचा, नवीन झा, सत्यजीत सिंह, अमिताभ धीरज, रणधीर रजक, प्रशांत शाहदेव, नीतू सिंह, प्रवीण कुमार शामिल थे। श्री ओझा ने बताया कि श्री सनातन महापंचायत के सदस्य सभी अखाड़ाधारी से मिलेंगे। उन्होंने गिरिडीह की घटना पर भी दुख व्यक्त किया और निष्पक्ष जांच कर निर्दोषों को रिहा करने की बात कही।

श्रीधर डांडीन बने एसबीयू के रजिस्ट्रार

रांची। श्रीधर बी डांडीन को सरला बिरला विश्वविद्यालय का रजिस्ट्रार नियुक्त किया गया है। उन्होंने आज विवि के एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लॉक स्थित कुलसचिव कार्यालय में अपना पदभार संभाला। इस दौरान विवि के अधिकारी और शिक्षकगण उपस्थित रहे। श्रीधर डांडीन ने बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर्नाटक विश्वविद्यालय से की है। बाद में बिट्स पिलानी से सॉफ्टवेयर सिस्टम में उन्होंने मास्टर्स किया। अध्यापन और प्रशासनिक क्षेत्र में ढाई दशकों से भी अधिक का उनका लंबा अनुभव रहा है। वर्ष 2020 में उन्होंने एसबीयू में इंजीनियरिंग एंड एप्लाइड साइंस के डीन के तौर पर पदभार संभाला। पिछले साल कुछ समय तक वे विवि में बतौर कुलपति (प्रभार) भी रहे। वर्तमान में अध्यापन के अलावा फ्रांस के इंरिआ लैब्स के सहयोग से वे रिसर्च कार्य में भी संलग्न हैं। डांडीन की नियुक्ति पर एसबीयू के प्रतिकुलाधिपति बिजय कुमार दलान, महानिदेशक प्रो. गोपाल पाठक, राज्यसभा सांसद डॉ. प्रदीप कुमार वर्मा एवं कुलपति प्रो. सी जगन्नाथन ने उन्हें शुभकामनाएं दी और बधाई संदेश प्रेषित किया है।

परिसीमन के विरोध का मतलब बाबा साहेब अंबेडकर के संविधान का विरोध

- मंत्री पहले इस्तीफा दें फिर करें परिसीमन का विरोध : राजेन्द्र प्रसाद

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। मूलवासी सदान मोर्चा के केंद्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद ने परिसीमन को लेकर सरकार के कुछ मंत्रियों द्वारा विधानसभा में दिये गये बयान पर कड़ी प्रतिक्रिया दी है। कहा है कि सत्ता पक्ष के मंत्री और नेता बाबा डॉ भीमराव अंबेडकर के बनाए गए संविधान की दुहाई देते नहीं थकते हैं। लेकिन जब उनके पक्ष में निर्णय नहीं हो तो फिर विरोध में खड़े हो जाते हैं। चाहे बाबा डॉ भीमराव द्वारा बनाए गए संविधान ही बात क्यों ना हो। परिसीमन का विरोध करने का मतलब है कि संविधान का विरोध करना। ऐसे में पहले मंत्री इस्तीफा दें, फिर करें परिसीमन का विरोध।

श्री प्रसाद ने कहा कि परिसीमन कराना एक संवैधानिक प्रक्रिया है। राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि 2008 में परिसीमन नहीं कराना यह तुष्टीकरण और संविधान के खिलाफ था। राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि मूलवासी सदानों के अधिकारों को झारखण्ड में चारों तरफ से छीना जा रहा है लेकिन सत्ता पक्ष और विपक्ष सदानों पर होने वाले अन्याय को लेकर चुप है। प्रसाद ने कहा कि 2026 में हर हाल में केंद्र सरकार से परिसीमन कराने की मांग की है। उन्होंने कहा कि झारखंड में लोकसभा का क्षेत्र भी बहुत लंबा चौड़ा है। इसमें भी सुधार करने की जरूरत है। राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि झारखंड में परिसीमन के बाद लोकसभा की सीट को 14 से बढ़ाकर 28 करना चाहिए और विधानसभा की सीट को 81 से बढ़ाकर 160 करने की जरूरत है। उन्होंने झारखंड में विधानसभा की सीट को बढ़ाते हुए विधान परिषद का गठन करने की मांग की है। इससे वैसे क्षेत्र के लोगों को भी विधान परिषद में प्रतिनिधित्व करने का मौका मिलेगा जो आरक्षित सीटों के कारण विधानसभा और लोकसभा में कभी प्रतिनिधित्व नहीं कर पा रहे हैं।

शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती महाराज की चरण पादुका का पूजन, आज अभिनंदन

- आज मारवाड़ी भवन में शंकराचार्य जी का नागरिक अभिनंदन, धर्म सभा एवं प्रवचन

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती महाराज की चरण पादुका (खड़ाऊ) का बुधवार को पूजन किया गया। महाराजा अग्रसेन भवन के सभागार में प्रातः 10 बजे द्वारिका शारदा पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी सदानंद सरस्वती महाराज को शंकराचार्य अभिनंदन समारोह समिति के मुख्य संयोजक विनय सरावगी, संयोजक मंडली सदस्यों, धर्मावलंबियों द्वारा शंकराचार्य को माला पहनाकर एवं अंग वस्त्र ओढ़ाकर अभिनंदन किया गया। चरण पादुका खड़ाऊ का पूजन मुख्य यजमान मनोज चौधरी सपत्नीक व परिवार द्वारा पूरे विधि- विधान से किया। शंकराचार्य ने सभी उपस्थित धर्म प्रेमियों को आशीर्वचन एवं प्रसाद दिया। समिति के मुख्य संयोजक विनय सरावगी एवं प्रवक्ता संजय सर्राफ ने बताया कि आज 3 बजे से शंकराचार्य महाराज का हरमू रोड स्थित मारवाड़ी भवन में रांची नगर के प्रमुख धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं के द्वारा नागरिक अभिनंदन किया जाएगा एवं शंकराचार्य धर्म सभा को संबोधित करेंगे।

नामकुम की घटना को लेकर राजद ने बनायी विशेष कमेटी

रांची। पिछले दिनों नामकुम थाना क्षेत्र अंतर्गत होली के दिन हुई घटना को लेकर प्रदेश राजद ने एक विशेष कमेटी का गठन किया है। जो वहां जाकर घटना की जानकारी प्राप्त कर जांच रिपोर्ट प्रदेश कमेटी को सौंपेगी। राजद प्रदेश के अध्यक्ष संजय प्रसाद यादव ने उक्त विशेष कमेटी का गठन किया है। कमेटी में प्रदेश महासचिव आबिद अली, प्रदेश महासचिव प्रणव कुमार बबलू, प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य मनोज कुमार अग्रवाल और रांची जिला अध्यक्ष धर्मेंद्र महतो शामिल हैं। संयोजक श्री अली को बनाया गया है। मालूम हो कि उक्त घटना में एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई थी।

केन्द्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव के पिताजी के निधन पर सांसद चन्द्रप्रकाश चौधरी पहुंचे हरियाणा

रांची। आजसू नेता गिरिडीह सांसद चन्द्रप्रकाश चौधरी ने केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव के पैतृक गांव जमालपुर, गुरुग्राम हरियाणा स्थित निवास पहुंचकर उनके पिताजी स्व. कदम सिंह के निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके साथ कहा कि प्रभु श्री राम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को श्री चरणों में स्थान एवं शोकाकुल परिवारजनों को यह अथाह दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

हाईकोर्ट के जस्टिस नवनीत कुमार हुए सेवानिवृत्त

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। झारखंड हाईकोर्ट के जस्टिस नवनीत कुमार बुधवार को सेवानिवृत्त हो गए। बुधवार को उन्होंने अंतिम कोर्ट किया। हाईकोर्ट के जजों की पूर्णपीठ और एडवोकेट एसोसिएशन ने उन्हें विदाई दी। हाईकोर्ट परिसर में उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया गया। जस्टिस नवनीत कुमार 8 अक्तूबर 2021 में झारखंड हाईकोर्ट के जज बने थे। हाईकोर्ट के जज के रूप में पदोन्नति होने तक वह रांची के न्यायायुक्त थे। वह मूलतः बिहार के भोजपुर जिला निवासी हैं। उनका जन्म 20 मार्च 1963 को हुआ। उन्होंने सेंट जोंस हाई स्कूल रांची से मैट्रिक की पढ़ाई पूरी की। उन्होंने सेंट जेवियर्स कॉलेज, रांची से भौतिकी में इंटरमीडिएट और स्नातक की पढ़ाई की। उन्होंने 1987 में दिल्ली विश्वविद्यालय के कैंपस लॉ सेंटर से एलएलबी की पढ़ाई पूरी की। दिल्ली विवि से कानून में स्नातकोत्तर भी किया। उन्होंने दिल्ली हाईकोर्ट में अपनी प्रैक्टिस शुरू की और फिर 1990 में पटना हाईकोर्ट में अपने प्रैक्टिस शुरू की और लगभग 10 वर्षों तक इसे जारी रखा। वह 22 दिसंबर 2001 को झारखंड राज्य में उच्च न्यायिक सेवा में आये थे। लगभग 23 साल से न्यायिक सेवा से जुड़े रहे। 8 अक्तूबर 2021 में झारखंड हाईकोर्ट के जज बने थे।

श्री राम कथा के तीसरे दिन श्री राम जन्मोत्सव का अद्भुत चित्रण

- भगवान श्री राम का जन्म एक युग परिवर्तन का प्रतीक : संगीता किशोरी

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। हुटुप गौशाला धाम में चल रहे नौ दिवसीय श्री राम कथा ज्ञान यज्ञ के तीसरे दिन बुधवार को सुप्रसिद्ध कथा वाचिका संगीता किशोरी ने श्री राम जन्मोत्सव के अवसर पर एक अत्यंत मार्मिक एवं सुंदर कथा का चित्रण किया। उनकी कथा ने सभी श्रद्धालुओं के हृदय को गहरे तक छुआ और श्री राम के जन्म की महिमा का अद्भुत रूप से वर्णन किया। कथा की शुरूआत में संगीता किशोरी जी ने श्री राम के जन्म से जुड़ी पवित्रता और महत्व को स्पष्ट किया। उन्होंने बताया कि भगवान श्री राम का जन्म एक युग परिवर्तन का प्रतीक है। रघुकुल नायक श्री राम का जन्म न केवल अयोध्या बल्कि सम्पूर्ण धरती के लिए सुख, शांति और धर्म की स्थापना के लिए हुआ था। उनका जन्म त्रेतायुग में हुआ जब असुरों के अत्याचार और अधर्म ने समाज को तहस-नहस कर दिया था। श्री राम के जन्म ने न केवल धर्म की विजय का मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि मानवता के उच्चतम आदर्शों को भी प्रस्तुत किया। कथा के दौरान उन्होंने श्री राम के जन्म के साथ जुड़े अनेक महत्वपूर्ण प्रसंगों का सुंदर चित्रण किया। उन्होंने माता कौशल्या के गर्भ से श्री राम के जन्म की कथा सुनाते हुए बताया कि भगवान राम का जन्म एक विशेष दिन और समय में हुआ, जो अनन्त ब्रह्म के विधान के अनुसार था। उनके जन्म के समय आकाश में दिव्य आभा फैल गई थी, और सभी दिशाओं से पुण्य की गंध फैलने लगी थी। श्री राम के जन्म की महिमा और उनके जीवन के उद्देश्यों को बताया कि राम का जन्म केवल एक राजकुमार के रूप में नहीं हुआ, बल्कि वे सम्पूर्ण मानवता के लिए आदर्श हैं। उनके जीवन की प्रत्येक घटना हमें धर्म, सत्य, न्याय, प्रेम और सदाचार का पाठ पढ़ाती है। कार्यक्रम के मीडिया प्रभारी संजय सर्राफ ने बताया कि इस अवसर पर झारखंड गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष राजीव रंजन, कार्यक्रम के संयोजक वासुदेव भाला एवं मुकेश काबरा, पवन मंत्री, राजकुमार मारू, अरुण बुधिया, गौरव काबरा, निरंजन शर्मा, अमित चौधरी, नरेंद्र लखोटिया, रोहित शारदा, रवि नारसरिया, उदय शर्मा, अशोक सोढ़ानी, राकेश भाला, निकिता भाला, सुनीता देवी, चंदा देवी, सीमा देवी, के अलावे गांवों के सैकड़ो के संख्या मे पुरुष, महिलाएं उपस्थित थीं।

एससी-एसटी की सीटें किसी भी कीमत पर कम न हों : नायक

रांची। एससी-एसटी की सीटें किसी भी कीमत पर कम न हो बल्कि झारखण्ड में विधान सभा की सीटें 81 से बढ़ाकर 160 करनी चाहिए ताकि विधान परिषद का भी गठन हो सके। ये बातें बुधवार को प्रेस बयान जारी कर आदिवासी मूलवासी जनाधिकार मंच के केंद्रीय उपाध्यक्ष विजय शंकर नायक ने कही। वे सदन में हुए परिसीमन से विधायकों द्वारा एसटी सीटों के घटने पर चिंता व्यक्त किये जाने पर अपनी प्रतिक्रिया में कही।

एसएसपी से मिलेगा आज कायस्थ महासभा का डेलिगेशन

रांची। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा, झारखंड प्रदेश का प्रतिनिधि मंडल गुरुवार को एसएसपी चंदन सिन्हा से मिलकर एक ज्ञापन सौंपेगा। यह जानकारी अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के राष्ट्रीय संयुक्त सचिव सह सदस्यता प्रभारी डॉ एके लाल ने दी। उन्होंने बताया कि इसके लिए अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के तमाम पदाधिकारियों से आग्रह है कि वह गुरुवार की सुबह 8 बजे एसएसपी आवास पहुंचें। उन्होंने बताया कि ज्ञापन में रिंकू वर्मा के साथ पुलिस द्वारा किए गए दुर्व्यवहार की शिकायत दर्ज करायी जायेगी।

फैशन पॉइंट का विवाह समर फेस्टिव कलेक्शन 22-23 मार्च को

- होटल कैपिटल हिल में लगेगी देश भर के डिजाइनरों की प्रदर्शनी

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। रांची के फैशन प्रेमियों के लिए एक शानदार अवसर! फैशन पॉइंट आपके लिए लेकर आ रहा है 'विवाह वाइब्स- द वेडिंग एडिट' और समर फेस्टिव कलेक्शन, जहां आपको शादी और गर्मी के त्योहारी मौसम के लिए बेहतरीन कलेक्शन देखने को मिलेगा। यह प्रदर्शनी भारत के प्रसिद्ध डिजाइनर्स और ब्रांड्स को एक मंच पर लाकर आपको वेडिंग और एथनिक फैशन की नवीनतम ट्रेंड्स से रूबरू कराएगी।

प्रदर्शनी की मुख्य विशेषताएं : देशभर के टॉप डिजाइनर्स के प्रसिद्ध डिजाइनर अभी सिंह, डिजाइनर टीनी कोमल और अन्य प्रतिष्ठित एथनिक व इंडो-वेस्टर्न डिजाइनर्स। वहीं वेडिंग और फेस्टिव कलेक्शन में हैंडक्राफ़्टेड लहंगे, ब्राइडल कलेक्शन, पार्टी वियर गाउन और इंडो-वेस्टर्न आउटफिट्स और समर कलेक्शन में हल्के और स्टाइलिश एथनिक वियर, चिकनकारी, माहेश्वरी सिल्क और समर फ्रेंडली अपेरल्स की विशेष रेंज उपलब्ध होगी। टीनी कोमल, शोभिनी बाई टीनी की संस्थापक, अपनी अनोखी डिजाइनों के साथ इस प्रदर्शनी में शामिल होंगी।

फैशन पॉइंट पिछले 15 वर्षों से शानदार फैशन प्रदर्शनियों का आयोजन कर रहा है और यह हमारा 75वां संस्करण होगा। यह एक प्रतिष्ठित मंच है, जो हर सीजन में ट्रेंडिंग फैशन और बेहतरीन कलेक्शंस को आपके लिए लेकर आता है।

काफिरों के विरुद्ध अघोषित युद्ध की एक कड़ी है नागपुर की घटना : रंगनाथ महतो

- औरंगजेब की कब्र के स्थान पर बने पूज्य धनाजी जाधव, संता जी घोरपड़े और छत्रपति राजाराम महाराज जी का स्मारक

खबर मन्त्र ब्यूरो

रांची। बजरंग दल झारखंड प्रांत के प्रांत संयोजक रंगनाथ महतो ने कहा कि काफिरों के विरुद्ध अघोषित युद्ध की एक कड़ी है नागपुर की घटना। महाराष्ट्र महल, नागपुर में जेहादी मुस्लिम उपद्रवियों द्वारा सुनियोजित तरीके से हिन्दुओं की दुकानों, बजरंग दल कार्यकर्ताओं के घरों, महिलाओं, कारों, ट्रकों तथा अन्य संपतियों को चुन-चुन कर आग के हवाले करने तथा कर्तव्यनिष्ठ पुलिसकर्मियों को टारगेट कर उनपर जानलेवा हमला करने की घटना को लेकर एक प्रेस बयान जारी कर कहा है कि यह घटना काफिरों (गैर हिन्दुओं) के विरुद्ध जेहादी औरंगजेब के हितैषी दंगाइयों द्वारा किया गया एक प्रकार का अघोषित युद्ध की एक कड़ी है। इसे इस देश के सौ करोड़ सनातनी हिन्दू समाज महज एक घटना समझने की भूल न करे। जिस प्रकार जेहादी दंगाइयों ने सरेआम घातक हरवे हथियार - तलवार, भाला, कुल्हाड़ी, गड़ासा, डंडे में कंटीली तार लपेटे, पेट्रोल बम आदि से लैस होकर सुनियोजित तरीके से बहुसंख्यक राष्ट्रवादी हिन्दू समाज पर जो हमला किया है बहुत ही दुःखद है। यदि समय रहते हिन्दू समाज तथा राज्य व केंद्र की सरकारें नहीं जागी और ऐसे राष्ट्रद्रोही जेहादी दंगाइयों पर नकेल नहीं कसी तो स्थिति भयावह होगी। इस विषय पर सम्पूर्ण हिन्दू संगठन, सभी धार्मिक, आध्यात्मिक राष्ट्रवादी संगठनों को सचेत होकर सकल हिन्दू समाज को साथ लेकर ऐसे राष्ट्रद्रोहियों को कुचलने की पूर्ण योजना बनाने की आवश्यकता पर बल दिया तथा कहा है कि बजरंग दल इस विषय पर शीघ्र ही देशभर में हिन्दू नवयुवकों को प्रशिक्षण देने का कार्य करेगा।

यादव समाज ने मंत्री संजय यादव से मिलकर नामकुम खटाल घटना को लेकर की वार्ता

- पुलिस की एकतरफा कारवाई से यादव समाज में रोष, मंत्री से निष्पक्ष जांच कराने की मांग, मंत्री ने रांची एसएसपी से बात की

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। राजद एवं यादव समाज का एक प्रतिनिधिमंडल झारखंड सरकार के श्रम मंत्री संजय प्रसाद यादव से विधानसभा मंत्री चैंबर में मुलाकात कर विगत दिनों नामकुम खटाल में जोरार बस्ती के लोगों से हुई दुर्भाग्यपूर्ण मारपीट की घटना को लेकर बातचीत की।

वार्ता के दौरान राजद और यादव समाज की ओर से कैलाश यादव, अनीता यादव, बबन यादव, रंजन यादव, मदन यादव, श्यामदास सिंह यादव, अभय सिंह, डॉ मनोज कुमार सहित अन्य लोग मौजूद थे। वार्ता के दौरान मंत्री संजय प्रसाद यादव को बताया गया कि नामकुम थाना प्रभारी मनोज कुमार और डीएसपी अमर पांडेय पुलिस टीम के साथ खटाल परिवार के निर्दोष लोगों को परेशान करने के दृष्टिकोण से अपराधी की तरह धर-पकड़ कर एवं धमकी के साथ दहशत फैलाने का काम कर रहे हैं।

विदित हो कि होलिका दहन के दिन जोरार बस्ती के आदिवासी समाज के लगभग 300 लोग नामकुम खटाल में घुसकर खटाल परिवार से मारपीट करने लगे और पथराव करने लगे जिस दौरान करीब दर्जनों यादव परिवार के लोगों का सिर फट गया और गंभीर चोट लगी। उसमें जोरार बस्ती से आए सोनू मुंडा नामक एक लड़का धक्का मुक्की के दौरान वहां गिर गया जिसे चोट आई और इलाज के दौरान रिम्स अस्पताल में मौत होने की दुखद खबर मिली। सभी लोगों ने इस घटना पर दुख प्रकट कर संवेदना व्यक्त की। मंत्री ने दूरभाष पर रांची एसएसपी चंदन सिन्हा से बात की और मामले में निष्पक्ष कार्रवाई करने के लिए निर्देशित किया।

श्रीराम कथा ज्ञान महायज्ञ के कलशयात्रा में शामिल हुईं 800 महिलाएं

- पुज्य संत श्री छोटे बापूजी जी महाराज ने की राम कथा प्रसंग का वाचन

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। श्री राम कथा ज्ञान महायज्ञ के आयोजन पर बुधवार को विशाल कलशयात्रा निकाली गयी। जिसमें 800 महिलाएं शामिल हुईं। कलश यात्रा ज्ञान गंगा स्थल रविस्टिल से शुरू होकर कमड़े आश्रम पहुंची, जहां कलश में गंगाजल भरकर वापस यज्ञ स्थल लौटे। इस यात्रा में महिलाएं राम नाम की जाप करती रहीं। जय श्री राम नाम की गूंज भी था। कथा स्थल पहुंचने पर सभी कलशों को यज्ञशाला के सामने सजाकर रखा गया। यह कलश 9 दिनों तक कथा स्थल पर रहेंगे। यात्रा के बाद सभी महिलाएं शीतल शर्बत और पानी ग्रहण की। आज से भक्तगण कर सकेंगे यज्ञशाला की फेरी : गुरुवार से ज्ञान गंगा कथा स्थल में भक्तगण यज्ञशाला की परिक्रमा कर सकेंगे। पवित्र स्थल में श्रद्धालुयों की फेरी की व्यवस्था की गई है।

कमड़े आश्रम का पावन जल डालकर निकाली गई कलश यात्रा : इस कलश यात्रा को आकर्षक बनाया गया। संत छोटे बापू जी महाराज ने रथ पर सवार होकर यात्रा में निकले। कमड़े मन्दिर का पवित्र जल को लेकर 800 महिलाओं लौटे। यात्रा के दौरान विभिन्न वाद्ययंत्रों और बैंड बाजे-गाजे की व्यवस्था की गई थी। जो आकर्षण का केन्द्र बना रहा।

नौ दिन पूज्य श्री छोटे बापूजी सुनाएंगे श्रीराम कथा : श्रीराम कथा का आयोजन प्रारंभ हो गया है, जो 27 मार्च तक चेगा। कथा वाचक पुज्य संत श्री छोटे बापूजी महाराज संध्या 5 बजे से व्यासपीठ पर विराजमान होकर राम कथा सुनाएंगे। कथा का आयोजन प्रतिदिन संध्या 5 बजे से रात 8 बजे तक होगा। कथा स्थल पर विशाल पंडाल तैयार किया गया है, जिसमें 5000 से अधिक श्रद्धालु कथा सुन सकेंगे। आयोजन के दौरान सुरक्षा के लिए 100 कार्यकर्ता, इसके अलावा पंडाल में दो एलईडी स्क्रीन और परिसर में अन्य एलईडी साउंड सिस्टम की व्यवस्था की गई है, ताकि सभी श्रद्धालु कथा का आनंद ले सकें। श्री राम कथा का आनंद लेने के लिए मुख्य अतिथि के रूप में भीम प्रसाद साहू और समाजसेवी सुबोध सिंह ऊर्फ गुड्डू जी उपस्थित थे।

बेड़ो में आठ दिनों से पेयजल आपूर्ति ठप, लोग परेशान

खबर मन्त्र संवाददाता

बेड़ो। बेड़ो प्रखंड मुख्यालय स्थित पीएचईडी के मोटर में खराबी आने के कारण पिछले आठ दिनों से पेयजल सप्लाई ठप हो गई है। इससे बेड़ो के उपभोक्ताओं के सामने पीने के पानी की भीषण समस्या उत्पन्न हो गई है। लोग पानी के लिए त्राहिमाम कर रहे हैं। वहीं बड़े बड़े वायदे करने वाले जिम्मेदारों को भी इसकी कोई चिंता नहीं है। जिससे बेड़ो के लोगों को पेयजल को लेकर भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। ज्ञात हो कि बेड़ो पानी टंकी को पेयजल आपूर्ति करने वाला मोटर वन विभाग के समीप लगा हुआ है। उसमें आये दिन अज्ञात लोगों द्वारा छेड़छाड़ किया जाता है। इसी कारण से यह खराब होते रहता है। इधर विभाग के बड़ा बाबू निर्मल एक्का ने कहा है कि मोटर बनाने के लिए भेजा गया है। शीघ्र ही मोटर रिपेयर कराकर पेयजल सप्लाई बहाल कर दी जाएगी।

बिल जमा नहीं करना भी है एक कारण

बेड़ो पीएचडी का निर्माण लगभग 45 वर्ष पूर्व हुआ था। शुरू में बहुत कम घरों में कनेक्शन था, और अभी सैंकड़ों घरों को कनेक्शन दे दिया गया है। लेकिन बहुत से लोग अभी भी पैसा नहीं देते हैं। जबकि बिल लेने के लिए एक समिति का भी गठन किया गया है। समय पर बिल जमा नहीं होने के कारण प्लांट में खराबी होने पर निर्माण कराने में आर्थिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। साथ ही ऑपरेटर बुधवा उरांव को पिछले छह साल से वेतन नहीं मिल पाया है।

एसडीएम ने तमाड़ सीएचसी का औचक निरीक्षण किया

तमाड़। बुंडू एसडीएम किस्टो कुमार बेसरा ने बुधवार को तमाड़ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का औचक निरीक्षण किया। उनके साथ कार्यपालक पदाधिकारी अंजली मेहता और प्रखंड विकास पदाधिकारी सावित्री कुमारी भी मौजूद रहीं। इस दौरान एसडीएम ने अस्पताल के विभिन्न पहलुओं की बारीकी से जांच की, जिसमें मरीजों की सुविधाएं, दवाओं का स्टॉक और रजिस्टर की स्थिति शामिल रही। निरीक्षण के दौरान अस्पताल प्रबंधन ने जानकारी दी कि सीएचसी के पास 108 एंबुलेंस के अलावा दो अतिरिक्त एंबुलेंस उपलब्ध हैं, लेकिन चालकों की कमी बनी हुई है। इसके अलावा, अस्पताल में अल्ट्रासाउंड मशीन और चारदीवारी की कमी भी एसडीएम के संज्ञान में लाई गई। निरीक्षण के दौरान एसडीएम ने अधूरे पड़े चिकित्सकों के आवासीय भवन का भी जायजा लिया, जो 2008 में 14 करोड़ रुपये की लागत से बनना शुरू हुआ था, लेकिन अब तक पूरा नहीं हो सका है। इस पर एसडीएम ने नाराजगी जाहिर की और जल्द कार्रवाई के निर्देश दिए।

चैती नवरात्र को लेकर बैठक, अध्यक्ष गणेश पाहन, कोषाध्यक्ष किशुन मुंडा

खबर मन्त्र संवाददाता

खलारी। करकट्टा देवी मंडप प्रांगण में ग्राम प्रधान गणेश पाहन की अध्यक्षता में अगामी चैती नवरात्र उत्सव को लेकर बैठक किया गया। बैठक में निर्णय लिया गया कि देवी मंडप के अजीवन अध्यक्ष गणेश पाहन ही रहेंगे और कोषाध्यक्ष किशुन मुंडा रहेंगे।अथवा सह कोषाध्यक्ष प्रमोद कुमार सिंह एवं उपाध्यक्ष पंकज मुंडा रहेंगे। मौके पर राकेश सिंह, अवध गुप्ता, अनिल पासवान, दिलीप पासवान, पप्पू सिंह, पंकज मुंडा, अनिल गुप्ता, रंजीत सिंह, अशोक राम, अमर साव, कुलेश्वर मुंडा, शत्रुघ्न मुंडा, अनिल साव, कमलदेव प्रसाद सिन्हा, बालेश्वर गंझू, प्रेम कुमार गुप्ता, चितरंजन सिंह, ममता देवी, आशा देवी, मंजीता देवी, सुनीत देवी, पूनम देवी, उमा देवी, नेहा कुमारी,शंभु दास सहित अन्य ग्रामीणों उपस्थित थे।

भगवान बिरसा मुंडा स्मारक समिति की बैठक

समिति के सदस्यों ने मुख्यमंत्री के प्रति जताया अभार

खबर मन्त्र संवाददाता

बिरसा मुंडा की प्रतिमा स्थल पर हो गौरव गाथा

मुख्यमंत्री के प्रति अभार जताते समिति के सदस्य।

ओरमांझी। भगवान बिरसा मुंडा स्मारिक समिति ओरमांझी की अध्यक्ष बीना देवी मुंडा की अध्यक्षता में बुधवार को समिति की सदस्यों की एक महत्वपूर्ण बैठक हुई। जिसमें भगवान बिरसा उद्यान परिसर में लगने वाले आदमकद बिरसा मुंडा की प्रतिमा को लेकर चर्चा किया गया। साथ ही लगभत तीन वर्ष से लागातर प्रतिमा स्थापित कराने के लिए प्रयासरत समिति के सदस्यों ने हर्ष जताते हुए झारखंड सरकार व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के प्रति अभार जताया गया। इसके अलावे प्रतिमा लगने वाले स्थल पर भगवान बिरसा मुंडा की गौरव गाथा के साथ जैविक उद्यान आने वाले देशभर के प्रर्यटक धरती आबा की जीवनी को संयोजकर ले जाए। स्कूल कालेज के छात्र-छात्रा उनकी गौरवगाथा से प्रेरणा ले, इसके लिए प्रतिमा स्थल पर सुविधा उपलब्ध कराने के संबंध में चर्चा की गई। मौके पर पूर्व मुख्य संरक्षक टीएसी सदस्स जमल मुंडा, संरक्षक दिलरंजन पाहन, मंगल उरांव, लक्ष्मण उरांव, झीरगा मुंडा, जगमोहन मुंडा, कसमू पाहन, कासीनाथ पाहन, सुरेंद्र उरांव, अशोक कुमार मुंडा, दिगंबर मुंडा, मनीनाथ महतो, दुबेश्वा बेदिया, रामधान करमाली, सुखराम पाहन, बुद्धेश्वर मुंडा, महेष मुंडा व दीपक मुंडा आदि उपस्थित थें।

चोरी के आरोप में जेल भेजा गया

अनगड़ा। थाना क्षेत्र अन्तर्गत बेड़वारी ग्राम स्थित एयरटेल टॉवर से चोरी करने के आरोप में कांड संख्या 57/25 के प्राथिमिकी अभियुक्त ग्राम बैंक मोहल्ला नगड़ी थाना नगड़ी रांची निवासी अकलम अंसारी उर्फ गुड्डू पिता कुर्बान अंसारी को बुधवार को अनगड़ा पुलिस ने गिरफ्तार करके न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। पुलिस ने बताया कि इससे पूर्व भी वह चोरी के कांड में गुमला नगर थाना से जेल जाने की बात स्वीकार की है।

तमाड़ : सम्मान समारोह कर तमाड़ में नये बीइओ का स्वागत और पुराने की हुई विदाई

खबर मन्त्र संवाददाता

तमाड़। बुधवार को प्रखंड मुख्यालय तमाड़ स्थित बी.आर.सी भवन परिसर में एक दिवसीय सम्मान समारोह आयोजित कर नए बी.ई.ओ. का स्वागत और पुराने का विदाई किया गया। समारोह का उद्घाटन पदस्थापित निकासी एवं व्यायन पदाधिकारी संतोष कुमार महतो ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुरआत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रखंड कार्यक्रम पदाधिकारी मुमताज आलम ने किया। तथा माला पहनाकर नव पदस्थापित बी.ई.ओ शांति मुनी तिर्की का स्वागत किया गया। वहीं पूर्व बी.ई.ओ जय मंगल लोहार को अभिनंदन पत्र समर्पित किया गया। प्रखंड कार्यक्रम अधिकारी आलम ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि सरकारी नौकरी में तबादला निश्चित है। लेकिन अच्छे कार्य करने वाले अधिकारी हमेशा जनता के दिलों दिमाग पर राज करते हैं। साथ ही पूर्व बी.ई.ओ जय मंगल ने कहा कि यहां के लोगों और शिक्षकों का जो स्नेह, प्यार, साथ और आशीर्वाद मुझे मिला है उसे आजीवन नहीं भुला पाऊंगा। वहीं वर्तमान बी.ई.ओ शांति मुनी तिर्की ने कही कि मै लोगों की उम्मीदों पर खरा उतरने का प्रयास करूंगी तथा प्रखंड की शिक्षा व्यवस्था को बेहतर बनाने का हरसंभव प्रयास करूंगी।

15वें वित के ब्लॉक कोऑर्डिनेटर इस्तियाक अंसारी बर्खास्त

चान्हो। प्रखंड मुख्यालय में 15वें वित के ब्लॉक कोऑर्डिनेटर इस्तियाक अनवर अंसारी को बुधवार को बर्खास्त कर दिया गया है। भ्रष्ट्राचार में लिप्त होने का आरोप लगाते हुए कोऑर्डिनेटर को हटाने की मांग चान्हो प्रखंड के 17 पंचायत के मुखिया एकजुट होकर लंबे समय से कर रहे थे। उन पर काम के प्रति लापरवाही बरतने, कर्तव्यहीनता, अनुशासनहीनता तथा आदेश की अवहेलना करते हुए मनमाने तरीके से काम करने का आरोप मुखिया संघ द्वारा लगाया गया था। उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी के पत्रांक 313, दिनांक 12 मार्च 2025 के अनुसार उन्हे एक महीने की अग्रिम मानदेय देते हुए नौकरी से सेवामुक्त करने का आदेश दिया गया है।

यूथ क्लब इटकी की बैठक आशा संस्था में मेराज आलम की अध्यक्षता

खबर मन्त्र संवाददाता

यूथ क्लब इटकी की बैठक में शामिल लोग।

इटकी। यूथ क्लब इटकी की एक बैठक आशा संस्था में मेराज आलम की अध्यक्षता में हुई। बैठक में बतौर अतिथि आजीम प्रेमजी फाउंडेशन पदाधिकारी जगमोहन ने इटकी यूथ क्लब द्वारा पिछले दिनों लोकहित में किये गये कार्यो व समाज के विकास में यूवाओं की भूमिका और उत्तराखंड और हरियाणा के यूथ क्लबों द्वारा शिक्षा व स्वच्छता पर किये गये कार्यो की चर्चा की। जगमोहन ने बताया कि इटकी यूथ क्लब द्वारा पूर्व में आयोजित हेलमेट लगाओ, जीवन बचाओ के कार्यक्रम से प्रेरणा लेते हुए उतराखंड व हरियाणा के यूथ क्लबों द्वारा भी इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इससे पूर्व यूथ क्लब इटकी के संयोजक और अजीम-प्रेमजी फाऊण्डेशन के इटकी प्रभारी साकेत सिंह ने इटकी में अप्रैल माह में ग्रीन इटकी क्लीन इटकी अन्तर्गत स्वच्छता अभियान शुरू करने की जानकारी दी। वहीं यूथ क्लब के वरीय सदस्य तथा पेंशनर समाज के सचिव बिनोद सिन्हा ने इटकी के भौगोलिक स्थिति की जानकारी देते हुए आने वाले समय में पानी बचाने तथा हरियाली बढ़ाने पर क्लब के यूवाओं से अपेक्षित सहयोग की अपील किया। बैठक में अजीत केशरी, प्रीतम, रूपा, पवन, जिशान, अनुपम, अनिल सहित यूथ ग्रुप के दर्जनों सदस्य मौजूद थे।

गोशाला धाम ओरमांझी में श्रीरामकथा का तीसरा दिन

धर्म समाज की रक्षा को अवतरित हुए थे श्रीराम

खबर मन्त्र संवाददाता

ओरमांझी। गौशाला धाम हुटुप ओरमांझी में आयोजित नौ दिवसीय श्रीराम कथा ज्ञानयज्ञ के तीसरे दिन कथावाचिका संगीता किशोरी ने बुधवार को श्रीराम जन्मोत्सव का प्रसंग में कहा प्रभु जब-जब धरा पर भगवान अवतृत हुए जनकल्याण के लिए लीला किए। कार्यक्रम में उन्होने युवाओं से संस्कारिक विवाह करने की अपील करते हुए कोर्ट मैरेज व संस्कारिक विवाह को परिभाषित किया। कहा समाज, कुल, परिवार सहित सभी को समन्वय स्थापित कर होने वाले संस्कारिक विवाह का विछेद होने की संभावना काफी कम होती हैं। वहीं दूसरी ओर दो लोगों के बीच समझौता व सिर्फ एक हस्ताक्षर में होने वाली विवाह के टिकने का उम्मीद नही होती। उन्होने माताओं को अपने पुत्री को संस्कार देने की अपील करते हुए कही पुत्रियां दो कूल का उद्धार करती है। बाद में सुश्री संगीता किशोरी ने धरती पर श्रीराम के अवतृत होने का महत्व बताया, कहा त्रेतायुग में जब असुरों के अत्याचार बढ गई थी। अधर्म समाज में संकट उत्पन्न हो गई थी। श्रीराम ने धर्मविजय का मार्ग प्रशस्त कर धरती पर मानवता का उच्चतम आदर्श प्रस्तुत किया। प्रत्येक विजयादश्मी को कुंभकरण, मेघनाथ व रावणवध पर कहा ज्ञानी व प्राक्रमी ब्राहमण होने के बावजूद रावण अशुर प्रवृति का था। उन्होने रावण दहन करने से पूर्व समाज में फैले अशुर प्रवृति के लोगों को अपने अंदर के अशुरों को दहन करने को कहा, श्रीराम का जन्म सम्पूर्ण मानवता में आदर्श स्थापित करना था। श्रीराम का जीवन की प्रत्येक घटना हमें धर्म, सत्य, न्याय, प्रेम व सदाचार का सीख देती है। श्रीराम का जन्म सिर्फ इतिहास नहीं, हमारे जीवन में नित नई प्रेरणा देने वाला एक अद्वितीय प्रसंग भी है।

रातू : गुड़ू के पंचम डोल में उमड़ा आस्था का सैलाब

- राधा-कृष्ण की हुयी पूजा
- गीत-संगीत का दौर चला

खबर मन्त्र संवाददाता

पूजा-अर्चना करती महिलाएं।

मिठाई की खरीदारी करते मेलार्थी।

रातू (रांची)। प्रखंड के गुड़ू में बुधवार की रात पंचम डोल मेला लगा। श्री वंशीधर महाप्रभु मेला समिति की ओर से आयोजित महोत्सव में झारखंड समेत बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा व छत्तीसगढ़ के हजारों श्रद्धालुओं ने हिस्सा लिया और भगवान श्रीकृष्ण और राधा का दर्शन-पूजन कर मन्नतें मांगी। अष्टधातु से बनी युगल मूर्ति को सुसज्जित झूले में झुलाने की रश्म अदा की गयी। गाजे-बाजे के साथ देवताओं को नगर भ्रमण कराया गया। छऊ नृत्य व नर्त्तकी नाच आकर्षण के केंद्र रहे। भूमि बैंड म्युजिकल ग्रुप के कलाकारों ने लोगों का खूब मनोरंजन किया। राज्य की काबिना मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की, हटिया विधायक नवीन जायसवाल, राजकुमारी माधुरी मंजरी, कांग्रेस नेता अजय नाथ शाहदेव, कुरमाली भाषा विकास परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजाराम महतो, भाजपा नेत्री सुमन मिश्र, शोभा यादव, आजसू नेता भरत कांसी, प्रमुख संगीता तिर्की, समाजसेवी ओमप्रकाश तिवारी व क्षेत्र के पंचायत प्रतिनिधि बतौर अतिथि थे।

इन्होंने निभायी भूमिका

मुकेश कुमार सिंह, प्रभु लोहरा, सिकंदर महतो, कामेश्वर महतो, अनिल तिर्की, सोमेश मिश्र, प्रो जौरा उरांव, आलोक पौराणिक, रमेश गोप, परमदीप महतो, कुशवाहा शिवचरण मेहता, प्रेम उरांव, रमेशचंद्र महतो, शहदेव उरांव, भोला महतो, श्रीकांत पाठक, शिवशंकर महतो, सोमेश उरांव, शशिकांत पाठक, चरणदेव महतो, राजू उरांव, आशीष उरांव, मुकेश सिंह, पितांबर महतो, दिलीप कुमार, जीतू गोप, सुनिल उरांव व अखिलेश मिश्र आदि।

सुरक्षा के थे कड़े प्रबंध

मेले में सभी तरह की दुकानें सजी थी। मेलार्थियों ने मिठाई समेत घरेलू चीजों की खरीदारी की। श्रृंगार प्रसाधन, ठेला-खोमचा और चाऊमीन वालों की चांदी रही। सुरक्षा के कड़े प्रबंध थे। थानेदार आरएन सिंह ने इसकी कमान संभाली। मेले में शांति बनी रही। किसी अप्रिय घटना की सूचना नहीं है।

उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी का कार्यालय, हजारीबाग (सामान्य शाखा)

-: आवश्यक सूचना :-

हजारीबाग जिला अन्तर्गत चौकीदार के रिक्त पदों पर सीधी नियुक्ति हेतु प्रकाशित विज्ञापन संख्या– 01/2024 के आलोक में चौकीदार के पद पर चयनित कुल 182 (एक सौ बिरासी) अभ्यर्थियों को नियुक्ति पत्र का वितरण दिनांक– **22/03/2025** को **10:00** बजे पूर्वाह्न से टाउन हॉल, हजारीबाग में किया जाना है।

अतः सभी चयनित अभ्यर्थियों को सूचित किया जाता है कि ससमय कार्यक्रम आयोजित स्थल पर उपस्थित होना सुनिश्चित करेंगे।

ह0/–
उपायुक्त, हजारीबाग।

PR.NO.348806 District(24-25):D

JHARKHAND URJA SANCHARAN NIGAM LIMITED

CIN: U40108JH2013SGC001704
Office of the
General Manager, Transmission Zone-II, Dumka
Email - gmcedeoghar@gmail.com

NIT No.-573/PR/JUSNL/2024-25

Sealed Tender in two parts containing Techno-commercial Part (Part- I) and Price Part (Part-II) scribed on separate two sealed envelope with NIT No., written on top of envelope are invited from reputed, experienced and financially sound agencies/firm/contractors for execution of following work:-

Name of works	Estimated cost (in Rs.)	Earnest money (in Rs.)	Cost of BOQ (Non-refundable) (In Rs.)	Last date & time for submission of tender	Date and time for opening of tender (Part-I)	Time of completion
Provision of paver block in front of parking shed in campus of administrative building, Maharo, Dumka.	4,98,352.00 (GST and labour cess included)	10,000.00	886.00	Up to 03.00PM on 12/04/2025	At 03.30PM on 12/04/2025	2 (Two) months

1. Tender document can be purchased from the office of the undersigned from any working day till one day before the date of submission of Tender in working hours after depositing cost of BOQ (non-refundable) in shape of Bank Draft in favour of **Accounts Officer ,Transmission Zone-II, Dumka** payable at Deoghar.

स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचायें। कृपया अपनी शिकयतों को 18003456570 (कॉल सेन्टर) पर दर्ज करायें।

Sd/-
General Manager,
Transmission Zone-II, Dumka

PR 348775 Jharkhand Urja Sancharan Nigam Ltd (24-25)_D

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय

विशेष कार्य प्रमण्डल, भवन निर्माण विभाग, राँची
Mail:-splworksdivbcdrnc@gmail.com

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना सं0–62 / 2024–25

1. विज्ञापनदाता का पदनाम :– कार्यपालक अभियंता, विशेष कार्य प्रमण्डल, भवन निर्माण विभाग, राँची।
2. परिमाण विपत्र बिक्री की तिथि :– दिनांक–26.03.2025 को अपराह्न 1.00 बजे तक।
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय :– दिनांक–27.03.2025 को अपराह्न 3.00 बजे तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय :– दिनांक–27.03.2025 को अपराह्न 3.30 बजे।
5. परिमाण विपत्र बिक्री का स्थान :– (क) अधीक्षण अभियंता का कार्यालय, छोटानागपुर भवन अंचल संख्या–1, भवन निर्माण विभाग, राँची। (ख) कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, विशेष कार्य प्रमंडल, भवन निर्माण विभाग राँची।
6. निविदा प्राप्ति एवं खोलने का स्थान :– कार्यपालक अभियंता का कार्यालय, विशेष कार्य प्रमंडल, भवन निर्माण विभाग, राँची।
7. निविदाधीन कार्य का विवरण :–

क्र. सं	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रू0)	अग्रधन की राशि (रू0)	परिमाण विपत्र का मूल्य (रू0)	कार्य समाप्ति की अवधि
1	Emergent Repair work of Borewell No-1 and 2 and Both Gate of Jharkhand Bhawan Vasant Vihar New Delhi for the Year -2024-25	3,10,131.00	6,300.00	750.00	1 Months

8. निविदा की शर्तें prdjharkhand.in एवं कार्यालय के सूचना पट पर देखा जा सकता है।

विश्वासभाजन
कार्यपालक अभियंता
विशेष कार्य प्रमण्डल, भ0 नि0 वि0, राँची

PR 348743 Building (24-25)_D

JAP-IT

Jharkhand Agency for Promotion of Information Technology
(An Autonomous body under Department of Information Technology & e-Governance, Govt of Jharkhand) Ground Floor, Engineer's Hostel – I, Near Golchakkar, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand
Phone. 0651-2401044, 2401047 email: japit_doit@rediffmail.com

NOTICE INVITING TENDER
e-Tender Ref No.: JAP-IT/JHSECURE-1/2025

Invitation of online bid through eProcurement portal i.e. https://jharkhandtenders.gov.in/ for **Procurement of Supply, Installation & Support for High End Server (02), End Point Protection Unit Rate (8,000 Users), Smart LED TV 65" Inch (02) for JAP-IT, Ranchi Jharkhand.**
The invitation of bid is open to all SI/SP who fulfilling the eligibility criteria as mentioned in this Request of Proposal (RFP) document and the bidder must also agree to terms and conditions mentioned under the RFP. Bidders are advised to study the RFP document and Terms & Conditions carefully and completely.

Tender Schedule

S. No.	Basic Requirement	Specific Requirement
1.	Tender Ref No.	JAP-IT/JHSECURE -1/2025
2.	Name of the Work	Procurement of Supply, Installation & Support for High End Server (02), End Point Protection Unit Rate (8,000 Users), Smart LED TV 65" Inch (02) for JAP-IT, Ranchi Jharkhand
3.	Name & address of the issuer of this tender	The CEO,JAP-IT Ground Floor, Engineers hostel 1,Near Golchakkar, Dhurwa, Ranchi-834004. Tel: 0651-401044 Email: ceo.japit@jharkhandmail.gov.in
4.	Date of download of tender document	18-03-2025 at 6:00 P.M.
5.	Date for sending Query to ceo.japit@jharkhandmail.gov.in	24-03-2025 at 02:00 P.M.
6	Pre-Bid Query Meeting	25-03-2025 at 02:00 P.M.
7.	Start Date for Submission of Bids online	28-03-2025 at 05:00 P.M.
8.	Last Date for Submission of Bids online	09-04-2025 up to 3:00 P.M.
9.	Date of Opening of Pre-qualification & Technical Bid	11-04-2025 at 3:30 P.M.
10	Date of Commercial Bid opening	To be announced later
10.	Cost of Tender Document	Rs. **10,000/-** (Rs. Ten Thousand only) online as per Jharkhand e-Procurement portal
11.	Earnest Money Deposit (EMD)	**Rs. 20,00,000/-** (Twenty Lakh Only) online as per Jharkhand e-Procurement portal rule.
12.	Validity of Proposal	The validity of the bid will be **two** years, and an order may be placed for items under the RFP as per requirements.

- The online generated receipt of the Tender cost and EMD must be submitted with online bid documents.
- EMD amount will be refunded to bidder through on-line mode in the same bank account through which on-line EMD payment have been made during the tendering process.
- Bids shall be submitted online through eProcurement portal i.e. https://jharkhandtenders.gov.in
- JAP-IT will not be responsible for delay in online submission due to any reason. For this, bidder is requested to upload the complete bid well advance in time so as to avoid last hour technical issues like slow speed; choking of web site due to heavy load or any other unforeseen problems/technical glitch.
- The Authority reserves the right to accept/reject any or all the tender(s) received without assigning any reason thereof.

Sd/-Officer on Special Duty, JAP-IT, Ranchi

PR 348716 (Information Technology)24-25*D

लालू से पूछताछ

राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को ईडी ने 19 मार्च को भूमि-के-लिए नौकरी के मनी लॉन्ड्रिंग मामले में पूछताछ के लिए तलब किया। 76 वर्षीय लालू प्रसाद को पटना में केंद्रीय जांच एजेंसी के समक्ष पेश होने के लिए कहा गया है। उनके बयान धन शोधन निवारण अधिनियम के तहत दर्ज किए जाएंगे। पिछले साल, ईडी ने इस मामले में एक आरोप पत्र दाखिल किया था, जिसमें लालू प्रसाद के परिवार के सदस्यों के अलावा उनकी पत्नी राबड़ी देवी, उनकी बेटियां मीसा भारती और हेमा यादव को भी आरोपी ठहराया गया था, इसके साथ ही कुछ अन्य लोगों को भी नामित किया गया था। पहले भी ईडी की ओर से लालू प्रसाद और उनके परिवार को पूछताछ के लिए बुलाया जा चुका है, लेकिन ईडी का कहना है कि अब कुछ नए सबूतों के आधार पर नए सिरे से पूछताछ की जाएगी।लैंड फॉर जॉब स्कैम केस पश्चिम-मध्य रेलवे के जबलपुर जोन में साल 2004-2009 के बीच ग्रुप-डी पदों पर हुई नियुक्तियों से जुड़ा है। आरोप है कि उनके रेल मंत्री रहने के दौरान उनके परिवार वालों और सहयोगियों के नाम पर लैंड ट्रांसफर की गई थी, जिसके बदले उन्हें रेलवे में नौकरी दी गई थी। इस मामले में 18 मई 2022 को लालू प्रसाद व उनके परिवार वालों के खिलाफ मामला दर्ज किया जा चुका है। दिल्ली की राउज एवेन्यू कोर्ट ने लालू फैमिली समेत 14 आरोपियों को समन जारी किया है। आरोप यह भी है कि लालू प्रसाद यादव ने रेल मंत्री रहते हुए जबलपुर के अलावा मुंबई, कोलकाता, जयपुर और हाजीपुर (बिहार) के रेलवे जोन में भी जमीन के बदले की लोगों को नौकरी दी थी। वैसे लालू प्रसाद को चारा घोटाले में सजा हो चुकी है। सर्वोच्च न्यायालय ने हाई प्रोफाइल मामलों के लटकाने पर कड़ी टिप्पणी कर चुका है।

आज का राशिफल

मेष : अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। किसी से वाद-विवाद अथवा कहासुनी होने का भय रहेगा। मानसिक एवं शारीरिक शिथिलता पैदा होगी। जल्दबाजी में कोई भूल संभव है। आय-व्यय की स्थिति समान्य रहेगी। शुभांक-5-7-8

वृष : आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। दूसरों के कार्यों में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें। निर्मूल शंकाओं के कारण मनस्ताप भी पैदा हो सकते है। भय तथा शत्रुहानि की आशंका रहेगी। एकाकी प्रवृति का त्याग करें। यात्रा न करें। शुभांक-4-6-7

मिथुन : शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। मन प्रसन्न बना रहेगा। अचल संपत्ति की खरीद अथवा कृषि उद्यम में रुचि पैदा होगी। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। शुभांक-4-6-8

कर्क : नये-नये व्यापारिक अनुबंध होंगे। शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। संतान पक्ष की समस्या समाप्त होगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। हरि करे सो खरी इसीलिए पूरे मनोयोग से कार्य करें। शुभांक-3-6-9

सिंह : कार्यक्षेत्र में खुशनुमा माहौल बनेगा। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने के प्रयास होंगे। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। पर-प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अतः आलस्य का त्याग करें। शुभांक-4-6-8

कन्या : भावनाओं का उद्वेग बढ़ेगा। जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। आपसी प्रेम-भाव में बढ़ोतरी होगी। धार्मिक कार्य शुभ रहेगा। शुभांक-2-4-6

तुला : योजना क्रियान्वन के लिए समय अच्छा व सकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। जीवन साथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। सफलता मिलेगी। सुनियोजित तरीके से कार्यारम्भ करें। शुभांक-3-6-7

वृश्चिक : व्यवसाय में प्रतिद्वंद्वी परेशान कर सकते हैं। समय व्ययकारी सिद्ध होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। दिमाग में निर्मूल तर्क-कुतर्क पैदा होंग। महत्वपूर्ण कार्य को समय पर बना लें तो अच्छा ही होगा। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। व्यापार में स्थिति नरम रहेगी। मनोरथ सिद्धि का योग है। शुभांक-2-5-7

धनु : लाभदायक कार्यों की चेष्टाएं प्रबल होंगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। व्यापार व व्यवसाय में ध्यान देने से सफलता मिलेगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। धार्मिक यात्रा का योग बना है। शुभांक-2-5-7

मकर : मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। पुराने मित्र के कारण कार्य बाधा हटेगी। शुद्ध गोचर का लाभ। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। आर्थिक लाभ हेतु किये गए कार्यों का तत्काल प्रतिफल मिलेगा। शुभांक-3-6-8

कुंभ : मनोरंजन के साधनों पर धन-व्यय होगा। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। कामकाज में आ रही बाधा दूर होगी। पर प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। लेन-देन में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास सफल होंग। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। शैक्षणिक कार्य आसानी से पूरे होते रहेंगे। शुभांक-6-8-9

मीन : सुबह-सुबह की महत्वपूर्ण सिद्धि के बाद दिन-भर उत्साह रहेगा। किसी लाभदायक कार्य के लिए व्ययकारक स्थितियां पैदा होगी। अल्प-परिश्रम से ही लाभ होगा। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा। जान-पहचान का दायरा बढ़ेगा। शुभांक-5-8-9

संस्थापक
स्व. डॉ अभय कुमार सिंह
स्वामित्व वृन्दा मीडिया पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक, प्रकाशक
मंजू सिंह
द्वारा चिरौंदी, बोड़ेया रोड, रांची (झारखंड) से मुद्रित एवं प्रकाशित।
प्रधान संपादक
सौरभ कुमार सिंह
संपादक
अविनाश ठाकुर*
फोन : 95708-48433
पिनः -834006
e-mail
khabarmantra.city@gmail.com
R.N.I No.
JHAHIN/2013/51797
धनबाद कार्यालय
लुबी सर्कुलर रोड, धनबाद 826001 से प्रकाशित।
(R.N.I No. आवेदित)
*पीआरबी एक्ट के अंतर्गत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी। प्रकाशित खबरों से संबंधित किसी भी विवाद का निपटारा रांची न्यायालय में ही होगा।

ट्रंप प्रशासन के टैरिफ संबंधी निर्णय का भारत पर प्रभाव

अमेरिका प्रशासन आर्थिक एवं अन्य क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण फैसले बहुत तेज गति से ले रहा है। इससे विश्व के कई देश प्रभावित हो रहे हैं एवं कई देशों को तो यह भी समझ में नहीं आ रहा है कि अंततः आगे आने वाले समय में इन फैसलों का प्रभाव इन देशों पर किस प्रकार होगा। ट्रम्प प्रशासन अमेरिका में विभिन्न उत्पादों के हो रहे आयात पर टैरिफ की दरों को बढ़ा रहा है क्योंकि इन देशों द्वारा अमेरिका से आयात पर ये देश अधिक मात्रा में टैरिफ लगाते हैं। चीन, कनाडा एवं मेक्सिको से अमेरिका में होने वाले विभिन्न उत्पादों के आयात पर तो टैरिफ को बढ़ा भी दिया गया है। इसी प्रकार भारत के मामले में भी ट्रम्प प्रशासन का मानना है कि भारत, अमेरिका से आयातित कुछ उत्पादों पर 100 प्रतिशत तक का टैरिफ लगाता है अतः अमेरिका भी भारत से आयात किए जा रहे कुछ उत्पादों पर 100 प्रतिशत का टैरिफ लगाएगा। इस संदर्भ में हालांकि केवल भारत का नाम नहीं लिया गया है बल्कि टिट फोर टेट एवं रेसिप्रोकल आधार पर कर लगाने की बात की जा रही है और यह समस्त देशों से अमेरिका में हो रहे आयात पर लागू किया जा सकता है एवं इसके लागू होने की दिनांक भी 2 अप्रैल 2025 तय कर दी गई है। इस प्रकार की नित नई घोषणाओं का असर अमेरिका सहित विभिन्न देशों के पूंजी (शेयर) बाजार पर स्पष्टतः दिखाई दे रहा है एवं शेयर बाजारों में डर का माहौल बन गया है।

अमेरिका में उपभोक्ता आधारित उत्पादों का आयात अधिक मात्रा में होता है और अब अमेरिका चाहता है कि इन उत्पादों का उत्पादन अमेरिका में ही प्रारम्भ हो ताकि इन उत्पादों का अमेरिका में आयात कम हो सके। दक्षिण कोरीया, जापान, कनाडा, मेक्सिको आदि जैसे देशों की अर्थव्यवस्था केवल कुछ क्षेत्रों पर ही टिकी हुई है अतः इन देशों पर अमेरिका में बदल रही नीतियों का अधिक विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। जबकि भारत एक विविध प्रकार की बहुत बड़ी अर्थव्यवस्था है, अतः भारत को कुछ क्षेत्रों में यदि नुकसान होगा तो कुछ क्षेत्रों में लाभ भी होने की प्रबल सम्भावना है। संभवतः अमेरिका ने भी अब यह एक तरह से स्वीकार कर लिया है कि भारत के कृषि क्षेत्र को टैरिफ युद्ध से बाहर रखा जा सकता है, क्योंकि भारत के किसानों पर इसका प्रभाव विपरीत रूप से पड़ता है। और, भारत यह किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करेगा कि भारत के किसानों को नुक्सान हो।

डेयरी उत्पाद एवं समुद्रीय उत्पादों में भी आवश्यक खाने पीने की वस्तुएं शामिल हैं। भारत अपने देश में इन उत्पादों के उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए उद्देश्य से इन उत्पादों के आयात पर टैरिफ लगाता है, ताकि अन्य देश सस्ते दामों पर इन उत्पादों को भारत के बाजार में डम्प नहीं कर सकें। साथ ही, भारत में मिडल क्लास की मात्रा में वृद्धि अभी हाल के कुछ वर्षों में प्रारम्भ हुई है अतः यह वर्ग देश में उत्पादित सस्ती वस्तुओं पर अधिक निर्भर है, यदि इन्हें आयातित महंगी वस्तुएं उपलब्ध कराई जाती हैं तो वह इन्हें सहन नहीं कर सकता है। अतः यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह अपने नागरिकों को सस्ते उत्पाद उपलब्ध करवाए। अन्यथा, यह वर्ग एक बार पुनः गरीबी रेखा के नीचे आ जाएगा। भारत ने मुद्रा स्फीति को भी कूटनीति के आधार पर नियंत्रण में रखने में सफलता प्राप्त की है। रूस, ईरान, अमेरिका, इजराइल, चीन, अरब समूह आदि देशों के साथ अच्छे सम्बंध रखकर विदेशी व्यापार करने में सफलता प्राप्त की है। जहां से भी जो वस्तु सस्ती मिलती है भारत उस देश से उस वस्तु का आयात करता है। इसी नीति पर चलते हुए, कच्चे तेल के आयात के मामले में भी भारत ने विभिन्न देशों से भारी मात्रा में छूट प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की है और ईंधन के दाम भारत में पिछले लम्बे समय से स्थिर बनाए रखने में सफलता मिली है।

अमेरिका द्वारा चीन, कनाडा एवं मेक्सिको पर लगाए गए टैरिफ के बढ़ाने के पश्चात इन देशों द्वारा भी अमेरिका से आयातित कुछ उत्पादों पर टैरिफ लगा दिए जाने के उपरांत अब विभिन्न देशों के बीच व्यापार युद्ध एक सच्चाई बनता जा रहा है। परंतु, क्या इसका असर भारत के विदेशी व्यापार पर भी पड़ने जा रहा है अथवा क्या कुछ ऐसे क्षेत्र भी ढूढ़े जा सकते हैं जिनमें भारत लाभप्रद स्थिति में आ सकता है। जैसे, अपैरल (सिले हुए कपड़े) एवं नान अपैरल टेक्सटायल का मेक्सिको से अमेरिका को निर्यात प्रतिवर्ष लगभग 450 करोड़ अमेरिकी डॉलर का रहता है और मेक्सिको का अमेरिका को निर्यात के मामले में 8वां स्थान है। अमेरिका द्वारा मेक्सिको से आयात पर टैरिफ लगाए जाने के बाद टेक्सटायल से सम्बंधित उत्पाद अमेरिका में महंगे होने लगेंगे अतः इन उत्पादों का आयात अब अन्य देशों से किया जाएगा। मेक्सिको अमेरिका को 250 करोड़ अमेरिकी डॉलर के कॉटन अपैरल का निर्यात करता है एवं 150 करोड़ अमेरिकी डॉलर के नान कॉटन अपैरल का निर्यात करता है। कॉटन अपैरल के आयात के लिए अब अमेरिकी व्यापारी भारत की ओर देखने लगे हैं एवं इस संदर्भ में भारत के निर्यातकों के पास पूछताछ की मात्रा में वृद्धि देखी जा रही है। इन परिस्थितियों के बीच, टेक्स्टायल उद्योग के साथ ही, फार्मा क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र, इंजीयरिंग क्षेत्र एवं श्रम आधारित उद्योग जैसे क्षेत्रों में भी भारत को लाभ हो सकता है।

- प्रहलाद सबनानी

2014 यदि अमेरिका अपने देश में हो रहे उत्पादों के आयात पर टैरिफ में लगातार वृद्धि करता है तो यह उत्पाद अमेरिका में बहुत महंगे हो जाएंगे और इससे अमेरिकी नागरिकों पर मुद्रा स्फीति का दबाव बढ़ेगा। क्या अमेरिकी नागरिक इस व्यवस्था को लम्बे समय तक सहन कर पाएंगे। उदाहरण के तौर पर फार्मा क्षेत्र में भारत से जेनेरिक्स दवाईयों का निर्यात भारी मात्रा में होता है।

यदि अमेरिका अपने देश में हो रहे उत्पादों के आयात पर टैरिफ में लगातार वृद्धि करता है तो यह उत्पाद अमेरिका में बहुत महंगे हो जाएंगे और इससे अमेरिकी नागरिकों पर मुद्रा स्फीति का दबाव बढ़ेगा। क्या अमेरिकी नागरिक इस व्यवस्था को लम्बे समय तक सहन कर पाएंगे। उदाहरण के तौर पर फार्मा क्षेत्र में भारत से जेनेरिक्स दवाईयों का निर्यात भारी मात्रा में होता है। यदि अमेरिका भारत के उत्पादों पर टैरिफ लगाता है तो इससे अधिक नुक्सान तो अमेरिकी नागरिकों को ही होने जा रहा है। भारत से आयात की जा रही सस्ती दवाएं अमेरिका में बहुत महंगी हो जाएंगी। इससे अंततः अमेरिकी नागरिकों के बीच असंतोष फैल सकता है। अतः अमेरिका के ट्रम्प प्रशासन के लिए टैरिफ को लम्बे समय तक बढ़ाते जाने की अपनी सीमाएं हैं।

अमेरिका विश्व का सबसे पुराना लोकतंत्र एवं सबसे बड़ा विकसित देश है और इस नाते अन्य देशों के प्रति अमेरिका की जवाबदारी भी है। टैरिफ बढ़ाए जाने के सम्बंध में एकतरफा कार्रवाई अमेरिका की अन्य देशों के साथ सौदेबाजी की क्षमता तो बढ़ा सकती है परंतु यह कूटनीति लम्बे समय तक काम नहीं आ सकती है। अमेरिकी नागरिकों के साथ-साथ अन्य देशों में भी असंतोष फैलेगा। कोई भी व्यापारी नहीं चाहता कि नीतियों में अस्थिरता बनी रहे। इसका सीधा सीधा असर विश्व के समस्त स्टॉक मार्केट पर विपरीत रूप से पड़ता हुआ दिखाई भी दे रहा है। यदि यह स्टॉक मार्केट के अतिरिक्त अन्य बाजारों एवं नागरिकों के बीच में भी फैला तो मंदी की सम्भावनाओं को भी नकारा नहीं जा सकता है। अमेरिका के साथ साथ अन्य कई देश भी मंदी की चपेट में आए बिना नहीं रह पाएंगे। अर्थात, इस प्रकार की नीतियों से विश्व के कई देश विपरीत रूप में प्रभावित होंगे। अमेरिका को भी टैरिफ के संदर्भ में इस बात पर एक बार पुनः विचार करना होगा कि विकसित देशों पर तो टैरिफ लगाया जा सकता है क्योंकि अमेरिका एवं इन विकसित देशों में परिस्थितियां लगभग समान है। परंतु विकासशील देशों जैसे भारत आदि में भिन्न परिस्थितियों के बीच तुलनात्मक रूप से अधिक परेशानियों का सामना करते हैं।

लेटर टू एडिटर

अनुशासन जरूरी

प्रयागराज महाकुंभ में देश-विदेश के लगभग 66 करोड़ श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई। कुछ अप्रिय घटनाओं को छोड़कर यह महाकुंभ सफल रहा। प्रयागराज और दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई दुर्घटनाएं प्रशासन की चूक और अनुशासन की कमी के कारण हुईं। सरकार ने कुंभ में सफल संयोजन किया, लेकिन भविष्य में प्रशासन को और चुस्त होना पड़ेगा। लोगों को अनुशासन बनाए रखने, रेलवे स्टेशन पर ज्यादा टिकट न बेचने, और सामाजिक तत्वों पर निगरानी रखने की जरूरत है। **रानी खूंटी**

मिले-जुले का मेला

बड़े धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन को सफल बनाने में सरकारी व्यवस्था के साथ-साथ श्रद्धालुओं का अनुशासित व्यवहार भी आवश्यक है। आगंतुकों की संभावित संख्या का सटीक आकलन, कार्यशील मशीनरी की दक्षता, पर्याप्त बजट, कुशल निगरानी तंत्र और पार्किंग आदि के लिए समुचित स्थान होना चाहिए। **– रवि रांची**

ट्वीट

आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के यशस्वी मार्गदर्शन में संपन्न हुए एकता के महायज्ञ 'महाकुम्भ-2025, प्रयागराज' के स्वच्छ, सुरक्षित, सुव्यवस्थित और ऐतिहासिक आयोजन ने 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत-सर्वसमावेशी भारत' के साथ ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का आत्मीय संदेश पूरी दुनिया को दिया है।'आस्था' आजीविका का माध्यम हो सकती है, 'संस्कृति' राष्ट्र की समृद्धि का कारक बन सकती है। महाकुम्भ-2025, प्रयागराज के आयोजन से जुड़े सभी लोगों का अभिनंदन और आदरणीय प्रधानमंत्री जी का हार्दिक आभार!

– योगी आदित्यनाथ

अब रुपये के चिह्न पर बिना कारण विवाद!

डॉ. सत्यवान सौरभ

सामयिक

द्रविड़ मुनेत्र कषगम। इसके दो और नाम हैं। एक-द्रमुक और दूसरा डीएमके। कुछ लोग इसे द्रविड़ मुन्नेत्र कड़गम भी कहते हैं। द्रमुक अब तक हिन्दी थोपने के विरोध में और तमिल भाषा की पहचान को बचाने के लिए मुखर रही है। अब उसने रुपये के चिह्न (?) को लेकर आपत्ति जताई है। पार्टी का कहना है कि इस चिह्न में भारतीय संस्कृति और विशेष रूप से दक्षिण भारतीय पहचान को उचित स्थान नहीं दिया गया है। भारतीय मुद्रा के चिह्न को लेकर द्रविड़ मुनेत्र कषगम और कुछ अन्य क्षेत्रीय दलों की आपत्ति क्या वाकई भाषा से जुड़ा विवाद है, या फिर यह सिर्फ. एक राजनीतिक रणनीति? हालांकि, इस चिह्न को डिजाइन करने वाले उदय कुमार धरणी (आईआईटी गुवाहाटी) का कहना था कि इसका डिजाइन देवनागरी ₹ और रोमन ₹ फ़्₹ दोनों से प्रेरित है, ताकि भारतीय और वैश्विक पहचान का मिश्रण दिखाया जा सके। द्रविड़ मुनेत्र कषगम लंबे समय से हिन्दी थोपने के खिलाफ रही है। 1965 में हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के प्रस्ताव के खिलाफ तमिलनाडु में बड़े आंदोलन हुए थे। द्रविड़ मुनेत्र कषगम ने पहले भी नीट, नई शिक्षा नीति और सरकारी नौकरियों में हिन्दी प्राथमिकता का विरोध किया है। अब रुपये के चिह्न को लेकर विवाद द्रमुक के उसी एजेंडे का विस्तार है।

द्रमुक का मानना है कि चिह्न देवनागरी लिपि के ₹ (रुपया) से प्रेरित है, जिससे हिन्दी को प्राथमिकता मिलती है, जबकि भारत की अन्य भाषाओं की उपेक्षा होती है। इस पार्टी और तमिलनाडु के कुछ अन्य संगठनों का तर्क है कि रुपये का चिह्न देवनागरी लिपि के ₹ से प्रेरित है, जिससे हिन्दी को प्राथमिकता मिलती है और अन्य भारतीय भाषाओं, विशेष रूप से द्रविड़ भाषाओं (तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम) को उपेक्षित किया गया है। उनका मानना है कि मुद्रा का चिह्न ऐसा होना चाहिए, जो सभी भारतीय भाषाओं का समान रूप से प्रतिनिधित्व करे। दक्षिण भारतीय राज्यों में हिन्दी थोपने के खिलाफ पहले से ही एक मजबूत भावना मौजूद है और यह विवाद उसी का विस्तार माना जा सकता है।

द्रमुक और तमिलनाडु की अन्य पार्टियां हिन्दी थोपने के विरोध में कई बार आंदोलन कर चुकी हैं। द्रमुक की पूरी राजनीति ही तमिल पहचान और केंद्र के ₹हिंदी वर्चस्व₹ के खिलाफ विरोध के इर्द-गिर्द घूमती रही है। यह मुद्दा 1960 के दशक में हिन्दी विरोधी आंदोलनों से शुरू हुआ था और अब तक जारी है। 2010 में जब ? चिह्न को अपनाया गया, तब भी यह बहस उठी थी। द्रविड़ मुनेत्र कषगम का इस मुद्दे को फिर से उछालना एक राजनीतिक रणनीति हो सकती है, ताकि तमिल अस्मिता को लेकर अपनी स्थिति मजबूत की जा सके।

हालांकि द्रविड़ मुनेत्र कषगम की कुछ आपत्तियां तर्कसंगत हो सकती हैं, लेकिन इसे पूरी तरह से भाषा का मुद्दा मानना भी सही नहीं होगा। द्रमुक केंद्र की नीतियों के खिलाफ अपनी स्थिति मजबूत करने और क्षेत्रीय राजनीति को धार देने के लिए ऐसे मुद्दों को उभारती है। यह विवाद तमिलनाडु की राजनीति में द्रविड़ मुनेत्र कषगम की पकड़ बनाए रखने और भाजपा के ₹हिन्दी-हिन्दू₹ एजेंडे का विरोध करने का एक तरीका भी हो सकता है। ? चिह्न किसी एक भाषा का प्रतीक नहीं है, बल्कि इसे भारतीय संस्कृति और अंतरराष्ट्रीय मानकों को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। पहले से ही यह चिह्न पूरे देश में स्वीकार किया जा चुका है, इसलिए अब इसे बदलने की कोई व्यावहारिक जरूरत नहीं है। इस मुद्दे को उछालना एक सुनियोजित राजनीतिक रणनीति ज्यादा लगती है, बजाय किसी वास्तविक समस्या के।

द्रमुक इस मुद्दे को उछालकर केंद्र सरकार, खासकर भाजपा पर हिन्दी वर्चस्व थोपने का आरोप लगा रही है। इससे दक्षिण भारत बनाम उत्तर भारत का मुद्दा उभरता है, जिससे उसे तमिलनाडु में और समर्थन मिलता है। इससे विपक्षी गठबंधन को भी भाजपा के खिलाफ एक और हथियार मिलता है। तमिलनाडु जैसे राज्यों में क्षेत्रीय पहचान और भाषा का मुद्दा चुनाव में बहुत प्रभाव डालता है। द्रविड़ मुनेत्र कषगम इसे 2026 के विधानसभा चुनाव के लिए एक बड़े मुद्दे के रूप में भुना सकती है। वह अपने कोर वोटबेस को यह संदेश देना चाहती है कि वह तमिल पहचान और अधिकारों की रक्षा कर रही है। द्रमुक इस विवाद के जरिए दक्षिण भारत के अन्य राज्यों (केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना) में प्रभाव बढ़ाने की कोशिश कर सकती है, क्योंकि इन राज्यों में भी हिन्दी थोपे जाने का विरोध रहता है। भारतीय मुद्रा का यह प्रतीक किसी एक भाषा तक सीमित नहीं है, लेकिन क्षेत्रीय दलों के लिए यह केंद्र विरोधी भावनाओं को भुनाने का एक अच्छा अवसर जरूर बन गया है।

नियमित ग्रोथ संग सही योजना से सफलता

एनके मुरलीधर

मोटिवेशन

कामयाबी की ओर कदमों का प्रतीक

किसी भी कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए नियमित कैरियर ग्रोथ जरूरी है। यानी तरक्की की दिशा में लगातार सजग रहना व काम करने के ढंग को बेहतर बनाना। वहीं प्रमोशन हासिल करने के लिए व्यवस्थित तरीके से आगे बढ़ना जरूरी है। दरअसल कैरियर में ग्रोथ के लिए भी प्लानिंग चाहिये। परिस्थितियों और लक्ष्यों में भिन्नता के चलते व्यावहारिक योजना बनाना आवश्यक है।

कैरियर में ग्रोथ का मतलब सिर्फ वेतन वृद्धि ही नहीं होती बल्कि आपके व्यक्तिगत, सामाजिक और पेशेवर व्यक्तित्व का भी विकास होना है। यह विकास आपको आर्थिक रूप से मजबूत बनाता है व आत्मविश्वास बढ़ाता है, स्किल्स सीखने के लिए प्रेरित करता है और जीवन की गुणवत्ता बढ़ाता है। कैरियर में ग्रोथ होने से सुविधाएं भी बढ़ती हैं और वित्तीय सुरक्षा भी मजबूत होती है। वित्तीय जरूरतों की पूर्ति कर भविष्य के लिए बचत भी कर सकते हैं। कैरियर ग्रोथ से संतुष्टि और पहचान का दायरा भी बढ़ता है। इसलिए कैरियर में लगातार यानी नियमित ग्रोथ होना बहुत जरूरी है।

लेकिन कैरियर ग्रोथ के लिए बहुत कुछ करना पड़ता है। सजग रहना व काम करने के ढंग को निरंतर बेहतर बनाना होता है, फोकस रहना होता है, तब जाकर प्रमोशन यानी नई जिम्मेदारी हासिल होती है। जिस तरह से कोई भी लक्ष्य पाने के लिए प्लानिंग जरूरी है, उसी तरह से कैरियर में ग्रोथ के लिए भी प्लानिंग चाहिये। कैरियर ग्रोथ की प्लानिंग का कोई निश्चित या एक सटीक नियम नहीं होता। बस सफलता की दिशा में व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ना होता है। क्योंकि हर व्यक्ति की परिस्थितियां, उसकी जरूरतें और लक्ष्य अलग-अलग होते हैं, इसलिए कैरियर ग्रोथ की प्लानिंग में भी भिन्नता होती है। इसलिए एक फ्लैक्सिबल और व्यवहारिक प्लान होना जरूरी है। जानिये कैरियर में ग्रोथ के लिए सही प्लानिंग कैसे करें?

अपना लक्ष्य तय करें

कैरियर में लक्ष्य कई तरह से तय होते हैं, सबसे पहले एक या दो साल के लिए शॉर्ट टर्म गोल तय करने चाहिए। इसमें नई स्किल सीखना, प्रमोशन पाना और जॉब बदलना जैसे लक्ष्य होने चाहिए। अगला लक्ष्य माध्यमिक स्तर का या मीडियम टर्म गोल होना चाहिए। यह तीन से पांच साल तक का होना चाहिए। इसमें मैनेजमेंट रोल में आना, अच्छी सैलरी पाना और बड़ी कंपनी हासिल करना शामिल होना चाहिए।

अंत में लांग टर्म गोल या दीर्घकालिक लक्ष्य पर फोकस करना जरूरी है। यह लक्ष्य कम से कम 10 साल का होना चाहिए। इसमें लीडरशिप पोजीशन हासिल करना, खुद का बिजनेस खड़ा करना, जिस इंडस्ट्री में कार्यरत हैं, उसमें एक्सपर्ट बनना आदि होने चाहिए।

जरूरी स्किल्स और क्वालीफिकेशन

कैरियर में ग्रोथ के लिए जरूरी है कि हम अपने क्षेत्र में इस्तेमाल होने वाली सभी तरह की कुशलताओं में पारंगत हों और इसके लिए जिस तरह की शैक्षिक योग्यता की जरूरत हो, उसे हासिल करें। अपने कार्यक्षेत्र में इस्तेमाल होने वाली सभी तरह की तकनीकों को बेहतर ढंग से जानने-सीखने की कोशिश करें। नौकरी करते हुए ही ऑनलाइन डिग्री या डिप्लोमा हासिल कर लें। नौकरी करते हुए ऑनलाइन स्किल्स बेहतर करने में जरूरी ट्रेनिंग या अभ्यास का मौका अपने काम में ही मिल जाता है। ऐसा करने से कंपनी का फायदा तो होता ही है, कंपनी मैनेजमेंट में माहौल भी बन जाता है।

इंडस्ट्री के ट्रेंड्स पर नजर

हम जिस इंडस्ट्री में काम कर रहे हैं, वहां के लगातार हो रहे बदलावों पर हमारी नजर होनी जरूरी है।

राजधानी रांची के धुर्वा डैम से पकड़ी गई ताजी मछलियों की बिक्री से पर्यटन के साथ पौष्टिक आहार की सुविधा भी प्राप्त हो जाती है।

तस्वीरः अजय सानी

कार्टून वर्ल्ड

स्पीड न्यूज

झाकोमयू ने जीएम को दिया आवेदन

कुजू। झारखंड कोलियरी मजदूर यूनियन के क्षेत्रीय सचिव रामकुमार सिंह ने कुजू परियोजना के अंतर्गत केओसीपी क्षेत्र में लगी आग के दायरे में रह रहे 9 नंबर धौड़ा के 20 से 25 घरों के सदस्यों को दुर्घटना से बचाने को लेकर महाप्रबंधन को आवेदन दिया है। जिसमें उन्होंने कहा कि केओसीपी कुजू क्षेत्र में लगी आग के कारण 100 से 150 मीटर के दायरे में रह रहे 9 नंबर धौड़ा के ग्रामीण कभी आकास्मिक दुर्घटना के शिकार हो सकते है। साथ ही कभी भी जमीनदोज हो सकता है। उन्होंने महाप्रबंधक से जल्द से जल्द से धौड़ा वासियों को सुरक्षित स्थान में बासने का मांग किया है। उन्होंने कहा कि मामले को लेकर इससे पहले भी मौखिक रूप से अवगत कराया जा चुका है, लेकिन पहल नहीं हुआ है। आवेदन की प्रतिलिपि मुख्यमंत्री, सीसीएल अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, रामगढ़ एसपी, झाकोमयू के जोनल अध्यक्ष, सचिव, कुजू ओपी को प्रेषित किया है।

सुगिया में धूमधाम से मनेगा सरहुल

कुजू। क्षेत्र के सुगिया के सरना स्थल में सरहुल को लेकर बुधवार को ग्रामीणों ने बैठक की। इसकी अध्यक्षता पूर्व पंचायत समिति सदस्य प्रेमचंद मुंडा व संचालन बीरबल मुंडा ने किया। बैठक में मौजूद ग्रामीणों ने प्रत्येक वर्ष की तरह इस बार भी चार अप्रैल को सरहुल पर्व धूमधाम के साथ मनाने का निर्णय लिया। साथ ही उसके सफल संचालन के लिए कमिटि का गठन किया गया। जिसमें सर्वसम्मति से प्रेमचंद मुंडा को अध्यक्ष, पुनीत करमाली सचिव एवं बीरबल मुंडा को कोषाध्यक्ष बनाया गया। वहीं 51 कार्यकारिणी सदस्य भी चुने गए जो सरहुल पूजा में अपना विशेष योगदान देंगे।

गुरूद्वारा में शुरू हुआ अखंड पाठ

भुरकुंडा (रामगढ़)। भुरकुंडा गुरुद्वारा का भव्य नवनिर्माण होने के अवसर पर श्रीगुरु सिंह सभा भुरकुंडा गुरूद्वारा में चल रहे चार दिवसीय समागम कार्यक्रम के दुसरे दिन बुधवार को श्री अखंड-पाठ साहिब का शुभारभ हुआ। इस अवसर पर गुरूद्वारा में गुरू ग्रंथ साहिब को आकर्षक फुलो और विद्युत सज्जा से सजाया गया। साथ ही गुरूद्वारा और मेनरोड में भी आकर्षक विद्युत सज्जा की गई है। मौके पर गुरूद्वारा के प्रधान लाल सिंह रंधावा उर्फ रिंकु ने बताया कि श्री अखंड-पाठ के समापन के बाद 21 मार्च शुक्रवार को नवनिर्मित भव्य गुरूद्वारा का उद्घाटन किया जायेगा। कार्यक्रम को सफल बनाने में परमजीत सिंह धामी, जीबु सिंह सैनी, प्रवीण शर्मा, जगतार सिंह, ग्रंथी हीरा सिंह, अमर सिंह, प्रधान लाल सिंह रंधावा उर्फ रिंकु, इंद्रजीत छाबडा, निशांत सिंह, नरेंद्र सिंह रेखी, गुरजीत सिंह रेखी, जसपाल सिंह, रिंकु धामी, करण सिंह, मोनु सिंह, यशवंत सिंह, अंग्रेज सिंह, नवजोत सिंह, डब्लु सिंह, बलजीत सिंह, राजु मल्होत्रा, जसवीर कौर, अनिता कौर, राज कौर, संगीता कौर, जया कौर, जसमीत कौर, हरभजन कौर, रिंकी कौर, शीतल कौर, पुनम कौर, बबली कौर, राजरानी कौर सहित दर्जनो सिख समुदाय के महिला पुरूष जुटे हैं।

लायंस क्लब ने बांटा शरबत

भुरकुंडा (रामगढ़)। भुरकुंडा गुरुद्वारा का भव्य नवनिर्माण होने के अवसर पर रिवर साइड गुरुद्वारा से श्री गुरू सिंह सभा भुरकुंडा गुरुद्वारा तक नगर-कीर्तन के साथ निकले गुरु ग्रंथ साहिब जी की पालकी शोभायात्रा के दौरान लायंस क्लब ऑफ भुरकुंडा द्वारा सबों को जोरदार स्वागत किया गया। इस अवसर पर लायंस क्लब द्वारा उत्सव मैरिज हॉल के समीप लगभग 400 से 500 सेवादारों के बीच शरबत का वितरण किया गया। वितरण कार्यक्रम को सफल बनाने में क्लब की अध्यक्ष रेखा वर्णवाल, सचिव अंजू देवी, कोषाध्यक्ष शिवा प्रसाद, जोन चेयरपर्सन एमजेएफ डॉ राजेंद्र महतो, जिला चेयरपर्सन अशोक सिन्हा, जिला चेयरपर्सन अखिलेश शर्मा, माला शर्मा, विजय वर्णवाल, डॉ. एमके मंजुल, एमजेएफ संजय जायसवाल, विजयंत कुमार, निर्मल अग्रवाल, सूबेदार एचएन यादव, दीनबंधु सिंह, प्रमोद शर्मा, रेनू जायसवाल, रेखा मंजुल, सरिता देवी आदि का विशेष योगदान रहा।

धनहारा में मजदूरों को मिला श्रमिक कार्ड

कुजू। महिला मजदूरों के बीच रामगढ़ नगर परिषद के वार्ड नंबर एक अंतर्गत धनहारा सांडी में बुधवार को झारखंड भवन एवं अन्य सनिर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड रांची के सौजन्य से श्रमिक कार्ड का वितरण किया गया। श्रमिक मित्र सुरेंद्र कुमार ने महिलाओं के बीच कार्ड दिया। मजदूरों के हित में सरकार के द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजना जैसे सेफ्टी कीट योजना, श्रमिक औजार सहायता योजना, साइकिल सहायता योजना, छात्रवृति सहायता योजना, प्रसूति सहायता योजना, अंत्येष्टि सहायता योजना, मृत्यु सहायता योजना, पेंशन योजना, आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई।

विकास पुरूष हैं रोशन चौधरी : सोनी

भुरकुंडा (रामगढ़)। बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी के सौजन्य से मेन रोड भुरकुंडा गुरूद्वारा के समीप सड़क के किनारे जमे कचरे की साफ-सफाई की गई। इस दौरान जवाहर नगर के पूर्व मुखिया प्रदीप मांझी, आजसू पार्टी के रामगढ़ जिला उपाध्यक्ष अनिल कुमार सोनी व संजू यादव के देख-रेख में जेसीबी मशीन और ट्रेक्टर से साफ-सफाई हुई। आजसू जिला उपाध्यक्ष अनिल सोनी ने कहा कि बड़कागांव विधायक रोशन लाल चौधरी सही मायने में विकास पुरूष हैं। विधायक रोशन लाल चौधरी पूरे बड़कागांव विधानसभा क्षेत्र के चहुंमुखी विकास के प्रति दृढ़संकल्पि हैं। उन्होंने स्वच्छता पर जोर देते हुए कहा कि अपने घर सहित

दनुआ घाटी : मौत की घाटी में तब्दील हुआ हाईवे

शंकर यादव

कार व ट्रक के बीच टक्कर, दो युवकों की मौत

चौपारण। झारखंड का चौपारण प्रखंड, जहां से गुजरने वाली दनुआ घाटी अब एक खूबसूरत पहाड़ी मार्ग नहीं, बल्कि मौत की घाटी बन चुकी है। सड़क पर बिखरा खून, चीख-पुकार करते घायल और बेबस खड़े लोग... ये अब यहां का दुर्भाग्यपूर्ण सच बन चुका है। हर गुजरते दिन के साथ हादसों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन एनएचएआई और प्रशासन की घोर लापरवाही इसे रोकने के बजाय मौत का खेल बनने दे रही है। मंगलवार को एनएच-2 (जीटी रोड) पर एक और दर्दनाक हादसा हुआ। धनबाद से औरंगाबाद जा रही एक अर्टिगा कार और बिहार की ओर जा रहे एक ट्रक में जबरदस्त टक्कर हो गई। इसी दौरान, बाराचट्टी की ओर जा रहे दो बाइक सवार युवक भी चपेट में आ गए। इस हादसे में राजपुर, चतरा निवासी आशिक कुमार (पिता-अशोक दांगी) की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कई अन्य लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। **घायलों की सूची:** तरन्नुम परवीन (पति- मो. रिजवान, धनबाद), मो. फरहद (पिता- मो. रिजवान, धनबाद), मो. असरफ (पिता - वसीम कुरैशी, धनबाद), सुनील यादव (पिता झ रामदास यादव, बोधगया) झ ट्रक चालक, जिनका पैर कट गया, अभिषेक कुमार (पिता -जागेश्वर, राजपुर, चतरा), मनशाद अंसारी (पिता -मुस्तफा, भदरिचक)। स्थानीय लोगों का कहना है कि दनुआ घाटी में सड़क दुर्घटनाएं आम हो गई हैं। खराब सड़क डिजाइन, अव्यवस्थित ट्रैफिक और हाईवे पर सुरक्षा उपायों की कमी ने इसे मौत का जाल बना दिया है। लेकिन एनएचएआई और प्रशासन गहरी नींद में सोए हुए हैं। इलाके में सिर्फ एक सरकारी एंबुलेंस और एक एनएचएआई की एंबुलेंस है। एनएचएआई की एंबुलेंस सिर्फ घटनास्थल से सामुदायिक अस्पताल तक ही चलती है, जबकि सरकारी एंबुलेंस जरूरत के समय अक्सर नदारद रहती है। इस कारण गंभीर रूप से घायलों को समय पर अस्पताल नहीं पहुंचाया जा सकता, जिससे कई की जान चली जाती है।

थाना प्रभारी ने पेश की इंसानियत की मिसाल : घटना के बाद जब एंबुलेंस नहीं पहुंची, तो चौपारण थाना प्रभारी अनुपम प्रकाश ने खुद अपनी गाड़ी से सभी घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, चौपारण पहुंचाया। उनकी इस मानवीय पहल की स्थानीय लोगों ने सराहना की और प्रशासन से मांग की कि दनुआ घाटी में जल्द से जल्द ट्रॉमा सेंटर और आपातकालीन चिकित्सा सुविधाएं शुरू की जाएं। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने चौपारण में एक ट्रॉमा सेंटर खोलने की मांग की। उनका कहना है कि जब तक इस क्षेत्र में उचित स्वास्थ्य सुविधाएं नहीं दी जातीं और हाईवे पर सुरक्षा मानकों को नहीं सुधारा जाता, तब तक दुर्घटनाएं होती रहेंगी और निर्दोष लोग अपनी जान गंवाते रहेंगे। एनएचएआई और प्रशासन आखिर कब तक इन हादसों को नजरअंदाज करता रहेगा? कब तक लोग इसी तरह अपनी जान गंवाते रहेंगे?

बालू और कोयला तस्करी पर लगाम लगायें : डीसी

अवैध मुहानों को जल्द करें बंद

खबर मन्त्र संवाददाता

रामगढ़। रामगढ़ जिले में अवैध माइनिंग को पूरी तरीके से बंद करना है। पिछले कुछ दिनों में अवैध माइंस को ध्वस्त किया गया है, जो बेहद सराहनीय कार्य है। यह बातें बुधवार को समाहरणालय में आयोजित जिला खनन टास्क फोर्स की बैठक में डीसी चंदन कुमार ने कही। उन्होंने कहा कि जिले में बालू, पत्थर और कोयले की तस्करी पर पूरी तरीके से अंकुश लगाना है। बैठक के दौरान सर्वप्रथम जिला खनन पदाधिकारी निशांत अभिषेक की ओर से अवैध खनन के विरुद्ध किए जा रहे कार्यों का उपायुक्त एवं पुलिस अधीक्षक सहित अन्य को पीपीटी के माध्यम से विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई।

अ उपायुक्त ने विगत कुछ समय में अवैध खनन पर रोक लगाने के लिए किए गए कार्यों की सराहना करते हुए और भी प्रभावी तरीके से अवैध खनन के विरुद्ध कार्रवाई करने का निर्देश दिया। उपायुक्त ने कहा कि कहीं से भी अवैध मुहानों से खनन होने संबंधित सूचना प्राप्त होने पर त्वरित रूप से उसे अच्छी तरह बंद कराने के लिए कार्रवाई करने का निर्देश दिया। अवैध खनन पर पूरी तरह से रोक सुनिश्चित करने एवं अवैध मुहानों की अच्छी तरह से डोजरिंग करने को लेकर उपायुक्त ने सभी संबंधित परियोजनाओं के महाप्रबंधकों एवं एरिया सिक्योरिटी ऑफिसर्स को कार्यों पर विशेष ध्यान देने को कहा। साथ ही अवैध मुहानों से किसी भी तरह का कोई भी खनन कार्य न होने देना सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। डीएमओ ने डीसी और एसपी को जानकारी देते हुए कहा कि रामगढ़ जिला अंतर्गत पैंकी एवं सिरका बालू घाट के संचालन की प्रक्रिया अंतिम चरण में है। जिस पर उपायुक्त के द्वारा प्रदूषण नियंत्रण पर्षद के अधिकारियों को बालू घाट के संचालन के लिए सीटीओ और सीटीई संबंधित आवेदन का निराकरण जल्द से जल्द करने एवं बालू घाट का संचालन शुरू करने का निर्देश दिया गया।

चुट्टूपाली घाटी में जल्द लगायें साइन बोर्ड

रामगढ़। जिला समाहरणालय सभाकक्ष में उपायुक्त रामगढ़ चंदन कुमार ने पुलिस अधीक्षक अजय कुमार की उपस्थिति में बुधवार को जिला स्तरीय सड़क सुरक्षा समिति की बैठक की। उपायुक्त ने चुट्टूपालू घाटी में लगाई गई लाइटोकी जानकारी ली। उपायुक्त ने दुर्घटनाओं को रोकने हेतु साइन बोर्ड लगाने के कार्य को जल्द से जल्द पूरा करने का निर्देश दिया। एसपी अजय कुमार ने सभी थाना प्रभारी को नियमित रूप से वाहन जांच अभियान चलाने का निर्देश दिया। ताकि लोगों में जागरूकता फैले और वाहन चलाते समय हेलमेट एवं सीट बेल्ट का प्रयोग करें जिससे हो रही दुर्घटनाओं को कम किया जा सके।

बरसोत में फिर कैश के साथ एटीएम चोरी

बरही। थाना क्षेत्र के बरसोत में चोरों ने एक बार फिर एसबीआई के एटीएम को निशाना बनाते हुए 6 लाख 17 हजार रुपये की चोरी कर ली। यह इस एटीएम में चोरी की तीसरी बड़ी वारदात है, लेकिन पुलिस अब तक अपराधियों तक नहीं पहुंच पाई है। मंगलवार देर रात, पुलिस गश्त के ठीक बाद, एक काले रंग की स्कॉर्पियो में आए चोरों ने कटर मशीन से एटीएम शटर का ताला काटा और अंदर घुस गए। चंद मिनटों में एटीएम के कैश बॉक्स को काटकर लाखों रुपये उड़ाकर फरार हो गए। पूरी घटना मकान मालिक मनोज प्रसाद के घर में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। वारदात के बाद पुलिस अधीक्षक अरविंद कुमार सिंह मौके पर पहुंचे और जांच शुरू कर दी, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो सकी है। बरसोत में लगातार हो रही इन घटनाओं से लोग डरे हुए हैं और पुलिस की नाकामी पर सवाल खड़े कर रहे हैं।

शांति समिति की बैठक करें थाना प्रभारी

सरहुल, ईद और रामनवमी को लेकर एसपी ने की बैठक, दिये कई निर्देश

रामगढ़। सरहुल, ईद और रामनवमी पर्व को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने को लेकर एसपी अजय कुमार ने बुधवार को सभी पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में एसपी ने सभी पुलिस अधिकारियों को आवश्यक निर्देश देकर उनके क्षेत्र की गतिविधि की जानकारी ली। साथ ही त्योहार को लेकर सतर्क रहने का निर्देश दिया। साथ ही अफवाह फैलाने वालों और संदिग्ध व्यक्तियों पर सख्त कार्यवाही करने का निर्देश दिया। एसपी ने कहा कि सभी थाना और ओपी प्रभारी सभी सम्प्रदायों के लोगों के साथ बैठक कर पर्व को शांतिपूर्ण एवं आपसी भाईचारे के साथ मनाने की अपील करें। सामाजिक और सांप्रदायिक सौहार्द के साथ विधि-व्यवस्था बनाये रखने की अपील जारी करें। उन्होंने कहा कि विवादित स्थलों एवं अन्य स्थलों पर जाकर शांति समिति की बैठक करें। इसके अलावा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी की उपस्थिति में थाना स्तर पर सभी समुदाय के जनप्रतिनिधि, गणमान्य व्यक्तियों एवं अखाड़ों के साथ बैठक करें। एसपी ने कहा कि जुलूस के रास्ते का सत्यापन करें तथा यह सुनिश्चित करें कि पूर्व से चयनित रूट से ही जुलूस निकले। किसी भी जुलूस या अखाड़ों के द्वारा किसी भी नये रास्ते का प्रयोग नहीं किया जाए। सभी अखाडों के वॉलिंटियर्स का नाम और संपर्क सूत्र संधारित करना सुनिश्चित करें। पूर्व से चिह्नित असामाजिक तत्वों और सांप्रदायिक काण्डों में जेल से बाहर आये अभियुक्तों की वर्तमान गतिविधि का सत्यापन कर आवश्यकतानुसार 126 बीएनएसएस के तहत निरोधात्मक कार्रवाई करें। उन्होंने कहा कि सभी डीजे मालिकों को लाउडस्पीकर एक्ट एवं आपत्तिजनक, अश्लील गाना न बजाने के संबंध में नोटिस निर्गत करें।

पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक करते एसपी

कुजू रेलवे साइडिंग से उड़ते धूल से ग्रामीण परेशान

खबर मन्त्र संवाददाता

ग्रामीणों को सांस लेने में हो रही है दिक्कत

कुजू। कुजू जैसे घनी आबादी क्षेत्र में दो साइडिंग चल रहा है। पहला कुजू रेलवे साइडिंग तथा दूसरा सीसीएल कुजू रेलवे साइडिंग है। साइडिंग के खुलने से लोगों में रोजगार की आस जगी थी। लेकिन दोनों ही साइडिंग से लोगों को सिर्फ प्रदूषणयुक्त धूल खाने को मिल रहा है। कुजू रेलवे साइडिंग में रोजाना कोयला व आयनओर का रैक लोडिंग व अनलोडिंग होता है। जिससे काफी मात्रा में प्रदूषण होता है। वहीं सीसीएल साइडिंग में भी रोजाना कोयला का रैक लोडिंग होता है। दोनों ही साइडिंग से प्रतिदिन लगभग 4 से 5 हजार टन कोयला लोड व अनलोड होता है। कुजू रेलवे साइडिंग में सीसीएल कुजू क्षेत्र के अलावे गिद्दी सी, घाटो, रेलीगढ़ा, उरीमारी, न्यू बिरसा, ओल्ड बिरसा, अमरपाली, पाथाडीह, कठारा, पिपरवार, तापिन नॉर्थ, साउथ आदि कोलियरियों से रोजाना डंपर, हाइवा व ट्रकों के माध्यम से कुजू रेलवे साइडिंग में कोयला गिराया जाता है। साथ ही रैक के माध्यम से आयरनओर साइडिंग में गिराया जाता है जो स्थानीय पावर प्लांट में भेजा जाता है। कुजू रेलवे साइडिंग का कार्य से हो रहे प्रदूषण से त्रस्त ग्रामीणों का कहना है कि जब से कुजू रेलवे साइडिंग खुला है, तब से प्रदूषण के कारण जीना मुश्किल हो गया है। प्रदूषण रोकथाम के लिए कोई उपाय नहीं किए जाने से हमलोगों के जीवन के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। यहां के विस्थापित व प्रभावित ग्रामीणों का कहना है कि रेलवे साइडिंग में विस्थापितों को 80 एकड़ से अधिक जमीन रेलवे ने अधिग्रहण किया है। बाकी बचा हुआ भूमि भी प्रदूषण के कारण खेती योग्य नहीं रहा। फलस्वरूप सारा जमीन बेकार हो गया है। इसके अलावे आस-पास के आबादी वाले क्षेत्र भी आयरनओर व कोयले के धूल कण से प्रदूषित हो रहा है। ठेकेदार द्वारा मनमाने तरीके से कार्य किया जा रहा है। वहीं रैक लोडिंग व अनलोडिंग के क्रम में ध्वनि प्रदूषण भी काफी मात्रा में होता है। जिससे लोगों को रात्रि में सोने में काफी परेशानी होती है। आयरनओर व कोयला के उड़ते धूल के कारण पास के तालाब व कुंओं के पानी में प्रदूषण की मोटी परत जम गयी है। कुजू रेलवे साइडिंग में रोजाना रैक लोडिंग व अनलोडिंग से काफी मात्रा में प्रदूषण हो रहा है। जिसके कारण स्थानीय लोगों को सांस लेने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। लोगों का कहना है रैक ठेकेदार द्वारा पानी के छिड़काव किये बिना ही रैक लोडिंग व अनलोडिंग कर रहे है, जिससे काफी मात्रा में कोयला व आयरनओर का धूल उड़ रहा है। वही घर के छत में धूल की मोटी परत जम जाती है, साथ ही कपड़ो पर धूल जम जा रहा है।

ठेकेदार पानी छिड़काव किये बिना ही करते है लोडिंग व अनलोडिंग

एक नजर में

डीलर घर-घर जाकर करेंगे ई-केवाईसी

दारु। प्रखंड मुख्यालय सभागार में खाद्य सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता मामलों के विभाग की बैठक बुधवार को हुयी। इसकी अध्यक्षता प्रखंड विकास पदाधिकारी हारून रसीद ने की। बैठक में प्रखंड के डीलर और लाभुक शामिल हुए। बीडीओ और प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी आशीष कुमार ने बताया कि सभी राशन कार्ड धारकों के लिए ई-केवाईसी कराना अनिवार्य है। इसके लिए 31 मार्च अंतिम तिथि तय की गई है। 21 से 27 मार्च तक ई-केवाईसी सप्ताह मनाया जाएगा, जिसके दौरान डीलर एक फॉर्म लेकर घर-घर जाएंगे और छूटे हुए लोगों का ई-केवाईसी करेंगे। प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी ने बताया कि जिन लाभुकों के नाम, आधार कार्ड या मोबाइल नंबर में त्रुटि है, वे प्रखंड मुख्यालय आकर सही करवा सकते हैं। बैठक में बड़ा बाबू नीलम कुमारी, आशीष चौरसिया, डीलर रामप्रकाश वर्मा, मो. इरशाद, राजेंद्र राम, बनेश्वर कुशवाहा, मो. टिंकू, मोहन कुशवाहा, धनपत कुशवाहा, रघु महतो, त्रिभुवन प्रसाद, सीताराम प्रसाद समेत कई लोग मौजूद थे।

डीलरों को समय पर राशन वितरण का निर्देश

बरही। प्रखंड कार्यालय सभागार में खाद्य सार्वजनिक वितरण एवं उपभोक्ता विभाग के निर्देश पर बुधवार को प्रखंड स्तरीय प्रशिक्षण सह कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में बीडीओ जयपाल महतो, प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी संजय यादव सहित प्रखंड के राशन डीलरों ने भाग लिया। कार्यशाला में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा योजना 2016 और झारखंड राज्य खाद्य सुरक्षा योजना 2021 की विस्तृत जानकारी दी गई।प्रखंड आपूर्ति पदाधिकारी ने सरकार की प्रमुख योजनाओं जैसे नमक, चीनी, हरा राशन कार्ड, दाल और सोना सोबरन धोती-साड़ी योजना की जानकारी दी। डीलरों को निर्देश दिया गया कि वे योग्य लाभुकों को समय पर राशन वितरित करें और ई-केवाईसी को अनिवार्य रूप से पूरा करें। साथ ही, डीलरों को यह भी कहा गया कि वे उन कार्डधारियों की सूची बनाएं, जो राशन के लिए पात्र नहीं हैं।अधिकारियों ने चेतावनी दी कि अयोग्य लाभुकों को अपना राशन कार्ड स्वेच्छा से सरेंडर कर देना चाहिए, अन्यथा उनके खिलाफ कार्रवाई होगी। बैठक में डीलर एसोसिएशन के अध्यक्ष डोमन पांडे, सचिव केदार यादव, बीरेंद्र कुमार, मो. इरफान रजा, अर्जुन राम, गणेश साहू, दिलावर हुसैन सहित कई लोग मौजूद थे।

बरही में केवाईसी-एनपीसीआई शिविर 24 से

बरही। प्रखंड सह अंचल कार्यालय में 24 से 29 मार्च तक केवाईसी, एनपीसीआई और आधार लिंकिंग से संबंधित छह दिवसीय प्रशिक्षण शिविर लगेगा। बीडीओ जयपाल महतो ने बताया कि कई सरकारी योजनाओं, जैसे मनरेगा, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, किसान सम्मान योजना, आदि का भुगतान डीबीटी के माध्यम से होता है। लेकिन कई लाभुकों के बैंक खातों में केवाईसी और एनपीसीआई मैपिंग नहीं होने के कारण भुगतान में समस्याएं आ रही हैं। बीडीओ ने सभी बैंकों को पत्र जारी कर निर्देश दिया है कि वे 21 मार्च तक अपने प्रतिनिधियों के नाम भेजें और शिविर में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें। शिविर में बैंकिंग प्रक्रियाओं को सरल बनाने और लाभुकों को उचित मार्गदर्शन देने पर जोर दिया जाएगा।

हुटवा नदी पर पुल बनाये सरकार :मनोज यादव

बरही। बरही के दर्जनों गांव बरसात के दिनों में मुख्य मार्ग से कट जाते हैं, जिससे ग्रामीणों को भारी परेशानी होती है। खासकर छात्रों और कामकाजी लोगों को वैकल्पिक और लंबा रास्ता अपनाना पड़ता है। इस समस्या को विधानसभा में उठाते हुए विधायक मनोज यादव ने ग्रामीण विकास मंत्री से पुल निर्माण की मांग की। उन्होंने बताया कि लठिया और हुटवा को जोड़ने वाली हुटवा नदी पर पुल नहीं होने से ग्रामीणों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। विधायक ने बरसोत स्थित पार नदी पर भी पुल बनाने की आवश्यकता जताई, जिससे कई गांवों की दूरी जीटी रोड से कम हो जाएगी। पार नदी पर पुल बनने से लखना, दुलमाहा, विजैया, ओरपरता, डपोक समेत कई गांवों को सीधा लाभ मिलेगा। ग्रामीण विकास मंत्री ने इस मांग को गंभीरता से लेते हुए विभागीय नीति और वित्तीय संसाधनों के आधार पर आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

विस्थापित के लिए बने स्कूल व अस्पताल

बड़कागांव। विधायक रोशन लाल चौधरी ने विधानसभा में विस्थापितों के लिए बनी सुविधाओं को बहाल करने की मांग की। उन्होंने कहा कि एनटीपीसी द्वारा आरएनआर कॉलोनी, ढेंगा बड़कागांव में तीन मिडिल स्कूल, एक प्ले स्कूल और एक अस्पताल बनाया गया था, लेकिन इनका सही उपयोग नहीं हो रहा है। अस्पताल को सीआईएसएफ का कार्यालय बना दिया गया है, और स्कूलों को आवासीय क्वार्टर में बदल दिया गया है। विधायक ने बताया कि विस्थापित परिवारों को आवंटित 2700 क्वार्टरों में से केवल 200 क्वार्टर ही दिए गए हैं, जबकि बाकी एनटीपीसी कर्मचारियों के कब्जे में हैं। यह विस्थापन एवं पुनर्वास नीति का खुला उल्लंघन है। विधानसभा में मांग उठाते हुए विधायक ने कहा कि स्कूल और अस्पताल को विस्थापितों के लिए फिर से शुरू किया जाए। इसके अलावा, सभी प्रभावित परिवारों को आरएनआर कॉलोनी में उनके हक के क्वार्टर दिए जाएं। उन्होंने सरकार से एनटीपीसी को विस्थापितों की मूलभूत सुविधाएं बहाल करने का निर्देश देने की मांग की।

चौपारण में आधार सेवा ठप, जनता परेशान

चौपारण। प्रखंड में आधार कार्ड सेवाएं ठप होने से आम जनता को भारी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। 275 से अधिक गांव और 26 पंचायतों में नया आधार कार्ड बनवाने और पुराने कार्ड में सुधार कराने का काम महीनों से बंद पड़ा है। इसकी वजह से लोगों को सरकारी योजनाओं का लाभ लेने, राशन कार्ड बनवाने, स्कूल नामांकन और बैंकिंग सेवाओं में परेशानी हो रही है।चौपारण प्रखंड में आधार कार्ड सेवाओं के लिए सिर्फ प्रखंड परिसर में एक केंद्र है, लेकिन वह भी अक्सर बंद रहता है। दूर-दराज से आने वाले ग्रामीण कई बार निराश होकर लौट जाते हैं। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से अधिक आधार केंद्र खोलने की अपील की ताकि सभी को समय पर सुविधा मिल सके। यदि जल्द समाधान नहीं निकला, तो ग्रामीणों ने आंदोलन की चेतावनी दी है।

मधुलता की मौत की हो जांच : अशोक पांडे

टाटीझरिया। दीभा मोहल्ले की मधुलता देवी की संदिग्ध मौत के बाद मामला तूल पकड़ता जा रहा है। कान्यकुब्ज ब्राह्मण महासमिति झारखंड प्रदेश के पदाधिकारीगण मंगलवार को ग्राम झरपों, टाटीझरिया पहुंचे और मृतका के परिजनों से मुलाकात कर पूरे मामले की जानकारी ली। मधुलता के पिता अशोक पांडे ने बताया कि उन्होंने अपनी बेटी की शादी 10 जुलाई 2024 को चतरा निवासी राजेश शर्मा से कराई थी। शादी के बाद से ही ससुराल पक्ष दहेज के लिए प्रताड़ित कर रहा था। इस पर पंचायत भी हुई, जिसमें ससुरालवालों ने मधुलता को अच्छे से रखने का लिखित आश्वासन दिया था। लेकिन 16 मार्च 2025 को उन्हें खबर मिली कि बेटी की तबीयत खराब है। जब वे चतरा पहुंचे, तो देखा कि उनकी बेटी की मौत हो चुकी थी। संगठन के पदाधिकारियों ने ऐलान किया कि जल्द ही चतरा पुलिस अधीक्षक से मिलकर कड़ी कार्रवाई की मांग की जाएगी।

चिकुणगुनिया और डेंगू के अंतर को समझें

मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया ये सभी बीमारियां मच्छर के काटने से होती हैं बावजूद इसके इन बीमारियों के लक्षण में काफी फर्क होता है।हैरानी की बात यह है कि हर साल मौसम बदलने पर ये बीमारियां अपने चरम पर रहती हैं पर ज्यादातर लोगों को इन बीमारियों के बीच का फर्क नहीं पता होता है।जिसके आभाव में वो अपना उपचार सही ढंग से नहीं करवा पाते हैं। आइए जानते हैं आखिर किस तरह अलग होता है डेंगू का वायरस चिकनगुनिया के वायरस से और क्या है इसके घरेलू उपचार। चिकनगुनिया और डेंगू के लक्षण

-चिकनगुनिया और डेंगू में आने वाले बुखार के लक्षण लगभग एक जैसे ही होते हैं। हालांकि माना जाता है कि डेंगू का वायरस चिकनगुनिया के वायरस से ज्यादा खतरनाक होता है। डेंगू में लगातार गिरते प्लेटलेट्स की वजह से व्यक्ति को बेहद कमजोरी महसूस होती है। जबकि चिकनगुनिया से व्यक्ति 1 से 12 दिन तक पीड़ित रहता है। इसकी वजह से शरीर में कई सालों तक दर्द बना रहता है।

- चिकनगुनिया के मरीज को जोड़ों में तेज दर्द होता है। यही दर्द डेंगू और चिकनगुनिया के मरीजों को लक्षणों में एक-दूसरे से अलग करता है। कुछ लोगों को इस दर्द से राहत पाने में 6 महीने से 1 साल तक का वक्त लग जाता है।चिकनगुनिया में हथेलियों और पावों के साथ पूरे शरीर पर रेशैज हो जाते हैं। वहीं, डेंगू में चेहरे और चमड़ी पर लाल रेशैज होते हैं।

-बुखार के कारण आमतौर पर भी मरीज के शरीर में दर्द होता है, लेकिन चिकनगुनिया से पीड़ति व्यक्ति के पूरे शरीर में काफी दर्द रहता है। मरीज का पूरा शरीर दर्द से टूट रहा होता है। सबसे ज्यादा तकलीफ जोड़ों के दर्द के कारण होती है।डेंगू में दर्द अधिक होने की वजह से ब्लिडिंग और सांस लेने में भी दिक्कत आ सकती है।

-चिकनगुनिया के मरीज के शरीर पर लाल रंग के रैशेज हो जाते हैं। रोगी के शरीर पर खुजली हो सकती है। उसके शरीर पर चकत्ते भी निकल सकते हैं।

- चिकनगुनिया वायरस का सीधा असर जॉइंट्स पर होता है। जिसकी वजह से लोग दर्द से बेचैन हो जाते हैं।

बचाव

- चिकनगुनिया से बचने के लिए फिलहाल कोई टीका अभी तक उपलब्ध नहीं हो पाया है। इस बीमारी से बचने का सबसे प्रभावी तरीका है खुद को मच्छरों से बचाए रखें।

- अपने घर के आसपास की जगह पर सफाई रखें।

- घर के पास पानी ना जमा होने दें। बात दें, डेंगू और चिकनगुनिया के मच्छर साफ पानी में ही पैदा होते हैं।

- चिकनगुनिया के मच्छर ज्यादातर दिन के समय काटते हैं। इसलिए सिर्फ रात ही नहीं बल्कि दिन में भी मच्छरों से बचाव जरूरी है। इनसे बचने के लिए मच्छरदानी का इस्तमाल करें।

- इस मौसम में कोशिश करें कि हमेशा पूरी बाजू के ही कपड़े पहनें।

- लक्षणों के आधार पर डॉक्टर से सलाह लेकर ही दवा लें। डॉक्टर को दिखाए बिना अपनी मर्जी से ही कोई दवा लेने की भूल बिल्कुल ना करें।

पचार-

औषधीय गुणों से भरी तुलसी का प्रयोग, चिकनगुनिया में अमृत के समान है। नीम की गिलोय, सोंठ, छोटी पीपल और गुड़ के साथ तुलसी का काढा बनाकर चिकनगुनिया के रोगी को पीने के लिए दें। मात्र 3 खुराक में यह घरेलू दवा चिकगुनिया के रोगी को इस बीमारी से छुटकारा दिला सकती है।

आयुर्वेद विशेषज्ञों के अनुसार गिलोय एक आयुर्वेदिक जड़ी बूटी है, डेंगू में इसके पत्तों के रस का सेवन करने से लाभ मिलता है। डेंगू का बुखार 5 से 6 दिन के अंदर अपना असर दिखाना शुरू कर देता है। जिसकी वजह से शरीर में तेजी से प्लेटलेट्स का स्तर कम होने लगता है। इससे निजात पाने के लिए गिलोय और 7 तुलसी के पत्तों का रस पीने से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह रक्त के प्लेटलेट्स का स्तर भी बढ़ाता है। गिलोय की कड़वाहट को कम करने के लिए इसे किसी अन्य जूस में मिलाकर पी सकते हैं। इंटरनेशनल मेडिकल एसो. के मुताबिक अगर डेंगू के मरीज का प्लेटलेट्स काउंट 10,000 से ज्यादा हो तो प्लेटलेट्स ट्रांसफ्यूजन की जरूरत नहीं होती और ना ही यह खतरे का संकेत है। लेकिन अगर डेंगू के मरीज का प्लेटलेट्स काउंट 10,000 से कम होने लगें तो खतरनाक हो सकता है।डेंगू खतरनाक बीमारी है, लेकिन इस बीमारी से डरने की नहीं, बल्कि बचने की जरूरत है। देखिए, कैसे फैलती है ये बीमारी, क्या कारण हैं और कैसे होगा बचाव?बहुत से लोगों को नहीं पता कि डेंगू का मच्छर गंदी नालियों में नहीं बल्कि साफ सुथरे पानी में पनपते हैं। साफ सुथरे शहरी इलाकों में रहने वाले लोगों को इसका ज्यादा खतरा रहता है। अगर आप को डेंगू हो जाए तो घबराएं नहीं, भरपूर मात्रा में तरल आहार लें, क्योंकि डिहाइड्रेशन से ही बीमारी खतरनाक होती है और अगर डेंगू के मरीज का प्लेटलेट्स काउंट 10,000 से ज्यादा हो तो प्लेटलेट्स ट्रांसफ्यूजन की जरूरत नहीं होती।डेंगू में तेज बुखार के साथ नाक बहना, खांसी, आखों के पीछे दर्द, जोड़ों के दर्द और त्वचा पर हल्के रैश होते हैं। हालांकि कुछ लोगों में लाल और सफेद निशानों के साथ पेट खराब, जी मिचलाना, उल्टी आदि हो सकता है।

मौसम के अनुसार करें भोजन नहीं तो होंगे बीमार

मौसम के अनुसार ही उपयुक्त भोजन का सेवन और रहन-सहन, उसके अनुसार चेष्टा और खानपान ऋतुचर्या है। वर्ष की छह ऋतुओं में प्रत्येक ऋतु दो माह की होती है। साधक से अपेक्षा की गई है कि वह उस समय चल रही ऋतु के अनुसार ही अपना खानपान और व्यवहार रखे।व्यवहार या आचरण में ध्यान रहे, इसलिए समझने और ध्यान में रखने के लिहाज से प्रत्येक ऋतु का एक प्रधान रस माना गया है। ऋतुचर्या के लिए निर्धारित उसी रस के पदार्थों का अधिक सेवन करने से शरीर मन और आत्मचेतना का अच्छा पोषण होता है। इन दिनों ऋतुओं के मान से वर्षा का समय है।

आयुर्वेद के अनुसार, इन दिनों पाचन शक्ति क्षीण हो जाती है। विकृति के कारण पाचन क्रिया की कमजोरी और बढती है। इसलिए जठराग्नि को जगाना, भूख और पाचन को संतुलित रखना और दोषों का शमन करना आयुर्वेद के लिहाज से महत्वपूर्ण है। इसके लिए आयुर्वेद के उपदेष्टा आसानी से पचने वाले आहार लेने की हिदायत देते हैं।

उनके अनुसार, दालें, सब्जियों का सूप, पुराना अन्न, पतला दही लिया जा सकता है। पंचकर्म में की जाने वाली शुद्धि क्रियाएं, सुगंधियों का प्रयोग भी इस ऋतु में करने का

निर्देश है। दिन में सोना, ज्यादा थकना और धूप में घूमना इन दिनों मना किया गया हैं। सावन महीने में लोग भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए अलग-अलग चीजें अर्पित करते हैं। हिंदू धर्म के अनुसार सोमवार के व्रत 3 तरह के होते हैं। सावन सोमवार, सोलह सोमवार और सोम प्रदोष। पूर्णिमा से की जाने वाली गणना के अनुसार 28 जुलाई से सावन आरंभ हो रहा है और पहला सावन सोमवार 30 जुलाई को है। पूर्णिमा की गणना के अनुसार इस बार 30 जुलाई, 6 अगस्त और 13 अगस्त और 20 अगस्त समेत चार सोमवार होंगे।वैसे तो सोमवार के व्रत की विधि भी बाकी व्रतों की तरह ही होती है। लेकिन इस व्रत को श्रावण माह से शुरू करना शुभ माना जाता है। बात अगर खान-पान की करें तो बहुत कम ही लोग जानते हैं कि इस महीने कई ऐसी चीजे हैं जिनका सेवन करने से आपकी सेहत को फायदा नहीं नुकसान पहुंचता है।आइए जानते हैं क्या...हरी पत्तेदार सब्जियां धार्मिक मान्यताओं के अनुसार सावन में हरी पत्तेदार सब्जियां बिल्कुल नहीं खानी चाहिए। दरअसल ये शरीर में वात को बढाती हैं। इसके अलावा मानसून के दिनों में इनमें बैक्टीरिया और कीड़े भी देखे जा सकते हैं। इसलिए सावन में हरी पत्तेदार सब्जियां खाने की मनाही होती है।

बालों का पकना है नुकसानदेह

जब मैं 14-15 साल की थी, तभी मेरे बाल सफेद होने लगे थे। मुझे या फिर मेरे पिता को इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ा, लेकिन मेरी मां काफी परेशान रहने लगी थी। वो मुझे डॉक्टर के पास ले कर गईं। डॉक्टर ने कैल्शियम सप्लीमेंट्स खाने की सलाह दी, लेकिन कुछ नहीं बदला। इस बात को अब तकरीबन 15 साल बीत चुके हैं। ये कहानी है चंडीगढ.रहने वाली विंणका कुंडु की। विंणका के बाल छोटे हैं लेकिन आधे पके और आधे काले। पहली नजर में ये उनका फैशन स्टेटमेंट लग सकता है, लेकिन उनका कहना है कि ऐसे बाल पाने के लिए उन्होंने पार्लर जा कर कुछ करवाया नहीं है बल्कि ये खुद से हुआ है। कम उम्र में बाल सफेद होना एक नया ट्रेंड सा बनता जा रहा है। गूगल ट्रेंड के सर्च इंटरेस्ट से पता चला है कि पिछले दस सालों में गूगल पर 'ग्रे हेयर' यानी 'सफेद बाल' सर्च करने वालों की तादाद काफी बढी है। खासतौर पर 2015 के बाद से।

20 साल के सत्यभान भी उनमें से एक हैं जो गूगल पर इस उम्र में सफेद बाल पर रिसर्च करते रहते हैं। सत्यभान भी टीन ऐज में थे जब उन्होंने अपना पहला सफेद बाल देखा। उस वक्त की अपनी पहली प्रतिक्रिया को याद करते हुए वो बताते हैं, ₹मुझे थोड़ी चिंता हुई, फिर मैंने गूगल किया। आखिर इसकी वजह क्या है? मेरे पिता खुद एक कार्डियोलॉजिस्ट हैं, उनकी सलाह पर मैं डॉक्टर से मिलने भी गया, फिर पता चला कि मेरे खाने-पीने की आदत, बालों पर आए दिन नए तरह के प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल कई कारण है जिससे ऐसा हुआ होगा।₹

स्किन और हेयर एक्सपर्ट डॉक्टर दीपाली भारद्वाज कहती हैं, ₹कम उम्र में बाल सफेद होना एक बीमारी है। डॉक्टरी भाषा में इसे केनाइटिस कहते हैं।₹ इंडियन जरनल ऑफ डर्मेटोलॉजी में 2016 में छपे शोध के मुताबिक भारत में केनाइटिस के लिए 20 साल की उम्र तय की गई है। भारतीयों में 20 साल से या उससे पहले बाल सफेद होना शुरू हो जाए, तो माना जाता है कि उसे ये बीमारी है।

दिल्ली के सफदरजंग में कई सालों तक प्रैक्टिस करने वाले ट्राइकॉलोजिस्ट (बालों के डॉक्टर) डॉक्टर अमरेन्द्र कुमार कहते हैं केनाइटिस में हेयर कलर पिगमेंट पैदा करने वाले सेल में दिक्कत पैदा हो जाती है, जिसकी वजह से बाल सफेद होने लगते हैं। इसके पीछे कई कारण होते हैं। डॉक्टर अमरेन्द्र के मुताबिक कई बार कम उम्र में बाल सफेद अनुवांशिक (जेनेटिक) कारण से होते हैं तो कई बार खाने-पीने में प्रोटीन और कॉपर की कमी और हार्मोनल वजहों से भी ये दिक्कत पैदा हो सकती है। शरीर में हीमोग्लोबिन का कम होना, एनीमिया, थाइरॉयड की दिक्कत, प्रोटिन की कमी इन सब वजहों से बाल कम उम्र में सफेद हो सकते हैं। वार्णिका जब डॉक्टर से मिलीं तो उन्हें पता चला कि बालों की उनकी दिक्कत जेनेटिक है। अपने पिता के बारे में बताते हुए विंणका कहती हैं, ₹मेरे पिता के बाल भी कम उम्र में ही सफेद हो गए थे। मेरी एक छोटी बहन भी है, उसके बाल भी मेरी ही तरह हैं। हमारे परिवार में ये दिक्कत कइयों के साथ है।₹

दुनिया में कई जगहों पर कम उम्र में सफेद बाल क्यों होते हैं, इस पर शोध हुआ है। ब्रिटेन के यूनिर्विसटी ऑफ ब्रैडफोर्ड के प्रोफेसर डेसमंड टोबीन के मुताबिक यूरोप में रहने वालों के लिए 20 साल की उम्र में बाल का सफेद होना आम बात है। प्रोफेसर टोबीन हेयर और स्किन पिगमेंट स्पेशलिस्ट हैं। इस विषय पर किए गए कई शोध के अध्ययन के बाद वो इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि मानव शरीर में पाए जाने वाले 'जीन', हमारे बालों के रंग-रूप के लिए जिम्मेदार होते हैं। रिसर्च से ये भी पता चलता है कि अलग-अलग नस्ल के लोगों में अलग-अलग समय पर बाल सफेद होने का ट्रेंड है। अफ्रीका और पूर्वी-एशियाई नस्लों में बाल एक उम्र के बाद ही सफेद होने शुरू होते हैं।

भारत में 40 की उम्र के बाद बाल सफेद हों तो इसे बीमारी नहीं माना जाता। कम उम्र में सफेद बाल पर अलग-अलग लोगों की प्रतिक्रिया भी अलग-अलग है। कई लोग कम उम्र में सफेद बाल को स्वीकार नहीं करते। उसे छुपाने की कोशिश करते हैं। कई लोग इसे फैशन स्टेटमेंट या फिर स्टाइल स्टेटमेंट में बदल देते हैं।

सत्यभान उनमें से हैं जो 20 साल की उम्र में सफेद़ बाल के साथ नहीं रहना चाहते। इसलिए उन्होंने बाल डाई करना शुरू कर दिया है। हालांकि डॉक्टर दीपाली इसे सही नहीं मानती। उनके मुताबिक इससे बालों को ज्यादा नुकसान पहुंचता है। थोड़े वक्त के लिए ये असर जरूर दिखते हैं, लेकिन जैसे ही आप इनका इस्तेमाल बंद करते हैं वो बाल वापस सफेद होने लगते हैं।

इन रोगों में न करें पपीता का सेवन, होगा नुकसान

इस बात से तो हम सब अच्छे से वाकिफ है कि पपीता हमारी सेहत के लिए काफी फायदेमंद होता है। इसमें मौजूद विटामिन हमें कई बीमारियों से दूर रखने में मदद करते हैं। मैग्नीशियम, पोटेशियम, नियासिन, प्रोटीन, कैरोटीन और प्राकृतिक फाइबर से भरपूर पपीता हमारी पाचन क्षमता को बढावा देता है। पर क्या आप जानते हैं कि अधिक मात्रा में इसके सेवन से हमे यह नुकसान भी पहुंचा सकता है। आइए जानते हैं किन लोगों को इसके सेवन से बचना चाहिए...प्रेगनेंट महिलाओं को इसके सेवन से बचना चाहिए पपीता खासकर कच्चा पपीते को ज्यादा मात्रा में खाना प्रेगनेंट महिलाओं के लिए हानिकारक साबित हो सकता है, क्योंकि इसके सेवन से आपका गर्भशय के सिकुड़ने की संभावना काफी हद तक बढ. जाती है और जिस वजह से गर्भपात हो सकता है। बल्ड प्रेशर के मरीजों को बनाकर रखनी चाहिए दूरी पपीता का सेवन करना बल्ड प्रेशर के पेशेंट्स के लिए नुकसानदायक साबित होता है। जो लोग बल्ड प्रेशर की दवाई ले रहे हैं उन्हें पपीते का सेवन करने से बचना चाहिए। यह उनके लिए हानिकारक साबित हो सकता है।किडनी में स्टोन पपीता विटामिन सी एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर होता है जो शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढाता है। यह हमें कई बीमारियों से दूर रखने में मदद करता है, लेकिन एक अध्ययन से सामने आया है कि विटामिन सी के अत्यधिक सेवन से किडनी में पथरी की समस्या पैदा हो सकती है।स्किन पर गलत प्रभाव

अगर आपकी स्किन खासकर आपकी हाथ पीले पड़ रहे हो तो आप कैरोटेनेमिया नामक त्वचा रोग से पीड़ति हो सकते हैं। इससे आंखों, तलवों और हथेलियों का रंग पीला भी हो सकता है। पपीता में बीटा कैरोटीन मौजूद होता है जो एलर्जी

का कारण बन सकता है। इसके अत्यधिक सेवन से हमारी स्किन पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। स्तनपान के समय

बच्चों को स्तनपान कराने वाली महिलाओं को पपीता नहीं खाना चाहिए। इसके अलावा 1 साल तक नवजात शिशु को भी पपीता नहीं खिलाया जाना चाहिए।दस्त में नहीं दस्त से परेशान लोगों को पपीता का बिल्कुल सेवन नहीं करना चाहिए। इसके अलावा जो लोग हार्ट संबंधित परेशानी के चलते रोजाना खून पतला करने की गोली लेते हैं उन्हें भी पपीते का सेवन नहीं करना चाहिए।

हड्डियों को मजबूत बनाने के टिप्स

हड्डियों को मजबूत बनाने के लिए आपको कैल्शियम और विटामिन डी की जरूरत होती है। इन दोनों की कमी से हड्डियां कमजोर और खोखली हो जाती हैं। लेकिन बहुत कम ही लोग इस बात को जानते होंगे कि आपके फेवरेट खाने की लिस्ट में कई ऐसी चीजें भी शामिल होती हैं जिसका सेवन अधिक करने से आपकी हड्डियों की डेंसिटी कम हो जाती हैं मतलब हड्डियां खोखली होने लगती हैं। आइए जानते हैं ऐसी ही कई चीजों के बारे में। नमक

ज्यादा मात्रा में नमक का इस्तेमाल करने से हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। दरअसल नमक में सोडियम होता है जो शरीर में जाने के बाद कैल्शियम को यूरीन के माध्यम से शरीर से बाहर निकाल देता है। **चॉकलेट :** ज्यादा चॉकलेट खाने से भी हड्डियां कमजोर हो सकती हैं। इसे खाने से शरीर में शुगर और ऑक्सलेट की मात्रा बढ.जाती है जिससे कैल्शियम शरीर में अवशोषित नहीं हो पाता।शराब

शराब पीने से शरीर में कैल्शियम की मात्रा कम होने लगती है। जो हड्डियों की कमजोरी का कारण बनती है।कोल्ड **ड्रिक्स** : कोल्ड ड्रिक्स में कार्बन डाई ऑक्साइड और फास्फोरस पाया जाता है जो हड्डियों को खोखला कर देता है।

चाय और कॉफी : चाय और कॉफी का ज्यादा सेवन करने से भी हड्डियां कमजोर हो जाती हैं। इसमें मौजूद कैफीन हड्डियों की सेहत के लिए बहुत हानिकारक होता है।

ई है टाटा नगरिया, देख बबुआ...

जमशेदपुर के टाटा स्टील में कार्यरत कुछ तकनीकी प्रशिक्षुओं ने बिहार की कला और संसति को बढ़ावा देने के लिए एक मंच बनाने के लिए काम करना शुरू किया। उन लोगों में एसप़ी.सिंह, जेप़ी. वर्मा, आरप़ी.त्रिपाठी, जेएन.सिंह, रामेश्वर प्रसाद और स्वर्गीय लाला शंभू शरण शामिल थे। एचस़ी. बहादुर, एसए़.मुर्तजा, स्व मुन्नालाल तिवारी, हरदीप सिंह के आने से उन्हें और प्रोत्साहन मिला जिन्होंने सक्रिय समर्थन दिया। इन सभी व्यक्तियों के समर्पित प्रयासों से, 1926 में बिहार एसोसिएशन की स्थापना हुई। एसोसिएशन का नाम बिहार राज्य, तत्कालीन जमशेदपुर राज्य से लिया गया है, आरए़म.चौबे, एचए़स.उपाध्याय, जे.प्रसाद, एचए़न.प्रसाद ने बाद में जमशेदपुर के नागरिकों की सांस्कृतिक शिक्षा और सामाजिक आवश्यकताओं को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संगठन के अन्य उद्देश्य स्थानीय लोगों के बीच शांति बनाए रखना और एकता को बढ़ावा देना और संकट में फंसे लोगों को हर संभव मदद प्रदान करना था। बाढ़ के कहर के दौरान, एसोसिएशन ने सूखा और बाढ़ समितियों को नकद दान के साथ-साथ लेख और कपड़े वितरित करके अच्छा काम किया। 1970 में बिहार एसोसिएशन ने ड.राजेंद्र प्रसाद के नाम पर एक स्कूल शुरू किया। यह प्लस 2 सहित एक पूर्ण विकसित हाई स्कूल बन गया है। एसोसिएशन महिलाओं के लिए सिलाई, कटाई और बुनाई की कक्षाएं चलाती है। यह एक विशाल हल में एक पुस्तकालय भी चलाता है जिसमें लगभग 100 लोगों के रहने की व्यवस्था है और 25000 से अधिक पुस्तकों का भंडार है।

डीसी ने टाटा लीज, खेल एवं सामाजिक सुरक्षा कार्यालय का किया निरीक्षण

महत्वपूर्ण संचिका, पंजी आदि की जांच कर दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। पूर्वी सिंहभूम के डीसी अनन्य मित्तल द्वारा टाटा लीज, खेल एवं सामाजिक सुरक्षा कार्यालय का निरीक्षण कर संचालित कार्यों की समीक्षा किया गया। इस दौरान उन्होने प्रतिनियुक्त मानव बल की उपलब्धता की समीक्षा के अलावा दैनिक उपस्थिति पंजी की जांच की, साथ ही स्पष्ट निर्देश दिया कि कार्यालय की कार्य संसति में सुधार लायें, ससमय कार्यों का निष्पादन करें एवं दस्तावेज अद्यतन रखें। सभी कार्यालयों में अनिवार्य रूप से बायोमीट्रिक से उपस्थिति का अनुपालन किया जाए।

डीसी द्वारा आगत-निर्गत पंजी, रोकड़ पंजी, संचिका, सीए़नस़ी रजिस्टर, स्टक रजिस्टर, इंडेक्स रजिस्टर आदि महत्वपूर्ण रिकर्ड संधारण का अवलोकन किया गया। इस दौरान कार्यालय के लिपिक से कार्यालय के संचिकाओं को मंगवाकर अवलोकन किया तथा पाई गई कमियों को रेखांकित करते हुए अद्यतन करने, सरकारी नियमावली के अनुरूप संचिकाओं का संधारण करने के निर्देश दिए। सरकारी राशि के माध्यम से योजनाओं का क्रियान्वयन तथा व्यय एवं क्रय की गई सामग्रियों आदि का उचित तरीके से संचिका, भंडार पंजी में संधारण नियमित रूप से करने के निर्देश दिए। साथ ही समय-समय पर वित्त विभाग और सरकार के द्वारा दिए गए गाइडलाइन का अक्षरशः पालन करने का निर्देश निकासी एवं व्ययन पदाधिकारियों को दिया। वहीं, उन्होंने सरकार के द्वारा जारी महत्वपूर्ण संकल्प, गाइडलाइन को गार्ड फाइल में संधारित करने के निर्देश दिए। इस दौरान कार्यालयों में उपलब्ध मानव श्रम बल एवं स्वीकृत मानव श्रम बल तथा कार्यालय कर्मियों के बीच कार्य के बंटवारे की जानकारी ली।

वहीं, निरीक्षण के दौरान उन्होने कार्यालय परिसर की समुचित साफ-सफाई, कार्यावधि का समुचित उपयोग करते हुए कार्यों का संपादन करने तथा लोगों की समस्याओं का समाधान करने के निर्देश दिए। मौके पर परियोजना निदेशक आईटीडीए दीपांकर चौधरी, एडीएम ल एंड अर्डर अनिकेत सचान, एडीसी भगीरथ प्रसाद, निदेशक एनईपी संतोष गर्ग, कार्यपालक दण्डाधिकारी चंद्रजीत सिंह, कार्यपालक दण्डाधिकारी मृत्युंजय कुमार, एडीएसएस नेहा संजना खलखो, जिला खेल पदाधिकारी अविनेश त्रिपाठी समेत अन्य उपस्थित रहे।

टाटा लीज विभाग का निरीक्षण करते डीसी अनन्य मित्तल।

स्पीड न्यूज

ब्रम्हर्षि समाज का सामूहिक उपनयन संस्कार 13-14 अप्रैल को

जमशेदपुर। ब्रह्मर्षि विकास मंच जमशेदपुर के द्वारा सामूहिक उपनयन संस्कार 13-14 अप्रैल 2025 को अमल संघ सिदगोडा, जमशेदपुर में आयोजित किया जायेगा। यह जानकारी मंच के महासचिव योगेंद्र मौआर ने दी है। उन्होने बताया कि गुरुवार संध्या 6:30 बजे से केंद्रीय समिति द्वारा उपनयन संस्कार के लिए फार्म, रशीद, निमंत्रण कार्ड वितरण किया जाएगा। इस अवसर पर सभी क्षेत्रीय पदाधिकारियों को आमंत्रित किया गया है।

करंट लगने से दो गाय की मौत

जादूगोड़ा। जादूगोड़ा में करंट लगने से दो गाय की मौत हो गई। घटना जादूगोड़ा थाना क्षेत्र के धर्मडीह गांव में अहले सुबह 4 बजे घटी। पीड़ित परिवार मुद्रिका यादव ने बिजली विभाग पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए दो लाख मुआवजा की मांग की है। घटना के बताया जाता हैं कि 11 हजार का ट्रांसफार्मर पर लगे जम्फर ब्लास्ट हो गया। जिसकी वजह से ट्रांसफार्मर के पोल में बिजली प्रभावित हो गई व दो गाय की मौके पर ही मौत गई। इस बाबत पीड़ित मुद्रिका यादव ने कहा कि यहां पर ट्रांसफार्मर लगाने का विरोध के बावजूद विभागीय संवेदक ने ट्रांसफार्मर बैठा कर चालू कर दी। जिसकी वजह से उसकी दो गाय की अकाल मृत्य का शिकार होना पड़ा। विभाग मुआवजा दे दोषियों पर कार्रवाई करे।

छत्तीसगढ़ी फिल्म 'लकडाउन के माया' 21 मार्च से मिराज सिनेमा में

जमशेदपुर। छत्तीसगढ़ी भाषा और संसति को समर्पित सुपरहिट फिल्म 'लकडाउन के माया' 21 मार्च 2025, शुक्रवार से मिराज सिनेमा हल, गोलमुरी में प्रदर्शित होने जा रही है। यह जानकारी बुधवार को फिल्म के निर्देशक मोहम्मद हबीब और निर्माता ड. जे.के.देवांगन ने संयुक्त रूप से प्रेस विज्ञाप्ति जारी कर दी। डायरेक्टर मोहम्मद हबीब ने बताया कि फिल्म ने छत्तीसगढ़ में जबरदस्त लोकप्रियता हासिल की है और यह वहां की सुपरहिट फिल्म बन चुकी है। फिल्म के सभी 6 गाने दर्शकों के जुबान पर छा गए हैं, विशेषकर गीत 'मार डारे' को 2 मिलियन से अधिक व्यूज मिल चुके हैं, और इस गाने पर 2 लाख से अधिक रील बनाए गए हैं। फिल्म में अभिनय कर रहे कलाकारों में नितिन ग्वाला, शिवा साहू, स्नेहा देवांगग्र, पुष्पेंद्र सिंह, क्रांति दीक्षित, संजू साहू, लता रही, उर्वशी साहू, तथा अन्य सह कलाकार। इन कलाकारों ने फिल्म को जीवंत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। प्रोड्यूसर ड. जेक़े.देवांगन ने कहा कि यह फिल्म केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि छत्तीसगढ़ी समाज की संस्कृति, संघर्ष और संवेदनाओं को भी उजागर करती है। उनकी आशा है कि जमशेदपुर में छत्तीसगढ़ी मूल के नागरिकों के साथ-साथ अन्य भाषी दर्शक भी इस फिल्म का भरपूर आनंद लेंगे।

सांसद विद्युतबरण महतो पंप नहर योजना को लेकर केंद्रीय मंत्री से मिले

चांडिल डैम से पटमदा, बोड़ाम समेत चार प्रखंडों को सिंचाई की मिलेगी सुविधा

- सांसद ने कहा, पंप नहर योजना को एआइबीपी के तहत 2000 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत करें

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। सांसद बिद्युत बरण महतो ने केंद्रीय जलशक्ति मंत्री सी आर पाटिल से मुलाकात कर प्रधानमंत्री कृषि योजना के तहत सुवर्णरेखा परियोजना के अन्तर्गत चांडिल डैम से पटमदा, बोड़ाम, नीमडीह एवं कूकडू प्रखण्ड में पम्प नहर योजना को एआइबीपी के तहत स्वीकृति प्रदान करने की मांग की है। सांसद श्री महतो ने एक पत्र सौंपकर कहा कि प्रधानमंत्री कृषि योजना के तहत सुवर्णरखा परियोजना के अन्तर्गत चांडिल डैम से पटमदा-बोड़ाम प्रखण्ड एवं नीमडीह-कुकडु प्रखण्ड में पम्प नहर योजना का पीपीआर कन्सलटेन्ट द्वारा आठ माह पूर्व जल संसाधन विभाग रांची में समर्पित किया गया है। इस पम्प नहर योजना से पटमदा-बोड़ाम प्रखण्ड के 12000 हेक्टेयर तथा नीमडीह-कुकडु प्रखण्ड में 9500 हेक्टेयर जमीन में सिंचाई क्षमता सृजन करने का प्रावधान है। उपरोक्त चारों प्रखण्डों में मुख्य रूप से गरीब आदिवासी किसान रहते है। सांसद ने विभागीय मंत्री को बताया कि पटमदा-बोड़ाम एवं नीमडीह-कुकडु प्रखण्डों की प्राक्कलित राशि कमशः 1400.00 करोड़ एवं 60000 करोड़ कुल रू० 2000.00 करोड़ है। भारत सरकार से एआइबीपी के तहत वित्तिय सहायता की आवश्यकता है। जल संसाधन विभाग, रांची के कन्सलटेन्ट द्वारा तैयार किया गया पीपीआर की जांच प्रोजेक्ट एप्राइजल आर्गेनाइजेशन, सीडब्ल्युसी, नयी दिल्ली द्वारा पम्प नहर योजना के च्ट के स्वीकृति प्रदान करने हेतु निदेश दिया जाए। सुवर्णरखा परियोजना के निर्माण कार्य के कार्यान्वयन पर एआइबीपी के तहत विगत चार वर्षों से केंद्रीय अनुदान प्राप्त नही हुआ है। इस परियोजना के लिए, लंबित केंद्रांश राशि रू० 61691 करोड़ दिनांक 31032025 के पूर्व विमुक्त करने की आवश्यकता है। केंद्रीय मंत्री ने चालू वित्तीय वर्ष में केंद्रीय सहायता राशि निर्गत करने का आश्वासन दिया। इसके अतिरिक्त यदि माइक्रो मेगालिफ्ट योजना का प्रस्ताव राज्य सरकार की ओर से आने पर उसपर त्वरित कार्रवाई की जाएगी।

सजी बांग्ला काव्य महफिल

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। जमशेदपुर स्थित बंगला कविता को समर्पित संस्था 'कविक' के तत्वाधान में संस्था का द्वितीय वार्षिक समारोह एवं कविता संध्या का आयोजन बंगाल क्लब साकची में किया गया। संस्था के सचिव अशीम भट्टाचार्य ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि समाज सेवी विकाश मुखर्जी ने दीप प्रज्वलन कर किया। तत्पश्चात कविता संध्या का आयोजन किया। कार्यक्रम में शहर के एवं कोलकाता के जाने माने बांग्ला कवि प्रणति गोस्वामी, अशीम भट्टाचार्य, नमिता भट्टाचार्य, सोनाली मित्रा सरकार, सुमिता चक्रवर्ती, सुतापा दास, सोमनाथ गांगुली, रीता सन्याल, नंदिता मालाकार अरिंदम बासु, रंजीत दास, अमरनाथ बोस ने काव्यपाठ किया। सभी कवितायें मानवता एवं प्रेम पर आधारित था। कार्यक्रम निर्देशन चन्दन चंदा ने किया। कार्यक्रम में तारक नायक, देबाशीष नाहा, सौम्य सेन, सदाशिव रय, सुस्मिता गांगुली, सब्यसाची चंदा बतौर विशिस्ट अतिथि के तौर पर उपस्थित थे। शिव प्रसाद बनर्जी ने कार्यक्रम का सूचालन किया। अंत में संस्था के अध्यक्षा प्रणति गोस्वामी ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

एनआइटी में उद्योग 4.0 : आधुनिक विनिर्माण की ओर यात्रा के तहत सेमिनार हुआ संपन्न

टाटा स्टील के बालामुरुगन श्रीनिवास ने किया संबोधित

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। टाटा स्टील लिमिटेड, जमशेदपुर में अनुसंधान और विकास में गैर-विनाशकारी परीक्षण और सेंसर अनुसंधान समूह के प्रमुख श्री बालामुरुगन श्रीनिवासगन 19 मार्च 2025 को 'उद्योग 40: आधुनिक विनिर्माण की ओर यात्रा' पर चल रहे एसटीटीपी के हिस्से के रूप में 'इस्पात उद्योग के लिए एनडीई और उद्योग 40' पर व्याख्यान देने के लिए एनआईटी जमशेदपुर आए थे। अपने व्याख्यान में, उन्होंने उद्योग 40 को भौतिक से डिजिटल और फिर से भौतिक प्रणालियों के निर्बाध एकीकरण के रूप में परिभाषित किया, जो स्मार्ट स्वचालन के माध्यम से विनिर्माण को क्रांतिकारी बना रहा है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि टाटा स्टील लिमिटेड ने एक नवीन ब्लास्ट फर्नेस प्रोफाइलिंग प्रौद्योगिकी का अनुसंधान किया है, जो नीचे से ऊपर तक सटीक माप को सक्षम बनाता है और कार्यक्षमता में सुधार करता है। इसके अलावा, उन्होंने कई नई एनडीटी प्रौद्योगिकियों को उजागर किया, जो औद्योगिक अनुप्रयोगों के लिए वास्तविक समय मूल्यांकन, भविष्यवाणी रखरखाव और गुणवत्ता आश्वासन में प्रगति को प्रदर्शित करते हैं।

चाईबासा : स्वच्छ आंगनबाड़ी पर डीसी ने किया संबोधित

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर/चाईबासा। पश्चिमी सिंहभूम जिला समाहरणालय स्थित सभागार में डीसी कुलदीप चौधरी की अध्यक्षता एवं अपर उपायुक्त प्रवीण केरकेट्टा, सिविल सर्जन डस्रुशांतो माझी, सदर चाईबासा अनुमंडल पदाधिकारी संदीप अनुराग टोपनो, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी श्वेता भारती, कार्यपालक अभियंता पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल सहित यूनिसेफ एवं सहयोगी संस्था के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में समाज कल्याण कार्यालय एवं यूनिसेफ के संयुक्त तत्वाधान में संचालित स्वच्छ आंगनबाड़ी कार्यक्रम से संबंधित कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला में स्वच्छ आंगनबाड़ी पुरस्कार से संबंधित विभिन्न घटकों एवं मानकों का आंगनबाड़ी स्तर पर कुशल संचालन से संबंधित अलग-अलग पहलुओं पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया गया। यूनिसेफ के सहयोग से पेयजल, स्वच्छता, स्वास्थ्य और जलवायु-संवेदनशील आंगनबाड़ी पुरस्कार उद्घाटन कार्यशाला को संबोधित करते हुए उपायुक्त ने कहा कि स्वच्छ आंगनबाड़ी कार्यक्रम के क्रियान्वयन से जमीन स्तर पर स्वच्छता एवं स्वास्थ्य से संबंधित घटकों का अनुपालन सुनिश्चित कर समाज को एक नई दिशा प्रदान किया जा सकता है।

जमशेदपुर एफसी एआईएफएफ सब जूनियर यूथ लीग 2024-25 अभियान के लिए तैयार

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। जमशेदपुर एफसी की सब जूनियर टीम एआईएफएफ सब जूनियर यूथ लीग 2024-25 में भाग लेने के लिए तैयार है, जिसमें ग्रुप जे के मैच अघोरनाथ पार्क स्टेडियम, कलना में होने वाले हैं।

राहुल राज द्वारा प्रशिक्षित सब-जूनियर टीम 27 मार्च को एफएओ अकादमी के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेगी, इसके बाद यूनाइटेड स्पोर्ट्स क्लब, एसकेएम स्पोर्ट्स फाउंडेशन, इंटर काशी और ओडिशा एफसी के खिलाफ महत्वपूर्ण मुकाबले होंगे। युवा फुटबल प्रतिभाओं को निखारने की प्रतिबद्धता के साथ, जमशेदपुर एफसी का लक्ष्य टूर्नामेंट में अपने अगली पीढ़ी के खिलाड़ियों को प्रदर्शित करना है। टीम कड़ी ट्रेनिंग से गुजर रही है और टीम राष्ट्रीय मंच पर एक मजबूत छाप छोड़ने के लिए उत्सुक है।

लीग क्लब के युवा विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में कार्य करती है, जो मूल्यवान प्रतिस्पर्धी प्रदर्शन प्रदान करती है। टीम 26 मार्च को पश्चिम बंगाल के कलना के लिए निकलेगी।

एससीसीआई और यंग इंडियन का पारिवारिक व्यवसायों की वृद्धि और बदलाव पर संवाद

पारिवारिक व्यवसायों को विविध और दीर्घकालिक वित्तीय नियोजन को अपनाना जरुरी : विशाल बजाज

खबर मन्त्र ब्यूरो

जमशेदपुर। सिंहभूम चेम्बर अफ कमर्स एंड इंडस्ट्री (एससीसीआई) ने यंग इंडियन (वाईआई) जमशेदपुर और क्लाइंट एसोसिएट्स के सहयोग से 'स्केलिंग लिगेसीज- पारिवारिक व्यवसायों में बदलाव की चुनौतियां और वृद्धि के अवसर' विषय पर एक प्रभावशाली संवाद सत्र का आयोजन किया। चेम्बर भवन बिष्टुपुर में आयोजित इस कार्यक्रम में शहर के 70 से अधिक उद्यमियों, व्यवसायियों और पेशेवरों ने भाग लिया। प्राइवेट वेल्थ मैनेजमेंटः- क्लाइंट एसोसिएट्स के वेल्थ डायरेक्टर विशाल बजाज ने पीढ़ियों के लिए संपत्ति निर्माण की रणनीतियां विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि पारिवारिक व्यवसायों को पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़कर, विविध और दीर्घकालिक वित्तीय नियोजन को अपनाना चाहिए ताकि वे अपनी संपत्ति को सुरक्षित और बढ़ा सकें। एस्टेट एवं सक्सेशन प्लानिंगः- प्रख्यात कानूनी विशेषज्ञ और खैतान एंड कंपनी की पार्टनर दिवि दत्ता ने पीढ़ियों तक विरासत संरक्षित रखने के उपाय विषय पर चर्चा करते हुए उत्तराधिकार नियोजन की अहमियत को रेखांकित किया। बिजनेस ग्रोथ एंड टैक्स स्ट्रैटेजीजः- सीए अंकुर भंडारी ने व्यवसाय वृद्धि के लिए कानूनी ढांचे और कर बचत की रणनीतियां विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने होल्डिंग कंपनियों, टैक्स प्लानिंग और संरचनात्मक बदलावों के माध्यम से व्यवसायों के स्केलिंग की व्यावहारिक विधियों पर बात की। उच्च सहभागिता के तहत पैनल चर्चा में प्रतिभागियों ने नेतृत्व परिवर्तन, पारदर्शिता और विवाद समाधान जैसे विषयों पर सक्रिय संवाद किया। एससीसीआई और वाईआई जमशेदपुर ने यह स्पष्ट किया कि वे भविष्य में भी ऐसे सार्थक मंचों का आयोजन करते रहेंगे, जिससे स्थानीय पारिवारिक व्यवसायों को रणनीतिक मार्गदर्शन, सहयोग और सीखने के अवसर मिलें। कार्यक्रम में सिंहभूम चेम्बर अध्यक्ष विजय आनंद मूनका, जनरल सेक्रेटरी मानव केडिया, वाईआई चेयरमैन कौशिक मोदी, को-चेयर श्रुति झुनझुनवाला, उपाध्यक्ष राजीव अग्रवाल, पुनीत कांवटिया, अभिषेक अग्रवाल (गोल्डी), सचिव भरत मकानी, अंशुल रिंगासिया, विनोद शर्मा, कोषाध्यक्ष सीए अनिल अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

एक नजर में

श्री श्री बाल मंदिर अखाड़ा, साकची इस वर्ष मनाएगा स्वर्ण जयंती महोत्सव

जमशेदपुर। लौहनगरी की सामाजिक एवं धार्मिक संस्था श्री श्री बाल मन्दिर, इस वर्ष अपनी स्वर्ण जयन्ती बना रही है। 1976 में बाल मंदिर की स्थापना हुई थी, और इस वर्ष सनातन गौरव के 50 वर्ष बाल मंदिर कमिटी बनाएगी। इस बात की जानकारी कमिटी के मुख्य संरक्षक सुमन अग्रवाल ने दी। कमिटी के सन्नी संघी ने बताया की इस वर्ष रामनवमी महोत्सव धूमधाम से बनाने का निर्णय कमिटी ने लिया है। उन्होंने कहा की इस वर्ष 07 दिवसीय कार्यक्रमों का आयोजन होगा। बाल मंदिर के सदस्यों की बैठक साकची में आयोजित हुई। उन्होंने बताया की रामनवमी की तैयारियां जोरों से हो रही है, इस बार कई आकर्षण देखने का मौका जमशेदपुरवाशियों को मिलेगा। अयोध्या में जिस प्रकार प्रभु श्री राम का भव्य मंदिर बना है ठीक उसी प्रकार का प्रारूप साकची झंडा चौक में बनाया जा रहा है एवं भव्य राम लल्ला की प्रतिमा का भी दर्शन जमशेदपुर की जनता कर सकेगी। बैठक में मुख्य रूप से सुमन अग्रवाल, निर्मल जालुका, अभिषेक भालोटिया, अमित अग्रवाल, सन्नी संघी, अंकित मोदी, अभिषेक अग्रवाल, बबलु अग्रवाल, अंकित अग्रवाल, गौरव अग्रवाल, रिंकू जालुका, सतीश शर्मा, कृष्णा अग्रवाल, प्रवीण कुमार, हर्ष अग्रवाल, अमित मोदी, सौरव अग्रवाल, बजरंज अग्रवाल, संतोष पांडेय, नरेश संघी, केदार अग्रवाल, पवन धानुका, मिठू गुप्ता, पुरषोत्तम समेत कमिटी के कई सदस्य उपस्थित थे।

हाता-टाटा मुख्य सड़क जर्जर, डीसी से मिल कर सुबोध झा ने की बनवाने की मांग

जमशेदपुर। पूर्वी सिंहभूम जिला के महत्वपूर्ण हाता-टाटा मुख्य सड़क की स्थिति इन दिनों काफी जर्जर हो चुकी है। यह सड़क पोटका विधानसभा क्षेत्र का लाइफ लाईन माना जाता है। इस सड़क से प्रतिदिन हजारों छोटे बड़े वाहनों का आवागमन ओडिशा, चाईबासा सहित विभिन्न स्थानों के लिए होता है। हाता से टाटा नगर रेलवे स्टेशन तक सड़क में कई जगह बड़े बड़े गड्ढे हो चुके है, इस कारण आवागमन में लोगों को काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। गड्ढायुक्त सड़क से कई लोग दुर्घटना का शिकार हो रहे है। इस संबंध में मंगलवार को भाजपा युवा मोर्चा के जिला मंत्री गणेश सरदार के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल जिले के उपायुक्त को एक ज्ञापन सौंपकर हाता टाटा जर्जर सड़क की अविलंब मरम्मतिकरण करने का मांग किए। प्रतिनिधिमंडल में जिला परिषद सदस्य सूरज मंडल, मुखिया देवी भूमिज, जिला भाजपा कार्यालय मंत्री सुबोध झा, पोल्टू मंडल, उत्पल बोस उपस्थित थे।

थोक वस्त्र विक्रेता संघ का होली मिलन समारोह

जमशेदपुर। कोल्हान के वस्त्र विक्रेताओं के प्रतिनिधि संगठन जमशेदपुर थोक वस्त्र विक्रेता संघ के तत्वावधान में होली मिलन समारोह धूमधाम से मनाया गया। समारोह का आयोजन जुगसलाई स्थित ऋषि भवन में किया गया था। समारोह में संघ के सदस्यों ने परिवार के साथ सहभोज का आनंद लिया। समारोह में सदस्यों के लिए रंगारंग सांसतिक कार्यक्रम, महिलाओं के लिए खेलों के साथ-साथ सह भोज का भी प्रबंध किया गया था। समारोह में सदस्यों के मध्य होलियाना उपाधि वितरण किया गया जिसका सभी ने आनंद लिया। इस अवसर पर लोगों को संबोधित करते हुए संघ के अध्यक्ष अनिल मोदी ने कहा कि जमशेदपुर थोक विक्रेता संघ न सिर्फ जमशेदपुर अपितु पूरे कोल्हान प्रमंडल के वस्त्र विक्रेताओं का प्रमुख संगठन है जिसके द्वारा व्यापारिक गतिविधियों के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियां भी संचालित की जाती हैं। संघ द्वारा हर वर्ष होली मिलन समारोह का आयोजन किया जाता है जिसमें संघ के सभी सदस्य अपने परिवार के साथ समारोह में शामिल होते हैं एवं सामूहिक रूप से पर्व का आनंद लेते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे समारोह के आयोजन का मकसद सदस्यों के बीच संवाद समन्वय एवं सृजन की भावना को बढ़ाना है। समारोह को संघ के संरक्षक कैलाश काबरा, संघ के पूर्व अध्यक्ष नवल किशोर बरनवाल, स्वरूप गोलछा, सचिव अशोक सारस्वत, उपाध्यक्ष प्रदीप बिदासरिया, संयोजक महेश सरायवाला ने भी संबोधित किया। समारोह में सुमित शर्मा सोनू की टीम ने सांसतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन संघ के सचिव अशोक सारस्वत ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संयोजक महेश सरायवाला ने किया।

केपीएस कदमा में आयोजित हुआ होली मिलन

जमशेदपुर। केपीएस कदमा में वार्षिक होली मिलन समारोह बड़े उत्साह और जोश के साथ मनाया गया। केपीएस की सभी सात शाखाओं से जुड़े पूरे केपीएस समुदाय ने एक साथ मिलकर जश्न मनाया, एक-दूसरे से जुड़े और नए शैक्षणिक सत्र की शुरुआत की। स्व संस्थापक अध्यक्ष नायर और संस्थापक उपाध्यक्ष श्रीमती विजयम कार्था द्वारा परिकल्पित यह कार्यक्रम एकता, उत्सव और कायाकल्प के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है। 700 से अधिक शिक्षकों, वरिष्ठ नेताओं, केपीएस के मित्रों और विशिष्ट अतिथियों ने जीवंत सांसतिक कार्यक्रम देखा। संध्या का शुभारंभ मुख्य अतिथि टाटा वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष संजीव चौधरी और उपाध्यक्ष शैलेश कुमार सिंह द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। निर्देशक शरत चंद्रन ने सभी का हार्दिक स्वागत किया और सभी को होली और रमजान की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि होली प्यार, बंधन, बुराई पर जीत और जीवन के उत्सव का प्रतीक है, जबकि रमजान आध्यात्मिक आत्मनिरीक्षण, उपवास और 'कुरान' की पवित्र पुस्तक के माध्यम से 'ईश्वर' को महसूस करने का प्रतीक है, जिसे सर्वशक्तिमान ने प्रकट किया था। सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद एक मेल-मिलाप सत्र और रात्रिभोज का आयोजन किया गया, जिससे उपस्थित लोगों के बीच सौहार्द और खुशी बढ़ी।'

पश्चिम सिंहभूम जिले में फसल बीमा से संबंधित 178624 आवेदनों को दी गयी स्वीकृति

जमशेदपुर/चाईबासा। पश्चिमी सिंहभूम जिला समाहरणालय स्थित प्रकोष्ठ में डीसी कुलदीप चौधरी की अध्यक्षता में बिरसा-प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना खरीफ मौसम वर्ष-2024 में अधिसूचित क्षेत्र तथा बीमित फसल की वैधता की संपुष्टि हेतु जिला स्तरीय अनुश्रवण समिति की समीक्षात्मक बैठक का आयोजन किया गया। उक्त बैठक में फसल बीमा कंपनी एचडीएफसी-ईआरजीओ के प्रतिनिधि द्वारा बताया गया कि फसल बीमा योजना-2024 के अंतर्गत धान फसल में कुल आवेदनों की संख्या 183589 है, जिसमें सन्निहित बीमित क्षेत्रफल 9530341 हेक्टेयर और मक्का फसल में आवेदनों की संख्या 4324 है, जिसका बीमित क्षेत्रफल 203636 हेक्टेयर है। जिला स्तरीय अनुश्रवण समिति की बैठक में उक्त दोनों फसलों धान व मक्का हेतु बीमा कंपनी के माध्यम से उपलब्ध कराए गए कुल 187913 आवेदनों का समीक्षा उपरांत सर्वसम्मति से 178624 आवेदनों, सन्निहित बीमित क्षेत्रफल 8675431 हेक्टर को अग्रेसर कार्रवाई हेतु स्वीकृत किया गया। समिति की बैठक में बताया गया की जिला अंतर्गत धान फसल का बुआई क्षेत्रफल 159712 हेक्टेयर के तुलना में बीमित क्षेत्रफल 8616196 हेक्टेयर है।

लखनऊ-बेंगलुरु, दिल्ली और पंजाब की निगाहें अपने पहले खिताब पर

पंजाब का भरोसा श्रेयस-पोंटिंग की जोड़ी

पंजाब किंग्स ने केकेआर को बीते वर्ष विजेता बनाने वाले श्रेयस अय्यर को कप्तानी सौंपी है। यही नहीं उन्होंने कोचिंग स्टाफ में बदलाव करते हुए दिल्ली और मुंबई के पूर्व कोच रिकी पोंटिग को हेड कोच बनाया है। देखना होगा कि श्रेयस और पोंटिंग की जोड़ी पंजाब की किस्मत बदल पाती है या नहीं है। पंजाब ऐसी टीम है, जिसने प्रभसिमरन और शशांक को रिटेन रखते हुए बाकी पूरी टीम बदल डाली। उन्होंने अर्शदीप सिंह को 18 करोड़ में राइट टू मैच कार्ड का उपयोग कर बरकरार रखा। लेग स्पिनर के रूप में उन्होंने युजवेंद्र चहल की सेवाएं ली हैं।

एजेंसी

मुंबई। आइपीएल-18 में खेल रही 10 में से छह टीमें ऐसी हैं, जिन्हें इस ट्रॉफी को जीतने का गौरव हासिल हो चुका है, लेकिन चार टीमें ऐसी हैं, जिन्हें अब तक खिताबी जीत नसीब नहीं हुई है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु, पंजाब किंग्स, दिल्ली कैपिटल्स और लखनऊ सुपरजाएंट्स ने अब तक आइपीएल नहीं जीता है। ये चारों टीमें इस बार नए भरोसे और नए कप्तान के दम पर पहली खिताबी जीत पर दांव लगाने उतर रही हैं। चारों टीमों ने सिर्फ अपने कप्तान ही नहीं बदले हैं बल्कि टीम और कोचिंग स्टाफ में भी बड़ा बदलाव किया है। यह देखना होगा कि इन चारों टीमों का हर क्षेत्र में किया गया बदलाव रंग लाएगा या नहीं। इन चार में से तीन टीमें ऐसी हैं जो आइपीएल के फाइनल में पहुंचकर खिताब से दूर रह गईं। इनमें आरसीबी तीन बार और दिल्ली-पंजाब की टीमें एक-एक बार फाइनल में पहुंची है। लखनऊ को फाइनल में भी प्रवेश नसीब नहीं हुआ है।

पाटीदार लगाएंगे आरसीबी का बेड़ा पार

आरसीबी ने रजत पाटीदार के रूप में नया कप्तान चुना। उन्होंने मेंटर के रूप में दिनेश कार्तिक को अपने साथ जोड़ा है, जबकि गेंदबाजी कोच की भूमिका ओमकार साल्वी निभाएंगे। कोचिंग की जिम्मेदारी एंडी फ्लावर के ही जिम्मे हैं। आरसीबी ने इस बार अपने तेज गेंदबाजी विभाग में अनुभवी भुवनेश्वर कुमार और जोश हेजलवुड को जोड़ा है। दोनों पर उन्होंने 23.25 करोड़ की राशि खर्च की है। फिर विराट कोहली अपने कॅरिअर के अंतिम दौर में आरसीबी को पहला खिताब दिलाने में इस बार कोई कसर नहीं छोड़ेंगे।

अक्षर और बदानी मिलकर बदलेंगे दिल्ली की किस्मत

दिल्ली कैपिटल्स ने अक्षर पटेल के रूप में ऐसे ऑलराउंडर को कप्तानी की जिम्मेदारी दी, जिसकी लोगों को कम उम्मीद थी। पोंटिंग की जगह हेमांग बदानी को उन्होंने नया हेड कोच नियुक्त किया है। वहीं, इंग्लैंड के दिग्गज केविन पीटरसन को उन्होंने मेंटर की जिम्मेदारी है। मैथ्यू मॉट्स सहायक कोच होंगे और पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज मुनाफ पटेल गेंदबाजी कोच होंगे। यही नहीं अनुभवी फॉफ डुप्लेसिस उनके उपकप्तान होंगे।

लखनऊ को पंत-जहीर का साथ

लखनऊ सुपरजायंट्स ने ऋषभ पंत को टीम का नया कप्तान बनाया है। उन्होंने केएल राहुल की जगह यह जिम्मेदारी सौंपी गई है। पंत लखनऊ के साथ पहले सत्र में शुरूआत में दबाव में होंगे। उनकी तेज गेंदबाजों की तिकड़ी मयंक यादव, आवेश खान और मोहसिन खान की फिटनेस संदेह के घेरे में है। इसके बाद उनके बेड़े में मुख्य गेंदबाज आकाशदीप, शामार जोसेफ और रवि बिश्नोई ही बचते हैं। हालांकि लखनऊ के पास मेंटर के रूप में दिग्गज जहीर खान हैं। जस्टिन लेंगर हेड कोच की भूमिका में बरकरार रखे गए हैं।

सनराइजर्स हैदराबाद

खिलाड़ियों की संख्या: 20/25 (7 विदेशी)

कप्तान: पैट कमिंस

हैदराबाद के पास एक विस्फोटक शीर्ष पांच बल्लेबाजी क्रम है। इसके अलावा उनका गेंदबाजी आक्रमण भी मजबूत दिख रहा है। इसमें कुछ ऐसे खिलाड़ी हैं जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर या आईपीएल में या फिर घरेलू क्रिकेट में विकेट लेते रहे हैं। हालांकि, लोअर ऑर्डर या फिर कहें ऑलराउंडर में टीम थोड़ी कमजोर दिख रही है। उनके बैकअप विदेशी खिलाड़ी- कामिंडु मेंडिस, वियान मुल्डर और ईशान मलिंगा ने पहले कभी आईपीएल नहीं खेला है। हालांकि, पिछले सीजन टीम 250+ स्कोर तक बना रही थी। इतने स्कोर के बाद गेंदबाजी औसत भी रहे तो चलता है, क्योंकि सामने वाली टीम मनोवैज्ञानिक दबाव में होती है। शमी, कमिंस और हर्षल पटेल की तिकड़ी कमाल दिखा सकते हैं, वहीं टीम के पास विशेषज्ञ स्पिनर्स के अलावा कई पार्ट टाइमर्स भी हैं। ईशान किशन के आने से बल्लेबाजी और मजबूत हुई है और यह टीम इस सीजन 400 का आंकड़ा भी छू ले तो हैरानी नहीं होगी।

मुंबई इंडियंस की कप्तानी करेंगे सूर्यकुमार यादव

➲ **मुंबई इंडियंस के शुरूआती मैचों में नहीं खेल सकेंगे बुमराह: महेला जयवर्धने**

एजेंसी

नयी दिल्ली। सूर्यकुमार यादव इंडियन प्रीमियर लीग 2025 सीजन के अपने पहले मैच में मुंबई इंडियंस की कप्तानी करेंगे क्योंकि पूर्णकालिक कप्तान हार्दिक पांड्या एक मैच के प्रतिबंध के कारण पहले मैच में नहीं खेल पाएंगे। हार्दिक ने बुधवार को मीडिया से कहा, मैं नहीं रहूंगा तो सूर्या आदर्श विकल्प होंगे। हार्दिक को लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ 2024 सीजन के मुंबई के आखिरी मैच में धीमी ओवर गति के लिए एक मैच के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया था। चूंकि यह हार्दिक का सीजन का तीसरा अपराध था, इसलिए उन पर 30 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया गया और एक मैच का प्रतिबंध लगाया गया था, जो इस सीजन के शुरूआती मैच में भी जारी रहेगा। मुंबई इंडियंस के मुख्य कोच महेला जयवर्धने ने भी पुष्टि की कि फ्रेंचाइजी को बीसीसीआइ द्वारा चेन्नई सुपर किंग्स के खिलाफ अभियान के शुरूआती मैच के लिए हार्दिक की अनुपलब्धता के बारे में औपचारिक रूप से सूचित कर दिया गया है। हार्दिक ने कहा, पिछले साल, जो हुआ वह खेल का हिस्सा था। हमने आखिरी ओवर में डेढ़ या दो मिनट देरी से गेंदबाजी की। उस समय, मुझे नहीं पता था कि इसके क्या परिणाम हो सकते हैं। उन्होंने कहा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन मुझे लगता है कि नियम ऐसा कहते हैं। इसका मतलब है कि मुझे प्रक्रिया के साथ चलना होगा। 2023 में सूर्यकुमार यादव, जो वर्तमान में भारतीय टी20 अंतरराष्ट्रीय टीम के कप्तान हैं, ने एक आइपीएल मैच में मुंबई इंडियंस की कप्तानी की थी।

रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु

खिलाड़ियों की संख्या: 22/25 (8 विदेशी)

कप्तान: रजत पाटीदार

आरसीबी ने ओपनिंग के लिए विराट कोहली के साथी के तौर पर विस्फोटक फिल सॉल्ट को खरीदा। साथ ही जोश हेजलवुड और भुवनेश्वर कुमार में दो अनुभवी तेज गेंदबाजों को हासिल करने के लिए बहुत पैसा खर्च किया। इससे उनकी लंबे समय से चली आ रही गेंदबाजी समस्या को हल मिल सकता है। उनके पास शीर्ष और मध्य क्रम में बल्लेबाजी मजबूत है और लंबे समय में पहली बार, उनका लाइन-अप सिर्फ कुछ स्टार खिलाड़ियों पर निर्भर नहीं दिख रहा है। हालांकि, रजत पाटीदार का कप्तान बनना सबसे कमजोर कड़ी है। रजत को विजय हजारे ट्रॉफी और सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में मध्य प्रदेश की कप्तानी करने का अनुभव तो है, लेकिन आइपीएल में वह पहली बार कमान संभालेंगे। कुछ समय पहले तक उनकी प्लेइंग-11 में जगह तक पक्की नहीं थी। हालांकि, अपनी कप्तानी में पिछले साल वह मध्य प्रदेश को फाइनल तक ले गए थे।

चेन्नई सुपर किंग्स

खिलाड़ियों की संख्या: 25/25 (7 विदेशी)

कप्तान: ऋतुराज गायकवाड़

चेन्नई ने आर अश्विन को 10 सीजन बाद वापस खरीद लिया। अश्विन ने आखिरी बार 2015 में उनके लिए खेला था और अब वह रवींद्र जडेजा के साथ मिलकर स्पिन की कमान संभालेंगे। उन्होंने नूर अहमद को जोड़कर अपने स्पिन आक्रमण को और मजबूत किया। इसके अलावा उन्होंने ऑलराउंडर और तेज गेंदबाजों की खरीदारी की। उन्होंने राहुल त्रिपाठी, विजय शंकर, कमलेश नागरकोटी, दीपक हुड्डा और श्रेयस गोपाल जैसे खिलाड़ियों को भी खरीदा है जिनके आइपीएल करियर को पुनरुत्थान की जरूरत है।

मुंबई इंडियंस

खिलाड़ियों की संख्या: 23/25 (8 विदेशी)

कप्तान: हार्दिक पांड्या

मुंबई इंडियंस का भारतीय खिलाड़ियों का दल मजबूत है, लेकिन उन्होंने कई अपरिपक्व विदेशी खिलाड़ी चुने। ट्रेंट बोल्ट और मिचेल सैंटनर के अलावा अन्य छह खिलाड़ी ऐसे हैं जो या तो चोट से ग्रसित रहे हैं या फिर वे आइपीएल में नियमित तौर पर खेलने वाले खिलाड़ी नहीं रहे हैं। इंग्लैंड के ऑलराउंडर विल जैक्स और तेज गेंदबाज रीस टॉपले लीग में काफी अनुभवहीन हैं, जबकि न्यूजीलैंड के बेवन-जॉन जैकब्स और दक्षिण अफ्रीका के रेयान रिकेल्टन पहली बार आइपीएल खेलेंगे। दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज लिजाड विलियम्स और अफगानिस्तान के स्पिनर अल्लाह गजानफर के चोटिल होने पर बाहर होने की वजह से टीम को पहले ही दो झटके लग चुके हैं। इनकी जगह मुजीब उर रहमान और कॉर्बिन बॉश को शामिल किया गया है।

न्यूजीलैंड ने आस्ट्रेलिया के साथ होने वाली सीरीज के लिए टीम घोषित की

ऑकलैंड। न्यूजीलैंड ने आस्ट्रेलियाई महिला टीम के साथ होने वाली टी-20 सीरीज के लिए अपनी टीम घोषित कर दी है। अवकाश पर गई सोफी डिवाइन और आइसीसी महिला क्रिकेटर ऑफ द ईयर मेली केर की टीम में वापसी हुई हैं। आइसीसी की रिपोर्ट के अनुसार टीम में सूजी बेट्स को चुना गया है। बेट्स टी -20 सीरीज में 33 की औसत और 112.50 की स्ट्राइक रेट से 99 रन बनाए और शीर्ष स्कोरर रहीं। पिछले वर्ष महिला टी-20 विश्वकप के बाद डिवाइन के पद छोड़ने के फैसले के बाद बेट्स अंतरिम कप्तान के रूप में टीम की अगुआई करना जारी रखेंगी। हैमस्ट्रिंग की चोट से उबरने के बाद तेज गेंदबाज ली ताहूहू और बल्लेबाज बेला जेम्स की भी क्वाड्रिसेप स्ट्रेन के बाद टीम में वापसी हुई हैं। टी-20 विश्वकप चैंपियन शुक्रवार को ईडन पार्क में ऑकलैंड, टौरंगा और वेलिंगटन में तीन टी-20 मैचों में ट्रांस-तस्मान प्रतिद्वंद्वियों से मुकाबला करेगी।

स्विस ओपन 2025: त्रीसा जॉली-गायत्री गोपीचंद की जोड़ी दूसरे दौर में, पुरुष एकल में भारतीय चुनौती मजबूत

पुरुष एकल में अयुष और संकर मुख्य ड्रॉ में पहुंचे

भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ियों अयुष शेट्टी और एस संकर मुथुसामी सुब्रमण्यम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए पुरुष एकल के मुख्य ड्रॉ में प्रवेश किया। आयुष शेट्टी (दुनिया के 44वें नंबर के खिलाड़ी) ने पहले दौर में इंग्लैंड के चोलन कायन (रैंक 161) को 21-12, 21-15 से हराया। इसके बाद, उन्होंने फ्रांस के राफेल गावियोस (रैंक 400) को केवल 23 मिनट में 21-6, 21-8 से हराकर अंतिम 32 में जगह बनाई। अब वह जापान के केंटा निशिमोटो (2018 जकार्ता एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता) से भिड़ेंगे। संकर मुथुसामी ने भी क्वालिफायर में दो शानदार जीत दर्ज कीं। पहले दौर में उन्होंने इंग्लैंड के यूहेन वांग को 21-13, 21-4 से मात दी। फिर अपने ही हमवतन थरुण मानेपाल्ली को 21-7, 21-10 से हराकर मुख्य ड्रॉ में पहुंचे। अब संकर मुथुसामी (रैंक 64) पहले दौर में डेनमार्क के मैग्नस जोहानसेन से भिड़ेंगे।

एजेंसी

बासेल। भारतीय महिला युगल जोड़ी गायत्री गोपीचंद और त्रीसा जॉली ने स्विट्जरलैंड के बासेल में जारी स्विस ओपन 2025 बैडमिंटन टूर्नामेंट के दूसरे दौर में प्रवेश कर लिया है। दुनिया की नौवें नंबर की भारतीय जोड़ी ने स्विट्जरलैंड की एलाइन मुलर और नीदरलैंड की केली वान बुइटन को 21-16, 21-17 से केवल 32 मिनट में हराकर अगले दौर में जगह बनाई। अब वे जर्मनी की सेलिन हब्सच और एमेली लेहमैन के खिलाफ खेलेंगी। हालांकि, त्रीसा और गायत्री, जो इस टूर्नामेंट में चौथी वरीयता प्राप्त हैं, महिला युगल में बची एकमात्र भारतीय चुनौती हैं। अन्य भारतीय जोड़ियां प्रिया कोंजेंगबाम-श्रुति मिश्रा और वर्षिनी विश्वनाथ श्री-आरती सारा सुनील पहले दौर में हारकर बाहर हो गयी। प्रिया-श्रुति की जोड़ी को तुर्किये की नाजलिकन इंसी और बेंगिसु एरचेतिन ने 21-11, 21-19 से हराया। वहीं, वर्षिनी-आरती नीदरलैंड की डेबोरा जिल और डेनमार्क की सारा थाइगेसन के खिलाफ 21-13, 21-13 से हार गईं।

अभिषेक और वरूण टी20 रैंकिंग में दूसरे नंबर पर बरकरार

दुबई। भारतीय विस्फोटक बल्लेबाज अभिषेक शर्मा और मिस्ट्री स्पिनर वरूण चक्रवर्ती ने आइसीसी की ताजा टी20 अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग में क्रमश: बल्लेबाजों और गेंदबाजों की सूची में करियर का सर्वश्रेष्ठ दूसरा स्थान कायम रखा। हार्दिक पंड्या 252 अंक से हरफनमौला खिलाड़ियों की सूची में शीर्ष पर बने हुए हैं जिसमें नेपाल के दीपेंद्र सिंह ऐरी (233 अंक) दूसरे और आस्ट्रेलिया के मार्कस स्टोइनिस (210 अंक) तीसरे स्थान पर हैं। तिलक वर्मा और भारत के टी20 अंतरराष्ट्रीय कप्तान सूर्यकुमार यादव बुधवार को जारी इस रैंकिंग में क्रमश: चौथे और पांचवें नंबर पर काबिज हैं। आस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड 856 रेटिंग अंक लेकर बल्लेबाजों की सूची में शीर्ष पर हैं जिसमें इंग्लैंड के फिल सॉल्ट 815 अंक से तीसरे नंबर पर बने हुए हैं। अभिषेक के 829, तिलक वर्मा के 804 और सूर्यकुमार के 739 रेटिंग अंक हैं।

ओड़िशा मणिपुर और हरियाणा की शानदार जीत

खबर मन्त्र संवाददाता

रांची। राष्ट्रीय महिला हॉकी लीग 2024-25 के फाइनल फेज के दूसरे दिन हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा, मणिपुर हॉकी और हॉकी हरियाणा ने अपनी-अपनी प्रतियोगिताएं जीतकर अहम बढ़त बनाई। दिन के पहले मुकाबले में हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा ने हॉकी महाराष्ट्र को 1-0 से हराया। पूरे मैच में दोनों टीमों ने कड़ा संघर्ष किया, लेकिन 57वें मिनट में दीपिका बरवा ने गोल दागकर ओडिशा को जीत दिला दी। यह टूनार्मेंट में उनका लगातार दूसरा गोल था, जिससे ओडिशा ने अपनी जीत का सिलसिला बरकरार रखा। दूसरे मुकाबले में मणिपुर हॉकी ने हॉकी मध्य प्रदेश को 2-0 से शिकस्त दी। पहले हाफ में दोनों टीमें बराबरी पर रहीं, लेकिन 41वें मिनट में पुजा रामछूरिया ने पहला गोल दागा और 56वें मिनट में बब्यारानी देवी संडम ने दूसरा गोल कर मणिपुर की जीत पक्की कर दी। यह मणिपुर की टूनार्मेंट में पहली जीत रही। दिन के तीसरे मैच में हॉकी हरियाणा ने हॉकी मिजोरम को 2-1 से हराया। हरियाणा की ओर से सावी (44') और शशि खासा (59') ने गोल किए, जबकि मिजोरम की ओर से 57वें मिनट में वनलालरिन्हलुई ने एकमात्र गोल किया। इस जीत के साथ हरियाणा ने अपने दोनों मुकाबले जीतकर मजबूत स्थिति बना ली है।

सविता ने पुरस्कार जीतने पर कहा- टीम के बिना यह संभव नहीं था

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारतीय महिला हॉकी टीम की पूर्व कप्तान और अनुभवी गोलकीपर सविता पुनिया को हॉकी इंडिया के 7वें वार्षिक पुरस्कार 2024 में हॉकी इंडिया बलबीर सिंह सीनियर अवॉर्ड फॉर प्लेयर ऑफ द ईयर (महिला) और हॉकी इंडिया बलजीत सिंह अवॉर्ड फॉर गोलकीपर ऑफ द ईयर से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उनकी शानदार हॉकी यात्रा में एक और उपलब्धि जोड़ता है, लेकिन सविता के लिए यह सिर्फ व्यक्तिगत सफलता नहीं बल्कि उन सभी लोगों की मान्यता है जिन्होंने उनकी इस सफलता में योगदान दिया है। तीसरी बार हॉकी इंडिया बलबीर सिंह सीनियर अवॉर्ड जीतने पर अपनी खुशी जाहिर करते हुए सविता पुनिया ने कहा, बहुत अच्छा महसूस हो रहा है। इस साल कई खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया, इसलिए मुझे उम्मीद नहीं थी कि यह पुरस्कार मुझे मिलेगा। हर खिलाड़ी को उसकी मेहनत के लिए पहचान मिलना अच्छा लगता है और मैं इस सम्मान के लिए आभारी हूं। उन्होंने हॉकी इंडिया की ओर से बुधवार को जारी एक बयान में कहा, हमारी टीम में हम सब एक-दूसरे का समर्थन करते हैं और हर खिलाड़ी की सफलता की कामना करते हैं। कोई भी खिलाड़ी अकेले कुछ हासिल नहीं कर सकता, टीम के बिना यह संभव नहीं था। इस साल सविता व्यक्तिगत रूप से पुरस्कार समारोह में शामिल नहीं हो पाईं। उन्होंने टोरंटो, कनाडा से अपने ससुराल वालों के साथ लाइव प्रसारण देखा। सविता ने यह पुरस्कार अपने परिवार को समर्पित किया और कहा, मेरे पति और उनका परिवार हॉकी को लेकर बहुत सहयोगी रहा है। कई खिलाड़ियों पर शादी के बाद खेल छोड़ने का दबाव होता है, लेकिन उन्होंने मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। मैं खुद को भाग्यशाली मानती हूं कि मुझे उनका समर्थन मिला। हॉकी इंडिया बलजीत सिंह अवॉर्ड फॉर गोलकीपर ऑफ द ईयर जीतने पर सविता ने अपने खेल की चुनौतियों के बारे में बताया।

उन्होंने कहा, हर बचाव के पीछे घंटों की मेहनत होती है। फुटवर्क, फुर्ती, रिफ्लेक्स और पोजिशनिंग पर लगातार अभ्यास किया जाता है। हमारे कोचों ने भी मेरे खेल को निखारने के लिए कड़ी मेहनत की है। पिछला साल सविता के लिए खास रहा, खासकर हीरो हॉकी इंडिया लीग में जहां उन्होंने सूरमा हॉकी क्लब की अगुवाई की। उन्होंने कहा, हॉकी इंडिया ने महिला हॉकी लीग कराने का वादा पूरा किया और हम सभी इसके लिए आभारी हैं। यह टूर्नामेंट हमारे व्यक्तिगत कौशल को निखारने में बहुत सहायक रहा।

सविता को पुरस्कारों के साथ बड़ी धनराशि भी मिली

हॉकी इंडिया बलबीर सिंह सीनियर अवॉर्ड के लिए 25 लाख और हॉकी इंडिया बलजीत सिंह अवॉर्ड के लिए 5 लाख रुपये। उन्होंने इस पर कहा, पहले के वर्षों में हमें विश्वास नहीं होता था कि हमें इतनी बड़ी राशि भी मिल सकती है। यह सिर्फ सम्मान का विषय नहीं है, बल्कि हमें अपने परिवार और प्रियजनों की देखभाल करने का अवसर भी देता है। भारत में बहुत कम खेलों में महिलाओं को इतनी बड़ी पहचान और अवसर मिलते हैं। आने वाले समय में सविता का ध्यान अगले साल के वर्ल्ड कप और एफआइएच महिला प्रो लीग पर रहेगा। उन्होंने कहा, जब देश हमें इतना सम्मान और प्रोत्साहन देता है, तो यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम अपना सर्वश्रेष्ठ दें। इन पुरस्कारों के साथ एक जिम्मेदारी भी जुड़ती है। भारत के हालिया प्रदर्शन पर बात करते हुए उन्होंने कहा, हमने एफआइएच महिला प्रो लीग के भुवनेश्वर चरण में कुछ शानदार प्रदर्शन किए। खासकर नीदरलैंड्स को शूटआउट में हराना हमारे लिए एक बड़ी जीत थी। यह मेरी इस साल की सर्वश्रेष्ठ परफॉर्मेंस में से एक थी। उम्मीद है कि हम आगे और बेहतर करेंगे।

लवलीना व असम के अन्य मुक्केबाजों को राष्ट्रीय चैंपियनशिप में भाग लेने से रोक रहे कलिता: अजय

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारतीय मुक्केबाजी महासंघ (बीएफआइ) के अध्यक्ष अजय सिंह ने बुधवार को आरोप लगाया कि हाल में निलंबित किए गए बीएफआइ महासचिव हेमंत कलिता ओलंपिक कांस्य विजेता लवलीना बोरगोहेन को राष्ट्रीय चैंपियनशिप में भाग लेने से रोक रहे हैं। सिंह ने यहां एक आपात प्रेस कांफ्रेंस में कहा कि तोक्यो ओलंपिक में 69 किग्रा वर्ग में कांस्य पदक जीतने वाली लवलीना ग्रेटर नोएडा में गुरुवार से शुरू हो रही घरेलू प्रतियोगिता में हिस्सा लेना चाहती हैं लेकिन कलिता ने उन्हें टूर्नामेंट से हटने के लिए कहा है जो असम मुक्केबाजी संघ में सचिव के पद पर काबिज हैं। दिल्ली उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश सुधीर कुमार जैन द्वारा की गई जांच में कलिता वित्तीय कुप्रबंधन के दोषी पाए गए हैं। सिंह ने कहा, असम मुक्केबाजों को महिला राष्ट्रीय चैंपियनशिप में भाग लेने से हतोत्साहित कर रहा है। लवलीना ने प्रतियोगिता के समर्थन में एक वीडियो रिकॉर्ड किया है। लेकिन अधिकारियों को फोन आया है कि हेमंत कलिता ने उन्हें भाग नहीं लेने के लिए कहा है। असम मुक्केबाजी में लवलीना का बहुत बड़ा योगदान है इसलिए वह अपनी भागीदारी पर पुनर्विचार कर रही हैं। कलिता ने आरोप का तुरंत जवाब नहीं दिया है। वह जल्द ही होने वाले बीएफआई चुनावों में अध्यक्ष पद के लिए चार उम्मीदवारों में से एक थे, लेकिन उनका नामांकन इस आधार पर खारिज कर दिया गया कि उन्हें संस्था में अलग भूमिकाओं में दो कार्यकाल पूरा करने के बाद कूलिंग ऑफ पीरियड से गुजरना होगा।

स्पीड न्यूज

अवैध रूप से बालू लोड करते दो ट्रैक्टर जब्त

बोकारो। डीसी विजया जाधव के निर्देशानुसार जिला खनन पदाधिकारी के मार्गदर्शन में हरला थाना अंतर्गत तेलमच्चों ब्रिज के इंटेक वेल के समीप दामोदर नदी क्षेत्र में खनन टीम ने छापेमारी अभियान चलाया। इस दौरान अवैध रूप से बालू खनिज को लोड करते हुए दो ट्रैक्टरों को पकड़ा गया जिसे विधिवत जब्त कर हरला थाना को सुपुर्द करते हुए थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई गई। उक्त मामले में संलिप्त एक वाहन मालिक एवं एक वाहन चालक को गिरफ्तार किया गया है। उक्त अभियान में खान निरीक्षक जितेंद्र कुमार खान निरीक्षक सीताराम टुडू पुअनि रवि कुमार हरला थाना एवं स्थानीय पुलिस बल मौजूद थे।

शिक्षाविद शिव कुमार सिंह के निधन पर लोग हुए शोकाकुल

बोकारो। भारती साहित्य परिषद बोकारो के पूर्व अध्यक्ष व वर्तमान संरक्षक तथा सरस्वती विद्या मंदिर सेक्टर 3 के पूर्व प्राचार्य शिव कुमार सिंह नहीं रहे। उनका निधन उनके सेक्टर 3 के आवास पर हो गया। शोकसभा में विद्यालय के प्रधानाचार्य संजीव कुमार सचिव राजकुमार सिंह एवं विद्यालय परिवार के सभी सदस्य उपस्थित रहे। उपस्थित सभी लोगों ने उनकी आत्मा की शांति हेतु दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

लकड़ी तलाशने जंगल गई महिला का मिला शव

दुमका। जिले के रानीश्वर थाना की पुलिस ने दो दिन पहले जंगल में लकड़ी लेने के लिए निकली 50 साल की जायत्री केवटिन का शव मंगलवार की देर शाम कैराबनी डैम के किनारे से बरामद किया। बुधवार को पुलिस ने यूडी केस दर्ज कर शव का पोस्टमार्टम कराया। मृतका के भांजे सनोज केवट ने बताया कि मामा की कई साल पहले बीमारी से मौत हो गई। मामी रोज खाना बनाने के लिए जंगल से लकड़ी लाती थी। सोमवार की दोपहर घर में बताकर लकड़ी लेने निकल गई। शाम तक वापस नहीं आई तो हर जगह खोजबीन की, लेकिन कुछ पता नहीं चला। बुधवार की शाम गांव के कुछ लोग डैम के किनारे गए तो शव देखकर सूचित किया। वहां जाकर देखा तो शव मामी का था। बताया कि लकड़ी लेने के दौरान मामी को प्यास लग गई और डैम में पानी पीने के लिए चली गई। इस क्रम में डूब जाने से उनकी मौत हो गई। एक दिन पानी में रहने की वजह शव फूल गया और डैम के किनारे लग गया। ग्रामीणों ने शव देखने के बाद उसे और पुलिस को सूचित किया।

पिकअप वैन में लदा कोयला किया जब्त

शिकारीपाड़ा। दुमका जिले के शिकारीपाड़ा प्रखंड में कोयला माफियाओं का आतंक जारी है । प्रखंड के बादलपाड़ा लुटिया पहाड़ी वन क्षेत्र से फारेस्ट विभाग की टीम में एक पिकअप वैन में लगे 20 क्विंटल कोयला जप्त किया है हालांकि कोल माफिया और वाहन चालक भाग निकलने में सफल रहा। दरअसल वनपाल तरनी मंडल को गुप्त सूचना प्राप्त हुई कि बादलपाड़ा इलाके में अवैध रूप से कोयला का उत्खनन कर उसे ले जाया जा रहा है।

21 जोड़े का होगा सामूहिक विवाह : अनिल

बेरमो। जरीडीह बाजार स्थित अग्रवाल भवन में अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा व अग्रवाल परिवार के तत्वाधान में जरीडीह बाजार के अग्रसेन भवन धर्मशाला श्री श्री दामोदर नाथ महादेव मंदिर के प्रांगण में दिनांक 23 11 2025 को 21 जोड़े का सामूहिक विवाह का आयोजन किया जाएगा जिसको लेकर एक बैठक अग्रवाल भवन में की गई बैठक अध्यक्षता मदन मोहन अग्रवाल ने की इस कार्यक्रम को विस्तार पूर्वक बताते हुए अखिल भारतीय अग्रवाल कल्याण महासभा के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने बताया कि यह विवाह वैसे परिवार के लिए है जो धनाभाव के कारण अपने बच्चों का विवाह करने में असमर्थ है इसके लिए जरीडीह बाजार स्थित अनिल अग्रवाल के आवासीय कार्यालय में निशुल्क रजिस्ट्रेशन कल से शुरू है।

माफिया डोजरिंग के बावजूद कोयला खादान पुनः चालू

खबर मन्त्र संवाददाता

दुमका। जिले के शिकारीपाड़ा प्रखंड माफिया तत्वों की करतूत से आए दिन सुर्खियों में छाया रहता है प्रशासन शिकारीपाड़ा थाना क्षेत्र के बादल पाड़ा लुटिया पहाड़ी क्षेत्र के अवैध कोयला खदानों पर कार्रवाई करती है महज प्रशासन के डोज शरिंग के बाद ही पुनः अवैध कोयला खदानों को माफियाओं द्वारा चालू कर लिया जाता है। बताते चलें कि शिकारीपाड़ा थाना क्षेत्र के पंचवाहिनी क्षेत्र में 10 से 15 की संख्या धड़ल्ले से अवैध कोयला की खदान संचालित है। पंच वाहिनी अवैध कोयला खदान में प्रतिदिन तराजू पर वजन कर कोयला ट्रैक्टर, मोटरसाइकिल में कोयला लोड दिया जाता है। रात्रि में मिनी ट्रक, पिकअप वाहन में माफिया कोयला लोड देकर सप्लाई करते हैं। प्रशासन को जानकारी होने के बावजूद भी पंच वाहिनी क्षेत्र पर कार्रवाई करने से पदाधिकारी बचते हैं। इक्का-दुक्का गाडी पकड़ महज खानापूर्ति करने में विभाग लगी है।

स्वास्थ्य कर्मियों को 8 माह से मानदेय नहीं मिलने पर गये

अनिश्चितकालीन हड़ताल पर

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो/कसमार। पिछले आठ माह से मानदेय नहीं मिलने से नाराज बोकारो जिले के सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों में सेवारत आउटसोर्सिंग स्वास्थ्यकर्मी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले गये हैं। इससे सरकारी अस्पतालों की चिकित्सा सेवा चरमरा गई है। आउटसोर्सिंग स्वास्थ्यकमीर्यों ने बताया कि उन्हें पिछले आठ महीनों से मानदेय भुगतान नहीं किया गया है जिससे आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई है।

एक तो काफी कम मानदेय मिलता है उसके बाद भी निश्चित समय पर नहीं मिलने से माली हालत खराब हो रही है। ईएसआई ईपीएफ बीडीए वेतन पर्ची एवं बेसिक सुविधाएं लागू की जाएं। 8 माह के बकाया मानदेय का अविलंब भुगतान किया जाए। हर माह की 1 से 10 तारीख के बीच वेतन भुगतान सुनिश्चित हो। समान कार्य के लिए सम्मानजनक वेतन दिया जाए। उन्होनें कहा कि कर्मचारियों की जायज मांगों को लेकर प्रशासन को कई बार अवगत कराया गया लेकिन कोई ठोस पहल नहीं हुई। अब जब तक मांगे पूरी नहीं होतीं आंदोलन जारी रहेगा। बता दें कि कसमार प्रखंड में राइडर्स सिक्योरिटी सर्विसेज लिमिटेड के द्वारा सरकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र अतिरिक्त प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र उप स्वास्थ्य केंद्र में आउटसोर्सिंग के तहत फार्मासिस्ट एलटी कोलचैन जीएनएम एएनएम एचडब्ल्यू सीटी सुरक्षाकर्मी सफाईकर्मी आदि कर्मियों की बहाली की गयी हैं। कसमार स्वास्थ्य चिकित्सा प्रभारी डॉ प्रफुल्ल महतो ने कहा कि आउटसोर्स स्वास्थ्य कर्मियों की हड़ताल से अस्पताल की सेवाओं पर असर पड़ेगा। हालांकि वैकल्पिक व्यवस्था के तहत सरकारी कर्मचारियों से कार्य करवाया जा रहा है। उन्होंने बताया कि इस संबंध में वरीय अधिकारियों को सूचित कर दिया गया है।

जमीन से प्रभावित लोगों ने डीसी के जनता दरबार में लगाई गुहार

बोकारो। चास स्थित प्रभात कॉलोनी वार्ड संख्या 26 में सिक्कमी किस्म की जमीन से प्रभावित लोगों ने उपायुक्त के जनता दरबार में 108 लोगों के सामूहिक हस्ताक्षरयुक्त आग्रह पत्र समर्पित किया गया। उपस्थित लोगों ने अंचल अधिकारी चास एवं संबंधित क्षेत्र के राजस्व कर्मचारी की उक्त समस्या के समाधान के प्रति गंभीरता पूर्वक कार्रवाई नहीं करने के कारण भारी गुस्सा एवं रोष प्रकट किया। मौके पर ललन प्रसाद ने कहा कि प्रभात कॉलोनी निवासियों ने विगत 28 जनवरी को सीओ चास के समक्ष आवेदन पत्र देकर सिक्कमी किस्म की जमीन को पंजी-2 में सुधार करने का आग्रह किया था। पुनः एक मार्च को उनसे मिलकर उक्त समस्या के समाधान के लिए वार्ता की गई। वार्ता में अंचल अधिकारी ने संबंधित क्षेत्र के राजस्व कर्मचारी अशोक मिश्रा को निर्देश दिया कि उक्त क्षेत्र का खतियान व्यवस्थित कर सिक्कमी से प्रभावित लोगों की समस्या का समाधान किया जाए। वार्ता में ही राजस्व कर्मचारी अशोक मिश्रा ने टालमटोल करने की नीयत से प्रभावित लोगों को स्वयं खतियान व्यवस्था करने की बात कही। प्रभावित लोगों ने जब इसका विरोध किया तो सीओ ने राजस्व कर्मचारी अशोक मिश्रा को निर्देश दिया कि वे उक्त क्षेत्र का खतियान स्वयं व्यवस्थित करें तथा इसके लिए क्षेत्र के आमजन से यथासंभव सहयोग लें। थक-हारकर हम प्रभात कॉलोनी निवासी उपायुक्त महोदया के समक्ष उनके जनता दरबार में उपस्थित होकर संयुक्त हस्ताक्षरयुक्त आग्रह पत्र सौंपकर मांग कर रहे हैं कि हमारी समस्या का समाधान मानवता के आधार पर स्वयं हस्तक्षेप कर किया जाए।

नवाह्न परायण महायज्ञ बालकांड पाठ के साथ प्रारंभ

मंगल भवन अमंगल हारी के गूंज से पूरा माहौल हुआ भक्तिमय

खबर मन्त्र संवाददाता

फुसरो। अंगवाली स्थित मैथन टुंगरी धर्मसंस्थान में श्री श्री रामचरित मानस नवाह्न परायण पाठ व महायज्ञ के दूसरे दिन बुधवार को मानस व्यास अनिल पाठक वाचस्पति द्वारा बालकांड के पाठ से प्रारंभ की गयी। यहां मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के राजदरबार सजाया गया जहां यज्ञ आचार्य राजकुमार चटर्जी, उपाचार्य सुकुमार चटर्जी, सहायक रामपदो चटर्जी व राजेश चटर्जी द्वारा पूजा अर्चना किया गया। यज्ञ के संस्थापक सह आचार्य रामधाम शरण उर्फ गौर बाबा, यज्ञ समिति अध्यक्ष रामबिलास रजवार, सचिव भगवान दास, मंच संचालक संतोष नायक ने व्यास अनिल पाठक सहित अमित पाठक, सतीश मिश्रा, अशोक मिश्रा, बलदेव शरण, राजेश पंडित आदि मंडली को अंगवस्त्र ओढ़ाकर सम्मानित किया और महायज्ञ की सफलता की कामना की। मानस पाठ् में 45 कन्याए - माताएं व दस बालको ने भाग लिया। यहां व्यास अनिल पाठक ने बालकांड की पाठ की जिसमें गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा सभी देवी देवता इत्यादि का वंदन किया गया। पाठ में शिव पार्वती विवाह प्रसंग का वर्णन किया गया। जिसके उपरांत आरती व प्रसाद वितरण की गयी। सुबह आठ बजे से 12 बजे तक निरंतर चार घण्टे मानस पाठ संगीत के साथ सम्पन्न हुआ। मंगल भवन अमंगल हारी के मंत्र से पूरा माहौल भक्तिमय हो गया।

मंईया सम्मान योजना की राशि से वंचित

महिलाओं का प्रखंड कार्यालय में लगा हुजूम

खबर मन्त्र संवाददाता

कतारबद्ध महिलाएं व सूची देखते लोग

दुमका। आखिरकार टूटने लगा उपराजधानी दुमका की मंईया के सब्र का बांध। इसका अंदाजा प्रखंड कार्यालय में उमड़ी महिलाओं की भीड़ से लगाया जा सकता है। मईया सम्मान योजना के दम पर हालिया संपन्न विधानसभा चुनाव में झारखंड में इंडिया गठबंधन को जबरदस्त सफलता मिली। लगातार दूसरी बार राज्य में हेमंत सोरेन के नेतृत्व में सरकार बनी। सरकार बनाने में मंईयां सम्मान योजना को मास्टर स्ट्रोक माना गया। लेकिन अब उसी मंईयां सम्मान योजना को लेकर सदन से सड़क तक हंगामा मचा है। सदन में विपक्ष सरकार को घेर रही है, तो विभिन्न जगहों पर मंईयां सड़कों पर उतर कर सरकार से सवाल पूछ रही है। दरअसल चुनाव के पूर्व सरकार ने मंईयां सम्मान योजना की राशि को 1000 से बढ़ा कर 2500 कर दिया। सरकार गठन के बाद लाभुकों के खाता में एक किस्त 2500 आया भी। उसके बाद होली के पूर्व कुछ लाभुक के खाते में तीन महीने की राशि यानी 7500 रुपए एकसाथ आया। लेकिन यह राशि सभी लाभुकों के खाता में नहीं पहुंचा। जिसके खाता में तीन माह की राशि एक साथ पहुंची, उसने जम कर होली मनाई। लेकिन कई लाभुक ऐसे भी रहे। जिनकी होली फीकी पड़ गई।

वेदांता ईएसएल ने ईएसएल टी10 क्रिकेट टूर्नामेंट 2025 का आयोजन

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। वेदांता ईएसएल ने वेदांता ईएसएल टी10 क्रिकेट टूर्नामेंट 2025 का आयोजन ईआरजी द्वारा रवीश शर्मा डिप्टी सीईओ और पूर्णकालिक निदेशक और संजीव तिवारी उप निदेशक डीआईपी अध्यक्ष के मार्गदर्शन में किया। टूर्नामेंट में कुल 20 टीमों में 16 पुरुष टीमें और 4 महिला टीमें शामिल थीं।

मैचों की एक श्रृंखला के बाद टूर्नामेंट ने अपने चैंपियन को ताज पहनाया जिसमें ईएसएल टाइटन्स समग्र विजेता के रूप में उभरे जबकि रॉयल विनर्स ने महिला चैम्पियनशिप का खिताब जीता और प्रोजेक्ट इलेवन ने पुरुष चैम्पियनशिप में जीत हासिल की। इस कार्यक्रम में शारदेंदु राम त्रिपाठी विनोद कुमार सिंह और मोहम्मद महमूद अहमद को सर्वश्रेष्ठ कमेंटेटर नामित किया गया जबकि मीनू सिंह को सर्वश्रेष्ठ स्कोरर के रूप में सम्मानित किया गया। पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज के रूप में दाउद अंसारी सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज के रूप में अभिषेक कुमार एवं महिला में सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज स्मृति स्निग्धा बेहरा व सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज के रूप में पल्लवी को सम्मानित किया गया। मौके पर कंपनी के डिप्टी सीईओ और पूर्णकालिक निदेशक रवीश शर्मा ने कहा कि ईएसएल टी10 क्रिकेट टूर्नामेंट टीम वर्क, स्वास्थ्य और कर्मचारी जुड़ाव की संस्कृति को बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी।

पूर्व संरक्षक कैलाश महतो की पुण्यतिथि मनाई गई

खबर मन्त्र संवाददाता

बेरमो। युवा व्यवसायी संघ फुसरो के पूर्व संरक्षक सह समाजसेवी कैलाश महतो की ग्यारहवीं पुण्यतिथि मेघनी लॉज के सभाकक्ष में मनायी गयी। इस अवसर पर सर्वप्रथम उनके तस्वीर पर उनकी पत्नी सावित्री देवी ने माल्यार्पण तथा दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरूआत की। तत्पश्चात आगंतुकों ने बारी बारी से उनके चित्र पर पुष्प अर्पण कर उनके प्रति अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। मुख्य अतिथि इंद्रदेव महतो ने कहा कि स्व कैलाश महतो सच्चे रूप में समाज के गरीबो ,पीड़ितों और जरूरतमंदों की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। चिंतामणि महतो तथा सूरज महतो ने कहा कि स्व कैलाश महतो नेक और मृदुभाषी व्यक्तित्व के धनी थे। इस अवसर पर विश्वनाथ रजवार, ललन रवानी, चेतलाल महतो, मोहन महतो, सुरेश महतो, जयप्रकाश महतो, प्रिया कुमारी आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे।

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस पर सुरक्षा-प्रतिज्ञा

खबर मन्त्र संवाददाता

बोकारो। राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस के उपलक्ष्य में बीएसएल के ज्ञानार्जन एवं विकास केंद्र के मेन ऑडिटोरियम में आयोजित एक समारोह में मुख्य अतिथि निदेशक प्रभारी बीके तिवारी सहित ईडी सीआर महापात्रा सीआर मिश्रा सीएमओ व प्रभारी बीजीएच डॉ बीबी करुणामय कार्यकारी सीजीएम आनंद रौतेला अन्य सीजीएम विभागाध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिकारीगण एवं कर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम का शुभारंभ सेल अध्यक्ष अमरेन्दु प्रकाश के वीडियो संदेश के साथ किया गया जिसमें उन्होंने राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस की थीम 'सुरक्षा और कल्याण - विकसित भारत के लिए अनिवार्य' पर कहा कि सुरक्षा हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। एजीएम मनोज कुमार ने सुरक्षा दिवस की महत्ता पर प्रकाश डाला। मौके पर मुख्य अतिथि निदेशक प्रभारी बीरेंद्र कुमार तिवारी ने सभी को सुरक्षा प्रतिज्ञा दिलाई। सीजीएम पी चौधरी एवं अनिंद्य दास ने अपने विभागों में सुरक्षा के क्षेत्र में किए गए पहलों पर अपने अनुभव साझा किए। निदेशक प्रभारी श्री तिवारी ने सुरक्षा संस्कृति की अहमियत पर विस्तारपूर्वक अपने विचार रखे और कहा कि सुरक्षा पहलुओं के प्रति जागरूकता के साथ ही इसे अपने जीवनशैली में आत्मसात कर ही सही मायनों में सुरक्षा संस्कृति परिवर्तन के मुहिम को सफल बनाया जा सकता है। अतिथियों ने सुरक्षा और गृह व्यवस्था तथा परिक्षेत्रीय रखरखाव के लिए विजेताओं और उपविजेताओं को ट्रॉफी प्रदान की। विभिन्न श्रेणियों में विजेता और उपविजेता टीमों की घोषणा एवं विभिन्न विभागों के सुरक्षा के प्रति समर्पित कर्मियों को भी सम्मानित किया गया। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं ईएल एंड टीसी एचआर तथा जनसंपर्क विभाग को भी सुरक्षा दिवस कार्यक्रम पर उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। संचालन एजीएम मनोज कुमार ने तथा जीएम विकास गुप्ता ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

खबर एक नजर में

आउटसोर्सिंग कर्मी अनिश्चितकालीन हड़ताल पर

बेरमो। आउटसोर्सिंग कर्मचारियों के द्वारा मानदेय, इ पी एफ, इ एस आई का भुगतान की मांग को लेकर 19 मार्च से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर हैं। जिसमें अनुमंडलीय अस्पताल फुसरो में कुल 28 आउटसोर्सिंग कर्मी हड़ताल पर मौजूद थे। हड़ताल पर गए कर्मियों ने बताया कि हमलोगों का वेतन भुगतान पिछले लगभग 7-8 महीने से नहीं मिला है। जिसे लेकर हम सभी ने कई बार वरीय अधिकारियों को भी जानकारी दी, मगर इस पर कोई भी सुनवाई नहीं हो रही है। बोकारो जिला अंतर्गत सभी स्वास्थ्य संस्थान में हड़ताल में जाने से पहले इसकी जानकारी भी दी जा चुकी है कि आउटसोर्सिंग कर्मचारियों का वेतन भुगतान नहीं हो रहा है जिससे उनकी आर्थिक स्थिति खराब है।

पुलिस कप्तान से पुलिस अधिकारियों की सराहना, होंगे सम्मानित

बेरमो। शांति और सौहार्दपूर्ण वातावरण में होली संपन्न कराने में अहम भूमिका निभाने वाले बोकारो जिले के पुलिसकर्मी सम्मानित किए जाएंगे। पुलिस कार्यालय में आयोजित मासिक अपराध गोष्ठी में होली जैसे त्यौहार में भी परिवार से दूर कर्मठता से अपनी ड्यूटी निभाने वाले पुलिसकर्मियों की पुलिस अधीक्षक मनोज स्वगीर्यारी ने सराहना की साथ ही आने वाले रामनवमी और सरहुल पर्व में भी मुस्तैदी से अपना कर्तव्य निभाने को जिले के पुलिसकर्मी व पदाधिकारियों को प्रोत्साहित किया। पुलिस अधीक्षक मनोज स्वर्गियारी ने बताया कि जिन पुलिसकर्मी और पदाधिकारियों ने जघन्य अपराधों को बहुत कम समय में खुलासा किया, उन्हें रिवार्ड देने के लिए वरीय अधिकारियों और पुलिस मुख्यालय को अनुशंसा की जाएगी।

मंईयां सम्मान योजना की सूची से कई फर्जी लाभुकों का नाम हटा

बेरमो। मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना की सूची से कई फर्जी लाभुकों का नाम हटा दिया गया है। बेरमो प्रखंड क्षेत्र में अब तक कई हजार लाभुकों को तीन माह की राशि उनके खाते में भेज दी गयी है जबकि कई लाभुकों की खाते में राशि नहीं मिली जिससे बेरमो प्रखंड सहित फुसरो नप क्षेत्र की लाभुकों में नाराजगी देखने को मिली। तीन माह की राशि नहीं मिलने से काफी संख्या में महिलाएं व पुरुष मंगलवार को बेरमो प्रखंड कार्यालय पहुंचे। यहां आधार सेंटर में जानकारी प्राप्त करने को लेकर काफी संख्या में लोग पहुंचे। भीड़ को देखते हुए अंचल कार्यालय में अलग काउंटर खोल लाभुकों से शिकायत दर्ज कराया गया।

ईद की खरीदारी को लेकर बाजार की बढ़ी रौनक

बेरमो। ईद का त्योहार नजदीक आने के साथ फुसरो के बाजारो में खरीदारों की भीड़ से रौनक बढ़ने लगी है। बुधवार को बाजार में कपड़े, जूते-चप्पल सहित तरह-तरह के खाने-पीने के चीजों की दुकान पर लोग खरीदारी करते दिखे। कपड़े की दुकानों, रेडीमेड के साथ-साथ आभूषण व अन्य की दुकानों पर अच्छी भीड़ नजर आई। न्यू काश्मीर ड्रेस कलेक्शन मे रेडीमेड कपडे की खरीदारी को लेकर जबर्दस्त भीड़ दिखाई दे रही है। प्रोपराइटर इलियास हुसैन ने बताया कि ईद के फैशन शरारा रशियन प्लाजो, हीरा मंडी, अफगानी सूट की डिमांड बढ़ी है। मस्जिदों में दुसरे जुमे की नमाज पढ़ी गई, इसके बाद से ईद त्योहार की तैयारियां तेज हो गई है, बच्चे ही नहीं घर की महिलाओं के साथ पुरुष भी कपड़ों की दुकानों पर खरीदारी करते दिख रहे हैं। देर संध्या से फुसरो क्षेत्र के पुराना बीडीओ ऑफिस, रहीमगंज, रानीबाग,बैक मोड़, फुसरो बाजार आदि इलाकों में जबर्दस्त भीड़ दिखाई दी।

ग्रामीण फुटबॉल टूर्नामेंट के तीसरे दिन कुल 7 मैच खेले गये

बेरमो/कथारा। सीसीएल जीएम ग्राउंड में ग्रामीण फुटबॉल प्रतियोगिता में बुधवार को सुबह आठ बजे प्रतियोगिता की तीसरे चरण की शुरूआत हुई। प्रतियोगिता में कुल 7 मैच खेले गए जिसमें एक टीम को वाकओवर जीत मिला तो चांपी पंचायत की टीम का मुकाबला स्वांग उतरी पंचायत से हुई जिसमें स्वांग की टीम ने जीत दर्ज की। जबकी खम्हरा क्लब और गोमिया पलिहारी की टीम के बीच प्रतियोगिता में खम्हरा क्लब ने जीत दर्ज की। वही जारंगडीह 16 नंबर और झिरकी एफ सी के बीच टक्कर में झिरकी की टीम ने जीत हासिल की। जबकि ललपनिया की अनुपस्थिति के कारण गोड़गोड़वा की टीम को वाकओवर जीत मिला।

पंचायत प्रतिनिधियों और सीएससी ऑपरेटर की गैर मौजूदगी से महिलाएं हलकान

बेरमो। इन दिनों सभी प्रखंड में महिलाओं के सामने अजीब उहापोह की स्थिति देखी जा रही है। जिने माइंया सम्मान की राशि मिल गई है वे महिलाएं पूरी तरह उत्साहित नजर आ रही हैं मगर जिन महिलाओं के खाते में अभी तक यह राशि नहीं पहुची है वह महिलाएं उदास, हताश और कारण जानने के लिए प्रखंड कार्यालय व सीएससी केन्द्रों का चक्कर लगाने को बाध्य नजर आ रही हैं। अगर ऐसे में पंचायत सचिवालय से तमाम पंचायत प्रतिनिधिगण व सीएससी सेन्टर बंद मिले तो महिलाओं का आक्रोश लाजमी है। इसी तरह का एक मामला उस समय गोमिया प्रखंड के पलहारी पंचायत भवन में देखने को मिला। उक्त पंचायत की कई महिलाओ को माइंया सम्मान योजना का लाभ 3 किस्त 7500 अब तक उनके खाते में नहीं आने की जानकारी लेने महिलाएं वहां पहुंची मगर सीएससी केंद्र बंद होने के साथ-साथ कोई भी पंचायत प्रतिनिधि पंचायत मे नहीं मिली। बस क्या था महिलाओं का आक्रोश फुट पड़ा और पंचायत भवन परिसर में ही महिलाओं ने खूब हो हल्ला मचाया और लौट गई।

पेज 1 का शेष... वंशीधरनगर में सीएम

राज्य वासियों के उत्थान रूपरेखा हो रही तैयार : मुख्यमंत्री ने कहा कि आने वाले वर्षों में हम राज्यवासियों के उत्थान तथा उनके विकास के लिए क्या-क्या कार्य करेंगे, इसकी रूपरेखा तैयार हो रही है। इन कार्यों का बजटीय उपबंध विधान सभा सत्र के माध्यम से पारित कर राज्य सरकार अपना कार्य शुरू करेगी, इस निमित्त विधान सभा सत्र आहूत की गई है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आपके इस मैदान में मैं पहली बार नहीं आया हूं, कई बार आया हूं।

नारी शक्ति को दिया सम्मान : मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य की आधी आबादी को उनके पैरों पर खड़ा करने के लिए ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए इस राज्य की सभी महिलाओं को हमने सम्मान राशि दिया है। देश के 28 राज्यों में नारी शक्ति को सबसे अधिक सम्मान देने का काम झारखंड में किया जाता है, वह भी राज्य सरकार की ओर से। मुख्यमंत्री ने कहा कि हम कहते नहीं हैं, हम करके दिखाने वाले लोग हैं। हमने चुनाव से पहले जो वादा किया, सरकार बनते ही उस वादा को पूरा किया।

प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों को विकसित करेंगे : मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार धार्मिक स्थलों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करने की भावी योजना बनाने की तैयारी कर रही है। आप लोगों का सहयोग बना रहा, तो विगत पांच साल में जो गति विकास को दी गयी है, उस गति को 100 गुना बढ़ाने का वादा करता हूं। यहां की जो भी चिर परिचित मांगे है उन सभी मांगों का समाधान करने का कार्य राज्य सरकार करेगी। इस अवसर पर विधायक अनंत प्रताप देव, विधायक कल्पना सोरेन, विधायक नरेश प्रसाद सिंह, पूर्व मंत्री मिथिलेश ठाकुर, आईजी पलामू सुनील भास्कर, डीआईजी, वाई. एस रमेश और उपायुक्त तथा पुलिस अधीक्षक सहित कई लोग थे।

स्पीड न्यूज

असम में यूरिया का कारखाना खुलेगा

नयी दिल्ली । सरकार ने असम के नामरूप में ब्रह्मपुत्र वैली फर्टिलाइजर कॉरपोरेशन लिमिटेड (बीवीएफसीएल) के परिसर में एक नया ब्राउनफील्ड अमोनिया-यूरिया संयंत्र स्थापित करने के प्रस्ताव को आज मंजूरी दे दी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल की आज यहां हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया। सूचना प्रसारण, रेल, इलैक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने यहां एक संवाददाता सम्मेलन में कैबिनेट के फैसलों की जानकारी दी।

टोक्यो और दो प्रांतों में भारी बर्फबारी

टोक्यो। जापान की राजधानी टोक्यो और दो प्रांतों में बुधवार को भारी बर्फबारी हुई है। बर्फबारी से प्रभावित प्रांत हैं- गुनमा और हिरोशिमा। एजेंसी के अनुसार, सुबह 9 बजे तक गुनमा प्रांत के मिनाकामी में 188 सेंटीमीटर और हिरोशिमा प्रांत के किता-हिरोशिमा में 104 सेंटीमीटर बर्फ गिरी है। राजधानी टोक्यो के 23 वार्डों में 20 मार्च की सुबह तक बर्फबारी जारी रहने के आसार हैं। इस दौरान एक से पांच सेंटीमीटर तक बर्फ गिरने की उम्मीद है।

हैती में हिंसा से 60 हजार विस्थापित

पनामा सिटी। हैती की राजधानी पोर्ट-ऑ-प्रिंस में बढ़ती हिंसा से पिछले महीने में लगभग 60 हजार लोगों को अपने घरों को छोड़कर भागना पड़ा है। अंतरराष्ट्रीय प्रवासन संगठन (आईओएम) ने यह जानकारी दी।आईओएम ने बताया कि गैंग हिंसा, विस्थापन और अस्थिरता ने पोर्ट-ऑ-प्रिंस और देश के अधिकांश हिस्सों को वर्षों से परेशान किया है, हमलों की प्रत्येक लहर ने पहले से ही कमजोर समुदायों की स्थिति को और खराब कर दिया है।

फाजिल्का में ड्रोन के साथ तस्कर गिरफ्तार

जालंधर । बीएसएफ और एसएसओसी फाजिल्का ने फाजिल्का सीमा पर ड्रोन के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। बीएसएफ के प्रवक्ता ने बताया कि ठोस सूचना मिलने पर, बीएसएफ और एसएसओसी फाजिल्का की संयुक्त टीम ने शाम करीब सात बजे एक संदिग्ध घर पर छापा मारा और फाजिल्का के झुग्गे गुलाब सिंह गांव के पास एक डीजेआई माविक-3 क्लासिक ड्रोन के साथ एक भारतीय तस्कर को पकड़ा।

पुणे : बस में आग से चार यात्री जिंदा जले

मुंबई। महाराष्ट्र में पुणे के हिंजेवाड़ी इलाके में बुधवार को मिनी बस में आग लगने से चार लोगों की जलकर मौत हो गयी जबकि पांच अन्य झुलस गये। पुलिस सूत्रों के मुताबिक सुबह 07.30 बजे व्योमा ग्राफिक्स के 12 कर्मचारियों को वारजे से हिंजेवाड़ी ले जा रहे बस में अचानक आग लग गयी। कई कर्मचारी बस से निकलने में सफल रहे , हालांकि चार लोगों की जलकर मौत हो गयी और पांच अन्य झुलस गये। इंजन में खराबी के कारण बस में आग लग गयी।

हुंडई के वाहन होंगे 3 प्रतिशत तक महंगे

नयी दिल्ली । हुंडई मोटर इंडिया लिमिटेड ने अप्रैल से अपने वाहनों की कीमतों में तीन प्रतिशत तक की वृद्धि करने की बुधवार को घोषणा की। कंपनी ने यहां जारी बयान में कहा कि अन्य कारणों के अलावा बढ़ती इनपुट लागत, कमोडिटी की कीमतों में वृद्धि और उच्च परिचालन व्यय के कारण मूल्य वृद्धि की जा रही है।

मूल्य वृद्धि की मात्रा वेरिएंट और मॉडल के आधार पर अलग-अलग होगी।

बिहार में 15 पैसे प्रति यूनिट सस्ती हुई बिजली

पटना। बिहार में विधानसभा चुनाव से पहले बिजली उपभोक्ताओं को राहत मिली है। राज्य के ऊर्जा मंत्री बिजेंद्र प्रसाद यादव ने बुधवार को विधानसभा में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि लाभ कमाने वाली बिजली कंपनियों ने बिजली के दाम में 15 पैसे प्रति यूनिट की कटौती की है।

देश में बढ़ेगा दूध उत्पादन

डेयरी विकास के लिए कैबिनेट ने 6,190 करोड़ की दी मंजूरी

- **पूर्वोत्तर क्षेत्र, केंद्र शासित प्रदेशों में दूध की खरीद और प्रसंस्करण व्यवस्था सुदृढ़ होगा : वैष्णव**
- **दस साल में दूध की उत्पादकता में 26.34 प्रतिशत की वृद्धि हुई**

एजेंसी

नयी दिल्ली। सरकार ने बुधवार को दूध उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से दो योजनाओं के लिए परिव्यय बढ़ाकर 6,190 करोड़ रुपये कर दिया। सूचना और प्रसारण मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि केंद्रीय मंत्रिमंडल ने संशोधित राष्ट्रीय गोकुल मिशन (आरजीएम) और राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम (एनपीडीडी) को मंजूरी दे दी है। दूध उत्पादन और किसानों की आमदनी बढ़ाने के लिए दोनों योजनाओं में अब कुल परिव्यय 6,190 करोड़ रुपये होगा। मंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने पशुधन क्षेत्र में विकास को बढ़ावा देने के लिए संशोधित आरजीएम को मंजूरी दे दी है। विकास कार्यक्रम योजना के केंद्रीय क्षेत्र के हिस्से के रूप में संशोधित आरजीएम का कार्यान्वयन 1,000 करोड़ रुपये के अतिरिक्त परिव्यय के साथ किया जा रहा है, जिससे वित्त वर्ष 2021-22 से वित्त वर्ष 2025-26 तक 15वें वित्त आयोग चक्र के दौरान कुल राशि 3,400 करोड़ रुपये हो जाएगी। वैष्णव ने कहा कि इस योजना में डेयरी बुनियादी ढ़ांचे में सुधार के लिए समर्पित है।

इसमें दूध शीतक संयंत्र, उन्नत दूध परीक्षण प्रयोगशालाएं और प्रमाणन प्रणाली शामिल हैं। यह नई ग्राम डेयरी सहकारी समितियों के गठन में भी सहायक होगा और पूर्वोत्तर क्षेत्र (एनईआर), विशेष रूप से दूरदराज और पिछड़े क्षेत्रों

तथा पहाड़ी क्षेत्रों और केंद्र शासित प्रदेशों (यूटी) में दूध की खरीद और प्रसंस्करण व्यवस्था को सुदृढ़ बनाएगा।साथ ही समर्पित अनुदान सहायता के साथ इसमें दो दूध उत्पादक कंपनियों का गठन किया जाएगा। सहकारिता द्वारा डेयरी संचालन (डीटीसी) गतिविधियां शामिल है। इसमें हस्ताक्षरित समझौतों के अनुसार जापान सरकार और जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (जेआईसीए) के सहयोग से डेयरी विकास संचालन जारी रहेंगी। यह घटक नौ राज्यों (आंध्र प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, तेलंगाना, उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश और पश्चिम बंगाल) में डेयरी सहकारी समितियों के सतत विकास, उत्पादन, प्रसंस्करण और विपणन बुनियादी ढांचे में सुधार पर केंद्रित है। उन्होंने कहा कि एनपीडीडी के क्रियान्वयन से व्यापक सामाजिक-आर्थिक प्रभाव पड़ा है। इससे 18 लाख 74 हजार से अधिक किसान लाभान्वित हुए हैं, 30,000 से अधिक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार सृजित हुए हैं। इससे प्रतिदिन 100 लाख 95 हजार लीटर दूध खरीद क्षमता में बढ़ोतरी हुई है।

छोटे व्यापारियों को भीम-यूपीआइ लेन-देन पर मिलेगा प्रोत्साहन

नयी दिल्ली। सरकार ने कम मूल्य के भीम-यूपीआई लेनदेन को बढ़ावा देने के लिए छोटे व्यापारियों को कम मूल्य के लेन-देन पर प्रोत्साहन देने की योजना बनाई है। 2000 रुपये से कम यूपीआई-लेनदेन पर छोटे व्यापारियों को लेन-देन का 0.15 प्रतिशत प्रोत्साहन मिलेगा। केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अश्वनी वैष्णव ने बताया कि इस वित्त वर्ष में इस प्रोत्साहन के लिए 1500 करोड़ रुपये का व्यय निर्धारित किया गया है। लेनदेन की योजना के तहत दो श्रेणियां बनाई गई हैं। छोटे व्यापारियों को 2 हजार तक के लेनदेन में प्रोत्साहन भी मिलेगा वहीं बड़े व्यापारियों और छोटे व्यापारियों को 2 हजार से अधिक के लेनदेन पर एमडीआर शून्य रहेगा।

नयी टोल नीति की घोषणा करेगी सरकार : गडकरी

टोल टैक्स केवल चार लेन पर वसूल रही है सरकार

नयी दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि केंद्र सरकार जल्द ही राष्ट्रीय राजमार्गों पर टोल टैक्स के लिए नई नीति घोषित करेगी। इसका मकसद उपभोक्ताओं को उचित रियायत मुहैया कराना है। राज्यसभा में प्रश्नकाल के दौरान सवालों का जवाब देते हुए गडकरी ने सड़क अवसंरचना परियोजनाओं के वित्त पोषण के लिए टोल टैक्स की आवश्यकता और उपयोगिता का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि सरकार सड़क अवसंरचना के निर्माण पर बहुत अधिक खर्च कर रही है, इसलिए टोल टैक्स आवश्यक है। इसके साथ ही उन्होंने टोल प्लाजा के संबंध में मौजूदा चिंताओं और अपवादों को दूर करने के लिए नई नीतियों को सुनिश्चित करने की बात कही। उन्होंने कहा कि सरकार जल्द ही टोल टैक्स के लिए एक नई नीति घोषित करेगी। मंत्री ने कहा कि जब आपको अच्छी सड़क चाहिए तो आपको इसके लिए भुगतान करना

होगा। उन्होंने कहा कि असम में सरकार 03 लाख करोड़ रुपये खर्च करने की योजना बना रही है। मैं ब्रह्मपुत्र पर बहुत से पुल बना रहा हूं। हम बाजार से धन जुटा रहे हैं। इसलिए टोल के बिना हम ऐसा नहीं कर सकते। उन्होंने स्पष्ट किया कि टोल टैक्स केवल चार लेन पर वसूल रहे हैं। 2008 के नियमों के अनुसार, राष्ट्रीय राजमार्ग के एक ही खंड पर और एक ही दिशा में 60 किलोमीटर के भीतर टोल प्लाजा स्थापित नहीं किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री मोदी से मिले बिल गेट्स, 2047 तक विकसित भारत के लिए की चर्चा

नयी दिल्ली । माइक्रोसॉफ्ट के पूर्व सीईओ और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के सह-अध्यक्ष बिल गेट्स ने बुधवार को नई दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी से मुलाकात की । बिल गेट्स ने कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के साथ भारत के विकास, 2047 तक विकसित भारत के मार्ग और स्वास्थ्य, कृषि, एआई तथा अन्य क्षेत्रों में रोमांचक प्रगति के बारे में बहुत अच्छी चर्चा की ।मोदी ने कहा कि उन्होंने बिल गेट्स के साथ आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य बनाने की दिशा में तकनीक, नवाचार और स्थिरता सहित विविध मुद्दों पर बातचीत की है ।

भारत अंतरिक्ष में बनायेगा स्टेशन

- **2040 में भारतीय मूल के व्यक्ति को चांद पर भेजेगी सरकार : जितेन्द्र सिंह**
- **2027 में लांच होगा चंद्रयान 4**

एजेंसी

नयी दिल्ली। सरकार ने बुधवार को लोकसभा में बताया कि भारत की वर्ष 2040 में भारतीय मूल के व्यक्ति को चंद्रमा पर भेजने की योजना है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ जितेन्द्र सिंह ने लोकसभा में प्रश्न काल के दौरान एक प्रश्न के उत्तर में बताया कि भारत की 2040 में भारतीय मूल के व्यक्ति को चांद पर उतारने की योजना है। प्रधानमंत्री कार्यालय में राज्यमंत्री डॉक्टर जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत नाम से अपना अंतरिक्ष स्टेशन बनायेगी सरकार। उन्होंने ये भी कहा है कि 2040 में चांद पर भारतीय मूल का व्यक्ति कदम रखेगा। उन्होंने बताया कि देश के सर्वाधिक महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष मिशन चंद्रयान 4 को

2027 में लॉन्च करने की योजना है। इसी तरह वर्ष 2028 में वीनस मिशन की योजना है। उन्होंने बताया कि अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी को देश का हर प्रदेश अपना रहा है और इससे तरह-तरह से लाभ उठाये जा रहे हैं। अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी सिर्फ राकेट प्रक्षेपण तक ही सीमित नहीं है। इसका कई क्षेत्रों में उपयोग करके लाभ उठाये जा रहे हैं। डॉ सिंह ने भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री सुनीता विलियम्स के बुधवार को तड़के तीन बजकर 47 मिनट पर सुरक्षित धरती पर वापसी को गौरवशाली क्षण बताया और कहा कि यह पल गौरवान्वित करने वाला भी है और राहत भरा भी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सुश्री विलियम्स को लिखा कि आपके लौटने के बाद हम आपको भारत में देखने के लिये उत्सुक हैं। भारत के लिये सबसे शानदान बेटियों में से एक की मेजबानी करना खुशी की बात होगी।

कानपुर में पाकिस्तानी जासूस गिरफ्तार

- **हनीट्रैप में फंसे अधिकारी ने महिला को आर्डनेंस फैक्ट्री में बनने वाली सामग्री की फोटो और जरूरी दस्तावेज भेजा**

कानपुर। यूपी एटीएस ने बुधवार को कानपुर नगर के अर्मापुर एरिया में बने आर्डिनेंस फैक्ट्री में कार्यरत जूनियर वर्क्स मैनेजर कुमार विकास को गिरफ्तार किया है। कर्मचारी पर पाकिस्तानी एजेंट नेहा शर्मा से गोला-बारूद की सूचना के साथ ही कर्मचारियों की अटेंडेंस सहित अन्य जरूरी गोपनीय दस्तावेज साझा करने के आरोप है। हालांकि इस मामले में फैक्ट्री के अधिकारियों ने अनभिज्ञता जताई है। एटीएस ने बुधवार को बताया कि पकड़ा गया कुमार विकास हाल पता बिठूर के नारामऊ थाना क्षेत्र स्थित न्यू हाई-वे सिटी का रहने वाला है। वह ऑर्डिनेंस फैक्ट्री कानपुर में जूनियर वर्क्स मैनेजर के पद पर तैनात है। वह इसी साल

जनवरी माह में फेसबुक के जरिए कथित पाकिस्तानी एजेंट नेहा शर्मा के संपर्क में आया था। उसने व्हाटसएप के जरिए कर्मचारी विकास से पहले बातचीत शुरू की। विश्वास में लेकर दोनों एप के जरिए गोपनीय बातें करने लगे। पैसों के लालच में आकर अभियुक्त विकास ने ऑर्डिनेंस फैक्ट्री से जुड़े उपकरण, निर्माण होने वाले गोला बारूद, कर्मचारियों के हाजिरी रजिस्टर, फैक्ट्री से जुड़े दस्तावेज, मशीनों की फोटो व महत्वपूर्ण जानकारी महिला से साझा कीं। एटीएस ने बताया कि इस प्रकार की गोपनीय जानकारी नेहा नाम की महिला से साझा की गईं, जिनका प्रयोग देश की सुरक्षा, एकता और अखंडता व संप्रभुता को प्रतिकुल रूप से प्रभावित कर सकता है। इसी आधार पर कुमार विकास के खिलाफ एटीएस थाना लखनऊ में मामला दर्ज कर कार्रवाई की जा रही है।

बिहार : वाणिज्य-कर विभाग में 460 पदों पर होगी बहाली

पटना। राज्य सरकार ने वाणिज्य-कर विभाग में 460 पद सृजित करने की स्वीकृति दी है। विधान मंडल के जारी सत्र के बीच बुधवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में हुई बैठक में इस प्रस्ताव को दी मंजूरी। बैठक में 39 प्रस्ताव पेश हुए, जिसमें 38 प्रस्तावों को स्वीकृति मिली। सृजित नए पदों के लिए कार्यालयवार वर्गीकरण एवं विभागीय पदाधिकारियों के क्षेत्राधिकार के निर्धारण भी का निर्णय लिया गया है। राज्य का लगभग 75 प्रतिशत राजस्व वाणिज्य-कर विभाग द्वारा संग्रहित किया जाता है। उप मुख्यमंत्री सह वित्त वाणिज्यकर मंत्री सम्राट चौधरी ने फैसले की सराहना की। उन्होंने कहा कि वर्ष 2017 में नई कर-प्रणाली के रूप में जीएसटी के आने से विभाग में अतिरिक्त पद सृजन एवं पुनर्गठन की आवश्यकता थी। जिसे देखते यह संबंधित पद सृजन का प्रस्ताव स्वीकृत किया गया है। सरकार का यह निर्णय सराहनीय है। मंत्रिमंडल ने महिला हॉकी की तर्ज पर राजगीर में पुरुष हॉकी आयोजित करने का प्रस्ताव स्वीकृत किया है। आयोजन सफलतापूर्वक हो, इसके लिए 24 करोड़ रुपये भी स्वीकृत किए हैं। पुरुष हॉकी के साथ ही राजगीर में ही रग्बी खेल प्रतियोगिता आयोजित करने की दी मंजूरी।

लालू यादव से चार घंटे तक पूछताछ

जमीन के बदले नौकरी मामला

- **इडी ने पूर्व रेलवे मंत्री से पूछा, किशुनदेव राय ने 3 हजार वर्ग फीट जमीन मात्र पौने चार लाख में राबड़ी देवी को ही क्यों बेची?**

पटना। जमीन के बदले नौकरी मामले में बुधवार को राजद प्रमुख व पूर्व रेलवे मंत्री लालू प्रसाद यादव से ईडी की टीम ने करीब चार घंटे तक पूछताछ की। लालू यादव सुबह करीब 10.30 बजे पटना में ईडी के बैंक रोड कार्यालय पहुंचे थे। ईडी के अधिकारियों ने लालू यादव से पूछताछ में उनसे सवाल किया कि किशुन देव राय ने 3 हजार वर्ग फीट की जमीन मात्र 3 लाख 75 हजार रुपये में राबड़ी देवी को ही क्यों बेची? राज कुमार सिंह, मिथिलेश कुमार और अजय कुमार से आप कब मिले थे? ईडी ने लालू यादव से पूछा कि आपसे मिलने और राबड़ी देवी को जमीन मिलने के बाद ही इन तीनो को मध्य रेलवे मुम्बई में ग्रुप डी के पद पर नौकरी क्यों मिली? राबड़ी देवी के नाम जमीन रजिस्ट्री होने के बाद संजय राय और उसके परिवार के दो सदस्य को रेलवे में नौकरी मिली, ऐसा क्यों? जमीन रजिस्ट्री के बाद

ही किरण देवी के बेटे अभिषेक कुमार को सेंट्रल रेलवे मुंबई में नौकरी मिली, ऐसा क्यों? किरण देवी ने अपनी 80 हजार 905 वर्ग फीट जमीन तीन लाख सत्तर हजार में आखिर आपकी बेटी मीसा भारती को ही क्यों दी?

शेयर बाजार में तीसरे दिन भी तेजी

सेंसेक्स 148 और निफ्टी 73 अंक चढ़ा, निवेशकों ने कमाये 5 लाख करोड़

एजेंसी

मुंबई। विश्व बाजार में गिरावट रहने के बावजूद स्थानीय स्तर पर इंडस्ट्रियल्स, यूटिलिटीज, कैपिटल गुड्स, पावर, रियल्टी और सर्विसेज समेत 17 समूहों में हुई लिवाली की बदौलत बुधवार को शेयर बाजार में लगातार तीसरे दिन तेजी रही।

बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 147.79 अंक उछलकर 75,449.05 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 73.30 अंक की बढ़ोतरी लेकर 22,907.60 अंक पर पहुंच गया। हालांकि दिग्गज कंपनियों के मुकाबले बीएसई की मझौली और छोटी कंपनियों के शेयरों में लिवाली की रफ्तार अधिक तेज रही। इससे मिडकैप 2.28 प्रतिशत की छलांग लगाकर 41,107.00 अंक और स्मॉलकैप 2.17 प्रतिशत की

मजबूती के साथ 46,009.89 अंक हो गया। शेयर बाजार में आई मजबूती के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में 5 लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 404.95 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। जबकि पिछले कारोबारी दिन यानी मंगलवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 399.85 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 5.10 लाख करोड़ रुपये का मुनाफा हो गया।

इस दौरान बीएसई में कुल 4166 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 3018 में लिवाली जबकि 1033 में बिकवाली हुई वहीं 115 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह निफ्टी की 31 कंपनियों में तेजी जबकि 19 में गिरावट रही।

बीएसई के 17 समूहों का रुझान सकारात्मक रहा। इससे कमोडिटीज 1.44, सीडी 1.14, ऊर्जा 1.13, वित्तीय सेवाएं 1.11, हेल्थकेयर 1.26, इंडस्ट्रियल्स 2.55, दूरसंचार 1.48, यूटिलिटीज 2.16, ऑटो 0.36, बैंकिंग 0.58, कैपिटल गुड्स 2.24, कंज्यूमर ड्यूरेबल्स 1.39, धातु 1.40, तेल एवं गैस 1.17, पावर 2.30, रियल्टी 2.75 और सर्विसेज समूह के शेयर 2.48 प्रतिशत मजबूत रहा। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गिरावट का रुख रहा। इस दौरान ब्रिटेन का एफटीएसई 0.13, जर्मनी का डैक्स 0.16, जापान का निक्केई 0.25 और चीन का शंघाई कंपोजिट 0.10 प्रतिशत लुढ़क गया जबकि हांगकांग के हैंगसेंग में 0.12 प्रतिशत की बढ़त रही।

शुरूआती कारोबार में सेंसेक्स 172 अंक अंक की तेजी लेकर 75,473.17 अंक पर खुला लेकिन बिकवाली होने से थोड़ी देर बाद ही 75,201.48 अंक के निचले स्तर तक लुढ़क गया। वहीं, लिवाली के बल पर दोपहर तक यह 75,568.38 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। अंत में पिछले दिवस के 75,301.26 अंक के मुकाबले 0.20 प्रतिशत की बढ़त लेकर 75,449.05 अंक पर बंद हुआ। इसी तरह निफ्टी भी 41 अंक बढ़कर 22,874.95 अंक पर खुला और सत्र के दौरान 22,807.95 अंक के निचले जबकि 22,940.70 अंक के उच्चतम स्तर पर रहा।

पाकिस्तान के अस्तित्व पर खतरा : सेना प्रमुख

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर ने मंगलवार को पाकिस्तान को एक कठोर राज्य में बदलने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि उग्रवाद के खिलाफ संघर्ष देश के अस्तित्व के लिए एक लड़ाई है। मुनीर ने यह टिप्पणी राष्ट्रीय सुरक्षा पर संसदीय समिति की एक उच्च स्तरीय बैठक में की, जो बलूच आतंकवादियों द्वारा एक यात्री ट्रेन को अपहरण करने के कुछ दिनों बाद बुलाई गई थी, जिसके परिणामस्वरूप 25 यात्रियों की मौत हो गई थी। बैठक में देश के शीर्ष नागरिक और सैन्य नेतृत्व ने उग्रवाद और आतंकवाद का पूरी ताकत से मुकाबला करने के लिए एक एकीकृत राजनीतिक प्रतिबद्धता पर जोर दिया। मुनीर ने कहा कि उग्रवाद के खिलाफ संघर्ष हमारे और हमारी भावी पीढ़ियों के अस्तित्व के लिए एक लड़ाई है।